प्रभाष जोशी ने हिंदी पत्रकारिता के नए मानक स्थापित किए

जनसत्ता के प्रभाष जोशी पुस्तक की समीक्षा

मनोज कुमार मिश्र

जनसत्ता के संस्थापक संपादक और पत्रकारिता के शिखर पुरुष प्रभाष जोशी पांच नवंबर, 2009 को इस दुनिया से विदा हुए। तब से लेकर अभी तक देश के विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में उनके बारे में सैकड़ों संस्मरण प्रकाशित हुए। उनके निधन के बाद उनकी परंपरा को आगे बढ़ाने के लिए बने प्रभाष परंपरा न्यास ने साले 2012 में उनके संस्मरणों के आधार पर एक पुस्तक प्रकाशित की थी। एक बार फिर न्यास के प्रबंध न्यासी, प्रभाष जोशी की परंपरा के श्रेष्ट पत्रकार, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के अध्यक्ष और पद्म भूषण से सम्मानित रामबहादुर राय (राय साब) के मार्गदर्शन में उनके संस्मरणों पर ही आधारित - ''जनसत्ता के प्रभाष जोशी'' पुस्तक प्रकाशित करना तय किया गया। प्रयास यही किया गया है कि इस पुस्तक में जनसत्ता में जोशी जी के साथ काम करने वालों के संस्मरण शामिल किए जाएं। इसके अलावा कुछ संस्मरण उनके करीबी मित्रों और परिवार के सदस्यों के भी शामिल किए गए।

ज्यादातर संस्मरण अभी के लिखे हुए हैं। इस पुस्तक में जनसत्ता के चार वरिष्ट सहयोगियों - मंगलेश डबराल जी, श्रीश चन्द्र मिश्र जी, सुरेश कौशिक जी और आलोक तोमर जी के पहले के लिखे लेख शामिल किए गए हैं, क्योंकि वे अब हमारे बीच नहीं हैं। उसी तरह उनके आत्मीय जनों में जिनके लेख लिए गए हैं, उनमें प्रभाष परंपरा न्यास के संस्थापक अध्यक्ष डाक्टर नामवर सिंह, वरिष्ठ पत्रकार राजकिशोर और लेखक रुपेश पांडेय भी अब जा चुके है।

इस पुस्तक में 49 लेख शामिल किए गए हैं। जिसमें 38 जनसत्ता के सहयोगियों के औरे 11 लेख जोशी जी के आत्मीय जनों के हैं। सभी संस्मरण लेखों में प्रभाष जोशी और जनसत्ता के बारे में विस्तार से लिखा गया है। राय साब ने अपने लेख में जनसत्ता के शुरुआती दिनों का ब्यौरा विस्तार से दिया है। वे लिखते हैं कि जनसत्ता की पूरी कल्पना प्रभाष जोशी जी की थी। वे एक ऐसे अखबार की कल्पना को अपने मन में जीवित रखे हुए थे जो हिंदी में हो। और सही मायने में राष्ट्रीय समाचार पत्र हो। यानी हर प्रांत के लोगों को लगे कि अखबार के सरोकार में वे और उनका समाज शामिल है। उसी कल्पना में यह भी था कि हिंदी में एक ऐसे अखबार की जरूरत है जो सत्ता या सियासत तक सीमित न हो, बल्कि वह अपने पाठकों की दिल की धड़कन बन जाए। पिछली सदी के छठे दशक से वे इसी सपने को संजोये हुए थे। उन्हें 1983 में वह अवसर मिला। इसके लिए उन्होंने पत्रकारीय तपस्या की। उन्होंने जनसत्ता निकाला।

राय साब आगे लिखते हैं कि जनसत्ता ने हिंदी पत्रकारिता में कई नए प्रयोग किए। प्रयोग सफल रहे। उनकी सराहना हुई। अखबार में प्रयोग करने की अगर छूट प्रभाष जी ने न दी होती और वहां खुला माहौल नहीं होता तो जनसत्ता को जो सफलता मिली वह संभव नहीं थी। जनसत्ता के शुरुआती दिनों से प्रभाष जी के वरिष्ठ सहयोगी रहे बनवारी जी ने लिखा कि प्रभाष जी में एक कुशल संपादक के सभी गुण थे। उनमें प्रतिभा थी, लगन थी, नेतृत्व क्षमता थी, राजनैतिक बुद्धि और सांस्कृतिक अभिरुचि थी, प्रवाहमयी भाषा थी और अपने सहयोगियों के प्रति आत्मीयता थी। लेकिन वे केवल जनसत्ता के संपादक नहीं थे। जनसत्ता उनकी कृति थी। उनकी सबसे विलक्षण बात उनका वह संकल्प था कि जनसत्ता को हिंदी जगत का एक उत्कृष्ट समाचार-पत्र बनाना है। जो लंबे समय तक पत्रकारिता का मानक रहा। अपने ध्येय के लिए उन्होंने हमेशा सबसे पहले अपने आप को कसौटी पर रखा। जनसत्ता की ख्याति में उनके नेतृत्व और उनके लेखन का बड़ा योगदान था।

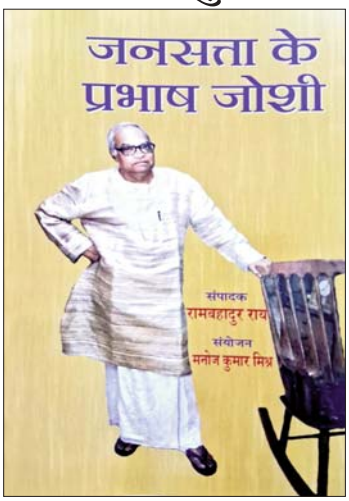

वरिष्ठ पत्रकार और राज्यसभा के उप सभापति हरिवंश जी अपने लेख में लिखते हुए पूछा हैं कि क्यों प्रभाष जी की स्मृति उभरती है? उनके आत्मीय स्नेह के कारण? उनके मौजूद मानवीय संवेदनशीलता-सरोकार के कारण? उनके प्रयोगधर्मी स्वभाव, मिजाज व संस्कार की वजह से देशज शब्दों-भावों से पत्रकारिता को नई धार देने वाले व्यक्ति के असमय चले जाने के कारण? हिंदी क्षेत्रों में, खासतौर से गंभीर मुद्दों पर नवजागरण के अग्रदूत के रूप में उनकी सक्रिय भूमिका में अचानक विराम लग जाने के कारण? ये सभी वजहें हैं। उनका व्यक्तित्व समृद्ध था। यायावर, दार्शनिक, संगीत प्रेमी, गांधीवादी, सर्वोदय के व्याख्याकार। अत्यंत सुंदर,प्रवाहमयी, देशज अभिव्यक्ति भाव व गद्य के धनी। विचारों के प्रवर्तक व व्याख्याकार भी। धुन के पक्के। महज क्रिकेट ही नहीं, खेलों के प्रेमी।

इस पुस्तक के संस्मरणों में अलग- अलग घटनाओं और जोशी जी के व्यक्तित्व के अलग-अलग पहलुओं का ब्यौरा दिया गया है। जनसत्ता में लंबे समय तक काम करके सेवानिवृत हुए हरेकृष्ण यादव ने पुस्तक प्रकाशन का काम अपने हाथ में लिया। उन्हें राय साब ने बताया की स्वर्गीय प्रभाष जोशी इस तरह की पुस्तक प्रकाशित करना चाहते थे। यादव जी ने राय साब से पुस्तक प्रकाशन का दायित्व देने का अनुरोध किया। राय साब ने मुझे इस काम में सहयोग करने का निर्देश दिया। 2010 से हर साल न्यास प्रभाष जोशी जी की प्रतिष्ठा के अनुरूप अनेक आयोजन करता है। सबसे बड़ा आयोजन उनके जन्मदिन के मौके पर किया जाता है। उनका जन्मे 15 जुलाई, 1937 को हुआ था। इस साल उनके जन्मदिन यानी प्रभाष प्रसंग का आयोजन रविवार, 20 जुलाई 2025 को हुआ। उसी मौके परे ''जनसत्ता के प्रभाष जोशी'' पुस्तक का लोकार्पण किया गया था। प्रभाष परंपरा न्यास से जुड़ने के दौरान राय साब के मार्गदर्शन में प्रभाष जी की पहले प्रकाशित हुई पुस्तकों में जो लेख नहीं आ पाए थे उन लेखों को दो पुस्तकों में झे 'ओटन लगे कपास' औरे 'घंटी तो बजनी है', संग्रहित करने का अवसर मिला।

इन लेखों से पहले सन 1960 में आचार्य विनोबा भावे के इंदौर प्रवास के दौरान नई दुनिया अखबार ने विनोबा दर्शन नाम से निःशुल्क परिशिष्ट 39 दिन तक लगातार प्रकाशित किया था। वह परिशिष्ट प्रभाष जी ने तैयार किया था। राय साब से मिली परिशिष्ट सामग्री मुझे झे 'विनोबा के साथ उनतालीस दिन' पुस्तक संपादित करने का भी अवसर मिला। इन सभी पुस्तकों को तैयार करते समय प्रभाष जी की दिग्गज पत्रकार की छवि, और निखर कर सामने आयी। वे मूल रूप से गांधीवादी थे। गांधी, विनोबा और जयप्रकाश नारायण जैसे नेता उनके आदर्श रहे। लेकिन वे लोकतंत्र के भारी समर्थक और ठेठ पत्रकार थे। सभी को पता है कि समाज के इन्हीं नेताओं के बताए रास्ते पर चलने के लिए प्रभाष जी ने विश्वविद्यालय की पढ़ाई छोड़ी और गांव में जाकर रहे, काम किया। विनोबा दर्शन पढ़ते हुए उनके विनोबा प्रेम और उनकी आसक्ति साफ दिखती है।

वहीं 11 वे 12 दिसंबरे 1995 को प्रभाष जी, 'अहिंसक क्रांति का विनोबा प्रयोग' औरे 'अहिंसा की तलाश में सत्याग्रह खो गया' लिखकर इमरजेंसी का विरोध न करने के लिए विनोबा जी की आलोचना भी करते हैं। मैं तो जुलाई 1986 से जनसत्ता से जुड़ा। इस पुस्तक में उन वरिष्ट जनों के संस्मरणों को प्राथमिकता से शामिल किया गया है जो 1983 में जनसत्ता के शुरुआती दिन से प्रभाष जोशी की टीम में थे। जनसत्ता का पहला अंके 17 नवंबर, 1983 को प्रकाशित हुआ। मगर अनेक वरिष्ट साथी तो उससे पहले से काम कर रहे थे। प्रभाष जोशी के जाने के 16 साल बाद संस्मरणों पर आधारित पुस्तक को पढ़कर जनसत्ता, प्रभाष जोशी जी और उस संस्थान में बिताए दिन वापस सजीव होने लगते हैं। मुझे विश्वास है कि यह पुस्तक पठनीय बनी है। यह प्रभाष जोशी को जनसत्ता के साथियों की ओर से एक श्रद्धांजलि भी है। वास्तव में प्रभाष जी ने जनसत्ता और अपने लेखन से पत्रकारिता के नए मानक स्थापित किए।

राजेश विक्रांत

बतरस

मेरा झोला बड़ा कारसाज है!

चाहे जो हो जाए, हम तो झोल करके ही रहेंगे क्योंकि हर जगह मेरी सेटिंग है। इसलिए चुनाव प्रचार के बाद हमेशा मैं ध्यान की मुद्रा में चला जाता हूँ। सच तो ये है कि ध्यान व्यान कुछ नहीं होता , यह तो मेरी एक चुनावी मुद्रा होती है।

आपको याद होगा कि कई साल पहले मैंने कहा भी था कि मैं झोला उठाकर चला जाऊंगा। मैं चला भी जाता पर कजानी सेठ ने रोक लिया। फिर क्या हुआ कि मेरा झोला भरने लगा- टैरिफ, विशेष गहन पुनरीक्षण, वोटचोरी, हेट स्पीच, जहरीली हवाएं आदि इत्यादि। पर अभी भी मेरे झोले में बहुत सारी जगह है। जब तक देश के सभी नागरिकों के हाथ मैं कटोरा न पकड़ा दूं तब तक झोला नहीं उठाऊंगा। कहते हैं कि एक चुप हजार शब्दों के बराबर होता है और चुप रहकर ही मैं अपना सब काम कर लेता हूं। नागरिकों व मतदाताओं को जो सन्देश देना होता है, दे देता हूं। विपक्ष चाहे जितना चिल्लाए, कोई फर्क नहीं पड़ेगा। देश की बदहाली व कंगाली के झोल को मैंने आखिरकार अपने ध्यान के झोले से भर ही दिया है। लोकतंत्र, गरिमा, नैतिकता आदि फालतू के शब्द हैं। पता नहीं किसने इन शब्दों का आविष्कार किया था, वो अगर मुझे मिल जाए चार जूते खुद लगाऊं। ये किसी कारण से न कर पाया तो जेल में भिजवा ही सकता हूं। ईडी, सीबीआई, इन्कम टैक्स आखिर किस दिन काम आएंगे? मेरी सरकार झोल की सरकार है, झोले की सरकार है। एक्जिट पोल में झोल, इवीएम में झोल, नीयत में झोल, अर्थव्यवस्था में झोल, जीडीपी में झोल, क़ानून व्यवस्था में झोल, विकास में झोल सब मेरे ही बाई प्रोडक्ट हैं। यहां तक कि राहत की फुहार में भी झोल है और रहेगा।

जो शब्द मुझे प्रिय हैं वे हैं- धांधली, करप्शन, अनैतिकता, हैकिंग, बोलबचन, तानाशाही, हेराफेरी, धोखाधड़ी, फर्जीकल स्ट्राइक। जब मैं अपने परिवार को, प्रियजनों को, साथियों को धोखा दे सकता हूं तो आम आदमी की क्या बिसात है? मेरा विकसित भारत कजानी सेठ से जुड़ा है। कजानी सेठ खूब प्रगति कर रहे हैं। उनका रास्ता साफ करने के लिए इंडिगो ने काफी मेहनत की है। चांदी की कीमत 2 लाख हो गई है। रुपया डॉलर का गुलाम बन गया है। कजानी सेठ एशिया में नम्बर एक हो गए हैं। इसका मतलब यह है कि भारत धनवान हो रहा है। मेरे कहने पर इंडिगो गंभीर प्रभावित यात्री को 10 हजार रुपए का ट्रेवल वाउचर देगी। ट्रम्प दादागिरी कर रहे हैं। अदालतों में 5.50 करोड़ केस लंबित हैं। किसान आत्महत्या कर रहे हैं। हेट क्राइम, साइबर फ्रॉड, डिजिटल अरेस्ट का खुशनुमा दौर चल रहा है। कृपया इसकी आलोचना न करें। क्योंकि मेरी सरकार झोल की सरकार है।

नेपाल भारत दोस्ती के रिश्ते में चीन की शरारत

मनोज कुमार अग्रवाल

हाल ही में नेपाल सरकारी करेंसी पर मुद्रित एक नक्शे ने भारत नेपाल संबंधों में तकरार पैदा की कोशिश की है। आप को पता है कि राजशाही के खात्मे के बाद नेपाल 2008 में गणतंत्र बना था और 2015 में नेपाल का संविधान लागू हुआ। इस दौरान चीन परस्त के। पी। शर्मा ओली 2 बार देश के प्रधानमंत्री बने। हालांकि वह एक बार भी अपना कार्यकाल पूर्ण नहीं कर पाए परंतु इस दौरान उन्होंने भारत विरोधी रवैया ही अपनाए रखा। नेपाल के सेंट्रल बैंक ने गुरुवार (27 सितंबर) को 100 रुपए का नया नोट जारी किया है। इस नोट को जारी करते ही भारत और नेपाल के बीच एक नया सीमा विवाद खड़ा हो गया। दरअसल इस नोट में नेपाल का बदला हुआ मैप छपा है। इस मैप में भारत और नेपाल के बीच विवादित कालापानी, लिपुलेख और लिंपियाधुरा इलाके नेपाल की सीमा में दिखाए गए हैं। इस नोट पर छपे नक्शे को लेकर भारत ने इसे ऑर्टिफीशियल एनलार्जमेंट बताया है। नेपाल राष्ट्र बैंक (एनआरबी) के नए नोट पर पिछले गवर्नर महा प्रसाद अधिकारी के सिग्नेचर हैं। वहीं इस नोट को जारी करने की तिथि बैंक ने 2081 बीएस लिखी है।

घरेलू मामलों में मनमाने निर्णय लेने के साथ-साथ चीन के उकसावे पर ओली ने भारत के 3 इलाकों लिपुलेख, कालापानी व लिपियाधुरा पर अपना दावा जताने के अलावा समय-समय पर भारत विरोधी बयान दिए और भारत विरोधी कदम उठाए जिनसे दोनों देशों के संबंधों में खटास आई।

आपको बता दें 13 जून, 2020 को ओली ने उत्तराखंड स्थित लिपुलेख, लिपियाधुरा और कालापानी के इलाकों को नेपाल के नक्शे में दिखाने को नेपाल की संसद से स्वीकृति दिलाई और आरोप लगाया कि भारत उनकी सरकार को अस्थिर करना चाहता है जिस पर भारत ने कड़ी आपत्ति जताई थी।

इस बीच 3 सितम्बर, 2025 को प्रधानमंत्री के। पी। शर्मा ओली तथा उनके मंत्रिमंडल के सदस्यों के मनमाने फैसलों तथा भ्रष्टाचार के विरुद्ध युवाओं ने मोर्चा खोल दिया।

जेन जी के बैनर तले आंदोलनकारी युवा नेपाल की राजधानी काठमांडू के कई हिस्सों में के। पी। चोर देश छोड़ो और भ्रष्ट नेताओं के विरुद्ध कार्रवाई करो, भूकम्प की जरूरत नहीं है नेपाल रोज भ्रष्टाचार से हिलता है जैसे नारे लगाते हुए प्रदर्शन कर रहे थे।

आंदोलनकारियों ने राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री सहित अनेक मंत्रियों के आवास अग्नि भेंट कर दिए तथा आंदोलन के दौरान 20 लोगों की मौत की जवाबदेही की मांग को लेकर अपना प्रदर्शन जारी रखा। 9 सितम्बर को सुबह से ही तेजी से बदलते हालात के बीच दोपहर को एहतियातन राजधानी काठमांडू तथा आसपास के इलाकों में कर्फ्यू भी लगाया गया परन्तु स्थिति नियंत्रण में नहीं आई। इस आंदोलन के परिणामस्वरूप अंततः देश में तख्तापलट हुआ और 13 सितम्बर, 2025 को देश की पूर्व चीफ जस्टिस सुशीला कार्की (73) को अंतरिम प्रधानमंत्री बनाया गया। चूंकि 1971 में नेपाल के त्रिभुवन विश्वविद्यालय से ग्रैजुएशन करने के बाद सुशीला कार्की ने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से आगे की पढ़ाई पूरी की थी, इसलिए आशा थी कि भारत में पढ़ाई के बाद अब राजनीति में सक्रिय भूमिका निभाने का अवसर मिलने पर वह भारत के प्रति अपना सकारात्मक रवैया रखेंगी, परंतु ऐसा होता दिखाई नहीं दे रहा। नेपाल के केंद्रीय बैंक (नेपाल राष्ट्र बैंक अर्थात एन। आर। बी।) ने 27 नवम्बर, 2025 को अपने देश का 100 रुपए का नया नोट जारी करके एक एक बार फिर अपना भारत विरोधी चेहरा उजागर कर दिया है। इस नोट पर नेपाल का संशोधित मानचित्र लगा हुआ है और इसमें भारत के स्वामित्व वाले काला पानी, लिपुलेख और लिपियाधुरा क्षेत्र नेपाल में दिखाकर फिर विवाद खड़ा कर दिया है। एनआरबी प्रवक्ता ने ये भी साफ किया कि नेपाली रुपयों में 10 रुपये, 50 रुपये, 500 रुपये और 1, 000 रुपये जैसे अलग-अलग कीमत वाले बैंक नोटों में से सिर्फ़ 100 रुपये वाले नोट पर ही नेपाल का नक्शा है बाकी के नोटों पर नहीं है। वहीं भारत का दावा है कि लिपुलेख, कालापानी और लिंपियाधुरा तीनों ही भारत के हैं नेपाल इसे गलत तरीके से प्रदर्शित कर रहा है। भारत ने साल 2020 में नेपाल की इस हरकत के लिए चेतावनी भी दी थी कि किसी भी सूरत में भारत नेपाल के इस कृत्रिम विस्तार को मंजूरी नहीं देगा।

नेपाल के नए 100 रुपये के बैंक नोट के बाईं ओर माउंट एवरेस्ट है, जबकि दाईं ओर नेपाल के राष्ट्रीय फूल रोडोडेंड्रोन का वॉटर मार्क है। बैंक नोट के बीच में बैकग्राउंड में नेपाल का हल्का हरा रंग का नक्शा छपा है। नक्शे के पास अशोक स्तंभ भी छपा है जिस पर भगवान बुद्ध की जन्मभूमि लुंबिनी लिखा है। बैंक नोट के पीछे एक सींग वाले गैंडे की तस्वीर है। बैंक नोट में एक सिक्योरिटी थ्रेड और एक उभरा हुआ काला डॉट भी है, जिससे अंधे लोग इसे पहचान सकते हैं। नेपाल भारत के पांच राज्यों सिक्किम, पश्चिम बंगाल, बिहार, उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड की सीमा रेखाओं में 1850 किमी से ज़्यादा हिस्सा अपना होने का दावा करता है।

भारत के विदेश मंत्रालय ने नेपाल सरकार के इस कदम पर कड़ी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए इसे कृत्रिम विस्तार तथा ऐतिहासिक तथ्यों के विपरीत बताया है और यह मुद्दा एक बार फिर गर्मा गया है। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि इस क्षेत्र में चीन के बढ़ते प्रभाव ने स्थिति को जटिल बना दिया है और चीन के प्रभाव में ही नेपाल की कम्युनिस्ट पार्टी की सरकारें भारत विरोधी भावनाओं को बढ़ावा दे रही हैं।

नेपाल का यह रवैया भारत के लिए तो चिंता का विषय है ही नेपाल के लिए भी हितकर नहीं है। जब भी वहां कोई प्राकृतिक संकट पैदा होता है तो सबसे पहले भारत ही उसकी सहायता के लिए आगे आता है। लिहाजा वहां जितनी जल्दी परिपक्व फैसले लेने वाली सरकार बने उतना ही दोनों देशों के संबंधों के लिए बेहतर होगा।

सोशल मीडिया का बढ़ता वर्चस्व और खोता बचपन

ललित गर्ग

पिछले एक दशक में जिस सोशल मीडिया को आधुनिकता की उपलब्धि, अभिव्यक्ति की आजादी और वैश्विक संपर्क का सबसे बड़ा माध्यम माना गया था, उसी सोशल मीडिया ने अब अपने छिपे डरावने एवं वीभत्स चेहरे दिखाने शुरू कर दिए हैं। पश्चिमी देश, जो कल तक इसके गुणगान करते नहीं थकते थे, अब उसके दुष्परिणामों से भयभीत होने लगे हैं। यह भय यूं ही नहीं है-अनेक देशों में बच्चों की आत्महत्याओं, हिंसक व्यवहार, मानसिक विकारों, नशे जैसे डिजिटल व्यसनों और सामाजिक विकृतियों के बढ़ते आंकड़ों ने सोशल मीडिया की वास्तविकता का पर्दाफाश किया है। इसी पृष्ठभूमि में आस्ट्रेलिया की सरकार ने एक ऐतिहासिक कदम उठाकर विश्व-समुदाय को चेताया भी है और झकझोर भी दिया है। उन्होंने सोशल मीडिया कंपनियों से वह अधिकार वापस ले लिए हैं, जिनके दुरुपयोग ने बच्चों के जीवन और अभिभावकों की मानसिक शांति को संकट में डाल दिया था। ऑस्ट्रेलियाई प्रधानमंत्री ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि यह सुधार बच्चों को 'बचपन जीने का अधिकार' लौटाने के लिए है-उन जिंदगियों को नया मोड़ देने के लिए है जो सोशल मीडिया ने समय से पहले वयस्कता, अस्वस्थता, तनाव और विकृतियों में धकेल दी थीं। इतना ही नहीं, 16 वर्ष से कम उम्र के बच्चों के अकाउंट नहीं हटाने पर लगभग पाँच करोड़ ऑस्ट्रेलियाई डॉलर तक का जुर्माना लगाने का प्रावधान देश का रुख साफ करता है कि अब बच्चों के भविष्य से खिलवाड़ बर्दाश्त नहीं किया जाएगा।

इस पहल के बाद पश्चिमी जगत में सुगबुगाहट बढ़ी है। ब्रिटेन से लेकर अमेरिका तक सवाल उठ रहे हैं कि यदि ऑस्ट्रेलिया यह साहस दिखा सकता है तो वे क्यों नहीं? यह सुगबुगाहट केवल सरकारों में ही नहीं है-उन अभिभावकों में भी है जिन्होंने सोशल मीडिया को अपने बच्चों की आत्महत्या, अवसाद और चरित्र-भंग का मूल कारण मानना शुरू कर दिया है। वास्तव में, इस संकट की शुरुआत तब हुई जब सोशल मीडिया के प्लेटफॉर्मों ने बच्चों को आकर्षित करने के लिए ऐसे एल्गोरिद्म बनाए, जो उनका अधिकतम समय खाएं, उनकी जिज्ञासाओं को उकसाएं और उनके भीतर छिपी संवेदनशीलता का दोहन करके उन्हें सोशल मीडिया निर्भरता की स्थिति तक ले जाएं। इन प्लेटफॉर्मों पर वयस्क सामग्री, द्विअर्थी वीडियोज, हिंसक गेम्स, 'लाइक-फॉलोअर' जैसे डिजिटल भ्रमों का ऐसा सैलाब है जिसने बच्चों की मनोवैज्ञानिक संरचना को गहरी चोट पहुंचाई है। नतीजा यह है कि आज बच्चे समय से पहले वयस्क हो रहे हैं-शरीर से नहीं, मानसिकता से।

भारतीय परिवार-व्यवस्था, संस्कार और मूल्य-व्यवस्था इस संकट की चपेट में और तेजी से आए हैं। पहले जहां बच्चे माता-पिता, शिक्षक और संस्कारों से सीखते थे, आज वे 'रील्स' और 'शॉर्ट वीडियोज' एवं अश्लील सामग्री से सीख रहे हैं। जो सामग्री उनके सामने आ रही है, वह न भारतीय चरित्र से मेल खाती है न जीवन-मूल्यों से। निहित स्वार्थी तत्वों द्वारा तैयार ये सामग्री बच्चों के मन में गलत आदर्श, गलत नायक और गलत आकांक्षाएं भर रही है। सवाल यह है कि क्या बच्चे स्वयं सोशल मीडिया का दुरुपयोग कर रहे हैं, या सोशल मीडिया उन्हें एक सुनियोजित तरीके से अपनी गिरफ्त में ले रहा है? सच्चाई का उत्तर दूसरा है। इन प्लेटफॉर्मों पर अमर्यादित सामग्री की भरमार है-जिसे देखकर किशोरों में अपराधी प्रवृत्तियों की ओर उन्मुखता बढ़ रही है। ब्रह्मचर्य, संयम, अनुशासन और चरित्र जैसे भारतीय मूल्य हाशिये पर जा रहे हैं। इसके साथ-साथ एक गंभीर स्वास्थ्य-संकट जन्म ले रहा है। घंटों मोबाइल पकड़े बैठने से बच्चे शारीरिक सक्रियता से दूर हो रहे हैं। मोटापा, नींद की कमी, सिरदर्द, रीढ़ संबंधी विकार और यहां तक कि किशोरावस्था में मधुमेह जैसे रोगों के मामले बढ़ रहे हैं। मानसिक रूप से स्थिति और भी भयावह है। लगातार स्क्रॉल करने की आदत बच्चों की एकाग्रता को चकनाचूर कर रही है। शिक्षा पर इसका सीधा दुष्प्रभाव दिखाई दे रहा है। जो बच्चे घंटों कल्पना-लोक में विचरण करते हैं, वे वास्तविकताओं से जूझते समय टूटने-बिखरने लगते हैं। उनकी सहनशक्ति कम हो रही है, आत्मविश्वास टूट रहा है, और असफलताओं के प्रति संवेदनशीलता बढ़ रही है-जो कई बार आत्महत्या जैसी भयावह प्रवृत्तियों को जन्म देती है। भारत भी इस संकट से अछूता नहीं है। ऑनलाइन बुलिंग, ऑनलाइन ठगी, व्यभिचार से जुड़ी सामग्री, गुमराह करने वाले 'इन्फ्लुएंसर', फर्जी पहचान, ऑनलाइन हिंसा और डिजिटल व्यसन के मामले तेजी से बढ़ रहे हैं। कई बार बच्चे अपराधों में नहीं, बल्कि अपराधों के शिकार के रूप में फंसते हैं- लेकिन उन्हें बचाने वाला कोई नहीं दिखता। सोशल मीडिया कंपनियों का रवैया लापरवाह रहा है, क्योंकि उनका लक्ष्य बच्चों की सुरक्षा नहीं, बच्चों का उपयोग करके मुनाफा कमाना है। ऐसे में सवाल उठता है कि क्या भारत में भी ऑस्ट्रेलिया जैसे कठोर कदम उठाए जाने चाहिए? उत्तर है-बिल्कुल होना चाहिए। और वह भी तुरंत।

भारत की जनसंख्या का एक बड़ा हिस्सा किशोरों और युवाओं का है। यदि यह पीढ़ी सोशल मीडिया के अंधाधुंध प्रभाव में ढल गई, तो भविष्य में हमें भारी कीमत चुकानी पड़ेगी। भारत की वह पहचान, जहां दुनिया भर में भारतीय प्रतिभा, अनुशासन और बुद्धिमत्ता की मिसाल दी जाती थी, वह धूमिल पड़ने लगेगी। यह संकट केवल सरकार का नहीं है- यह समाज, विद्यालयों, अभिभावकों और मीडिया-संस्थानों का संयुक्त संकट है। अभिभावकों को बच्चों को मोबाइल देना उनकी 'मांग' समझ में आता है, लेकिन उनको दिशा देना उनका कर्तव्य है। विद्यालयों को बच्चों को डिजिटल शिष्टाचार, डिजिटल योग्यता और डिजिटल अनुशासन के बारे में शिक्षित करना चाहिए। सरकार को सामाजिक जिम्मेदारी के साथ ऐसे नियम बनाने चाहिए, जिनमें सोशल मीडिया कंपनियों को बच्चों की सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता बनाना पड़े। ऑस्ट्रेलिया ने यह कर दिखाया। और दुनिया सहम गई। अब बारी भारत और अन्य देशों की है। क्योंकि बच्चों का बचपन सिर्फ उनका अधिकार नहीं-पूरे समाज का भविष्य है। यदि यह बचपन सोशल मीडिया के हाथों बर्बाद होता रहा, तो आने वाले दौर में जो विकृतियां जन्म लेंगी, वे केवल सामाजिक नहीं, राष्ट्रीय संकट बन जाएंगी। यह समय निर्णायक है। थोड़ी-सी भी देर-और समाज को इसकी बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ेगी। ऑस्ट्रेलियाई पहल ने दुनिया को एक संदेश दे दिया है कि बच्चों को बचाने का समय अब आ गया है। भारत को भी साहसिक कदम उठाकर यह साबित करना होगा कि वह डिजिटल युग के दुष्परिणामों को समझता है और भविष्य की पीढ़ियों के लिए एक सुरक्षित, स्वस्थ और संस्कारित वातावरण तैयार करने के लिए प्रतिबद्ध है। बचपन को बचाइए-क्योंकि यही वह आधार है जिस पर समाज, संस्कृति और सभ्यता खड़ी होती है। और यदि यह आधार कमजोर पड़ गया, तो भविष्य की कोई भी इमारत स्थायी नहीं रह सकती।

केंद्र सरकार के मुताबिक 15 भगोड़े आर्थिक अपराधी हैं इन पर सरकारी बैंकों के 58000 करोड़ रुपए बकाए हैं

कि भागते रहो

जिस देश का कानून वहीं खत्म हो जाता है, जहां से उसकी भौगोलिक सरहद खत्म होती है। इसी के साथ शुरू होता है अन्य देशों से कानूनी सहभागिता का रिश्ता। कई अपराधी देश छोड़ कर भागने में कामयाब हो जाते हैं। इनमें बड़ी संख्या होती है आर्थिक अपराधियों की। कई मामलों में आर्थिक अपराधी देश छोड़ने के बाद विदेश में शानदार जीवन जीते नजर आते हैं। हाल में गोवा नाइट क्लब अग्निकांड के बाद इसके सह-मालिक गौरव और सौरभ लूथरा रातोंरात थाईलैंड भाग गए। हालांकि इंटरपोल के नोटिस के बाद दोनों हिरासत में ले लिए गए और उन्हें शीघ्र ही भारत लाया जा सकता है। कुछ दिन पहले अमेरिका से एक अपराधी अनमोल बिश्नोई को प्रत्यर्पित कर भारत लाया गया। लगभग साल भर पहले मुंबई बम धमाके के आरोपियों में से एक डेविड कोलमैन हेडली को लंबे कानूनी संघर्ष के बाद भारत लाने में कामयाबी मिली। ऐसे कई आरोपी हैं, जो अभी भी देश के हाथों में नहीं आए हैं। इनमें मेहुल चौकसी, नीरव मोदी और विजय माल्या जैसे लोग भी शामिल हैं। हाल में बेल्जियम के उच्चतम न्यायालय ने भगोड़े मेहुल चौकसी के भारत प्रत्यर्पण को रोकने की याचिका खारिज कर दी। पिछले लंबे समय से भारत सरकार ने भगोड़े आर्थिक अपराधियों के खिलाफ मुहिम छेड़ रखी है। गोवा अग्निकांड के अपराधियों की भारत वापसी की कवायद इसकी मिसाल है। मसले पर सरोकार की पड़ताल।

जनसत्ता सरोकार

बीते पांच वर्षों में सीबीआइ 134 भगोड़ों को देश में वापस लाने में कामयाब रही है। यह संख्या साल 2010 से 2019 के बीच पूरे दशक के दौरान विदेश से लाए गए भगोड़ों की दोगुनी है। इनमें से 23 भगोड़ों को अकेले इसी वर्ष वापस लाया गया। इसके लिए सीबीआइ ने इंटरपोल के साथ-साथ राज्य और केंद्रीय प्रवर्तन एजंसियों के साथ घनिष्ठ समन्वय बनाया। नतीजतन साल 2020 से इन 134 भगोड़ों का प्रत्यर्पण या निर्वासन सुनिश्चित करने में सफलता मिली। वहीं, 2010 से 2019 के बीच के दशक के दौरान यह संख्या केवल 74 थी।

केंद्र सरकार ने कुख्यात कारोबारियों विजय माल्या और नीरव मोदी सहित 15 व्यक्तियों को भगोड़ा आर्थिक अपराधी घोषित किया है। इन पर सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों का सामूहिक रूप से 58,000 करोड़ बकाया है। संसद के शीतकालीन सत्र के दौरान लोकसभा में वित्त राज्य मंत्री पंकज चौधरी ने बताया गया कि केंद्र सरकार ने विजय माल्या और नीरव मोदी सहित 15 व्यक्तियों को 31 अक्तूबर, 2025 तक भगोड़े आर्थिक अपराधी (एफईओ) घोषित किया है।

कुल मिलाकर, भगोड़ा आर्थिक अपराधी अधिनियम, 2018 (एफईओए) के अनुसार, इन भगोड़े आर्थिक अपराधियों पर लगभग 12 सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों का कुल 58,082 करोड़ बकाया है। इसमें गैर-निष्पादित अभियोग (एनपीए) की तिथि तक 26,645 करोड़ की मूल राशि और एनपीए की तिथि से 31 अक्तूबर 2025 तक अर्जित 31,437 करोड़ का ब्याज शामिल है। सरकार ने अपने जवाब में कहा कि 31 अक्तूबर 2025 तक इन अपराधियों से 19,187 करोड़ वसूल किए जा चुके हैं। इन 15 अपराधियों में से नौ सार्वजनिक क्षेत्र के बैंको के खिलाफ किए गए बड़े पैमाने पर वित्तीय धोखाधड़ी में शामिल हैं।

माल्या और नीरव के खिलाफ आरोप

विजय माल्या पर भारतीय सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के एक संघ से उनकी अब बंद हो चुकी किंगफिशर एअरलाइंस के लिए लिए गए 9,000 करोड़ रुपए से अधिक के ऋण में धोखाधड़ी का आरोप है। नीरव मोदी पर अपने चाचा मेहुल चोकसी के साथ मिलकर पंजाब नेशनल बैंक (पीएनबी) के खिलाफ 13,000 करोड़ रुपए के घोटाले का आरोप है। यह भारत के इतिहास में सबसे बड़े बैंकिंग घोटालों में से एक है।

एफईओए की सूची में कौन-कौन शामिल हैं?

एफईएओ सूची में जिन लोगों को भगोड़ा आर्थिक अपराधी घोषित किया गया है, वे हैं : विजय माल्या, नीरव मोदी, नितिन जे संदेसरा, चेतन जे संदेसरा, स्टर्लिंग बायोटेक धोखाधड़ी मामले की दीप्ति सी संदेसरा, सुदर्शन वेंकटरमण, रामानुजम शेषरत्नम, जाइलाग सिस्टम्स लिमिटेड के पूर्व प्रमोटर पुष्पेश कुमार बैद और हितेश कुमार नरेंद्रभाई पटेल। नितिन और चेतन संदेसरा ने इंडियन ओवरसीज बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, यूनियन बैंक आफ इंडिया और स्टेट बैंक आफ इंडिया के साथ कुछ बकाया राशि का निपटारा कर लिया है।

सुप्रीम कोर्ट से राहत

पिछले हफ्ते, सुप्रीम कोर्ट ने स्टर्लिंग बायोटेक बैंक धोखाधड़ी मामले में संदेसरा भाइयों के खिलाफ सभी आपराधिक कार्यवाही को रद्द करने का निर्देश दिया, बशर्ते वे ऋणदाता बैंकों को 5,100 करोड़ का पूर्ण और अंतिम भुगतान जमा कर दें। अदालत ने कहा, यदि याचिकाकर्ता (संदेसरा बंधुओं) एकमुश्त निपटान (ओटीएस) में तय की गई राशि जमा करने के लिए तैयार हैं और सार्वजनिक धन उधार देने वाले बैंकों को वापस मिल जाता है तो आपराधिक कार्यवाही जारी रखने का कोई फायदा नहीं होगा। इससे यह अंदेशा पैदा हुआ कि क्या सरकार भविष्य में ऐसे अपराधियों को देश छोड़ने से रोकने के लिए कानूनी प्रतिबंधों या निगरानी सूचियों के माध्यम से कोई नीति बना रही है, तो केंद्रीय वित्त राज्य मंत्री पंकज चौधरी ने बताया कि वर्तमान में ऐसी कोई नीति तैयार नहीं की जा रही है।

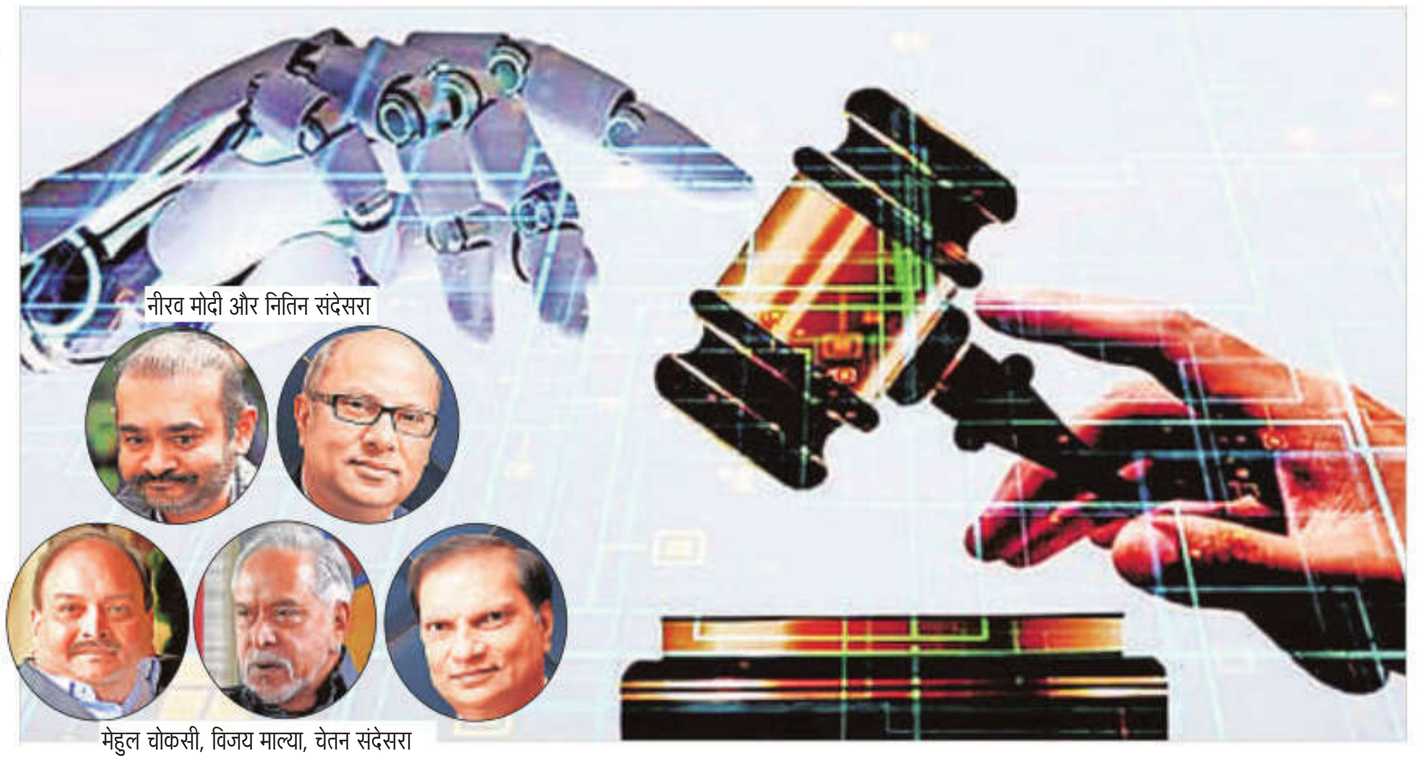

नीरव मोदी और नितिन संदेसरा

मेहुल चोकसी, विजय माल्या, चेतन संदेसरा

पांच साल में 134 भगोड़ों को वापस लाने में सीबीआइ को सफलता यूं ही नहीं मिल गई है। इसमें नई तकनीक और कूटनीतिक प्रयासों का भी खासा योगदान रहा है। सफलता दर में वृद्धि का श्रेय सरकार द्वारा बढ़ाए गए राजनयिक जुड़ाव, वीवीआइपी यात्राओं के माध्यम से भारत की पहुंच, द्विपक्षीय संबंधों, तकनीकी प्रगति और इंटरपोल के साथ बेहतर समन्वय को दिया जा सकता है। सीबीआइ ने अपने नए डिजिटल पोर्टल भारतपोल के माध्यम से इंटरपोल के साथ समन्वय बढ़ाया है। इससे भगोड़ों के प्रत्यर्पण की प्रक्रिया तेज हुई है। एजंसी द्वारा आंतरिक रूप से विकसित यह मंच भारतीय पुलिस एजंसियों को सीबीआइ के माध्यम से इंटरपोल से जोड़ता है। इससे जांच और प्रत्यर्पण की प्रक्रिया में तेजी आई है और रेड नोटिस जारी होने में लगने वाला औसत समय छह महीने से घटकर तीन महीने रह गया है।

> **हाल** में सीबीआइ ने अमेरिका में नेहल मोदी को गिरफ्तार करवाया, जो नीरव मोदी का भाई है और पंजाब नेशनल बैंक घोटाले में आरोपी है। वहीं, सीबीआइ ने एक आर्थिक अपराधी मोनिका कपूर को भी अमेरिका से प्रत्यर्पित करवाया, जो 1999 में फरार हो गई थी।

हाल ही में सीबीआइ ने अमेरिका में नेहल मोदी को गिरफ्तार करवाया, जो नीरव मोदी का भाई है और पंजाब नेशनल बैंक घोटाले में आरोपी है। वहीं, सीबीआइ ने एक आर्थिक अपराधी मोनिका कपूर को भी अमेरिका से प्रत्यर्पित करवाया, जो 1999 में फरार हो गई थी। वहीं, सीबीआइ ने कई साइबर अपराधियों के खिलाफ कार्रवाई की है। इसके अलावा, सीबीआइ देश से भागे हुए अपराधियों को वापस लाने के लिए आपरेशन त्रिशूल चला रही है।

प्रत्यर्पण की प्रक्रिया के तीन चरण होते हैं:- इंटरपोल द्वारा रेड नोटिस जारी करना, भगोड़े की भौगोलिक स्थिति का पता लगाना, और तीसरा, कानूनी और कूटनीतिक प्रयासों के बाद प्रत्यर्पण। ये सभी प्रक्रियाएं समय लेने वाली हैं। इंटरपोल रेड नोटिस जारी करके किसी देश में वांछित भगोड़े के बारे में सभी 195 देशों को सचेत करता है। इधर सरकार और केंद्रीय एजंसियां कोशिश कर रही हैं कि भगोड़े अपराधियों को लाने के लिए समन्वय को और मजबूत किया जाए। पिछले दिनों एक बैठक में केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने फरार अपराधियों के लिए सभी राज्य सरकारों से राज्य की राजधानी में एक विशेष प्रकोष्ठ गठित करने की अपील की। उन्होंने कहा कि ऐसे प्रकोष्ठों की अनुपस्थिति हमेशा अपराधियों के प्रत्यर्पण की प्रक्रिया में चुनौतियां पैदा करती हैं। जानकारों का कहना है कि सभी राज्यों की राजधानियों में भगोड़ों के लिए एक विशेष प्रकोष्ठ होना चाहिए, जो अंतरराष्ट्रीय मानदंडों को पूरा करता हो। कई बार, अंतरराष्ट्रीय भगोड़ों के लिए ऐसे प्रकोष्ठ का अभाव विदेशी अदालतों में मुद्दा बन जाता है। राज्य सरकारों को ऐसा प्रकोष्ठ स्थापित करना चाहिए ताकि कोई भी बहाना न बना सके।

विशेषज्ञों का कहना है कि कायदे से फरार आरोपियों का एक वैज्ञानिक डेटाबेस सभी राज्य पुलिस के साथ साझा किया जाना चाहिए और आइबी व सीबीआइ को इस दिशा में काम करना चाहिए। सीबीआइ और आइबी को राज्यों को ऐसे डेटाबेस बनाने में मार्गदर्शन करने में अग्रणी भूमिका निभानी चाहिए। डेटाबेस में फरार लोगों के खिलाफ मामले, उनके फरार होने के स्थान, भारत में उनका नेटवर्क और प्रत्यर्पण की प्रक्रिया में आई रुकावट सहित सभी विवरण होने चाहिए।

जानकारों के मुताबिक नशीले पदार्थों, गिरोहबाजों, जबरन वसूली और वित्तीय अपराधों के साथ-साथ साइबर अपराधों की जांच के लिए एक केंद्रित समूह का गठन किया जाना चाहिए, जहां सूचना एवं संचार ब्यूरो (आइबी) और सीबीआइ एक बहु एजंसी केंद्र (एमएसी) की मदद से इस प्रक्रिया में मार्गदर्शन करें।

केंद्रीय एजंसियों, विदेश और गृह मंत्रालयों के एक कार्यक्रम में गृह मंत्री शाह ने कहा था कि किसी व्यक्ति के खिलाफ रेड कार्नर नोटिस जारी होने के बाद, उसका पासपोर्ट जब्त कर लिया जाना चाहिए, ताकि वह विदेश न भाग सके। भगोड़े को भारत के कानूनों से डरना चाहिए। शाह ने कहा कि भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता (बीएनएसएस) के अनुच्छेद 355 और 356 (अनुपस्थिति में मुकदमे के मुद्दे से संबंधित है), का उपयोग राज्यों द्वारा भगोड़ों के खिलाफ मुकदमा शुरू करने के लिए किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा, सीबीआइ की मदद से, सभी राज्यों को राज्य-विशिष्ट भगोड़ों के प्रत्यर्पण की प्रक्रिया के लिए इकाइयां स्थापित करनी चाहिए।

बारह अरब डालर की संपत्ति जब्त करने का सरकार का दावा

केंद्र सरकार ने धनशोधन कानून को सख्त कर दिया है। पिछले चार वर्षों में दो अरब डालर बरामद किए हैं। धनशोधन कानून को सख्त करने के कारण भारत सरकार 2014-23 के बीच कई भगोड़ों की 12 अरब डालर की संपत्ति जब्त करने में सक्षम हुई। सीबीआइ ने साल 2024 में फरार आरोपियों के खिलाफ कम से कम 52 रेड नोटिस और 44 ब्लू नोटिस जारी किए।

साल 2025 के पहले नौ महीनों में 189 नोटिस जारी किए गए हैं, जिनमें 89 लाल नोटिस और 110 नीले नोटिस शामिल हैं। इंटरपोल ने भारतीय भगोड़ों के खिलाफ 957 रेड नोटिस जारी किए हैं, जिनमें से 231 मामले सीबीआइ से, 130 एनआइए से, 21 ईडी से, 12 एनसीबी से जुड़े हैं और बाकी राज्य पुलिस बलों से संबंधित हैं। इंटरपोल को जारी किए गए कुल नोटिस में से 189 रेड नोटिस आर्थिक अपराध से संबंधित हैं, उसके बाद 254 उग्रवाद से संबंधित, 21 नोटिस जबरन वसूली से संबंधित, 55 मादक पदार्थों से संबंधित और बाकी बलात्कार, जबरन वसूली आदि जैसे अन्य अपराधों से जुड़े हैं।

इस साल अब तक कुल 35 भगोड़ों को भारत प्रत्यर्पित किया जा चुका है और साथ ही कहा, अन्य देशों के पास कुल 338 प्रत्यर्पण अनुरोध लंबित हैं। साल 2024 में 30 अपराधियों का प्रत्यर्पण किया गया और साल 2023 में 29 अपराधियों का प्रत्यर्पण किया गया था।

वैसे इन मामलों में देरी की आशंका बनी हुई है, और भगोड़े अक्सर इन देशों से अपने प्रत्यर्पण के प्रयासों में बाधा डालने के लिए विभिन्न तरीकों का सहारा लेते हैं। ऐसे उदाहरण भी हैं जहां संगठित आपराधिक गिरोहों से जुड़े कई अपराधी भारत से भाग गए हैं और विदेशों में रहकर आपराधिक गतिविधियों में लिप्त हैं।

किसका कितना है बाकी

सरकार के अनुसार, विजय माल्या और उनकी कंपनियों, जिनमें किंगफिशर एअरलाइंस लिमिटेड और अन्य संस्थाएं शामिल हैं, से संबंधित विभिन्न बैंकों में कुल वित्तीय नुकसान का मूल्य लगभग 27,073.41 करोड़ रुपए है।

31 अक्तूबर तक माल्या और उससे संबंधित संस्थाओं से कुल मिलाकर लगभग 15,094.93 करोड़ रुपए वसूल किए गए हैं। इनमें से अकेले स्टेट बैंक आफ इंडिया के माध्यम से 10,814.54 करोड़ रुपए की वसूली हुई है।

नीरव मोदी और उनकी कंपनियों, जिनमें फायरस्टार ग्रुप, फायरस्टार इंटरनेशनल लिमिटेड, फायरस्टार डायमंड इंटरनेशनल लिमिटेड शामिल हैं, को विभिन्न बैंकों में कुल मिलाकर लगभग 9,664.50 करोड़ रुपए का वित्तीय नुकसान हुआ है।

नीरव मोदी और उससे संबंधित संस्थाओं से 31 अक्तूबर तक कुल लगभग 671.63 करोड़ रुपए वसूल किए गए हैं। गौरतलब है कि पंजाब नेशनल बैंक में दर्ज गैर-ऋण धोखाधड़ी के मामलों में 93.21 करोड़ रुपए की वसूली हुई है। गैर-ऋण धोखाधड़ी के मामलों से तात्पर्य बैंक के आंतरिक संचालन से संबंधित किसी धोखाधड़ीपूर्ण लेनदेन या गतिविधि से है, ना कि ऋण देने की प्रक्रिया से।

नीरव मोदी ब्रिटेन में गिरफ्तार किया जा चुका है और अपने प्रत्यर्पण का विरोध कर रहा है। जुलाई 2025 में, नीरव मोदी के भाई, नेहल को अमेरिका में गिरफ्तार किया गया था।

सुदर्शन वेंकटरमन, रामानुजम शेषरथिनम और उनकी चेन्नई स्थित प्रौद्योगिकी कंपनी जाइलाग सिस्टम्स लिमिटेड के मामले में, विभिन्न बैंक लेनदेनों में कुल कथित वित्तीय हानि लगभग 2,145.93 करोड़ रुपए है। सरकारी आंकड़ों के अनुसार, इन सभी लेनदेनों से कुल वसूली 4.45 करोड़ रुपए है।

पुष्पेश कुमार बैद, जिसे कोलकाता की एक विशेष अदालत ने कथित तौर पर बड़े पैमाने पर बैंक ऋण धोखाधड़ी का मुख्य साजिशकर्ता घोषित किया है, बैंकों के लगभग 181.71 करोड़ रुपए के नुकसान के लिए जिम्मेदार है। सरकार के अनुसार, उससे कुल 2.06 करोड़ रुपए की वसूली हुई है।

भगोड़ा हीरा व्यापारी मेहुल चोकसी 8,515 करोड़ रुपए के कुल बकाया के साथ वांछित है। उसने एंटीगा और बारबुडा की नागरिकता ले ली है और उसके प्रत्यर्पण के प्रयास जारी हैं।

विंसम डायमंड्स से जुड़े जतिन मेहता पर लगभग 6,800 करोड़ का बकाया है, जो ब्याज और जुर्माने को मिलाकर लगभग 7,000 करोड़ हो गया है। इस मामले में वसूली गई राशि सार्वजनिक नहीं की गई है। मेहता वर्तमान में सेंट किट्स और नेविस का नागरिक है। उसके खिलाफ जांच जारी है।

कितने तरह के नोटिस जारी करता है इंटरपोल

रेड नोटिस

अभियोजन के लिए वांछित या सजा काटने के लिए वांछित व्यक्तियों का पता लगाने और उन्हें गिरफ्तार करने के लिए जारी किया गया नोटिस।

येलो नोटिस

लापता व्यक्तियों, अक्सर नाबालिगों, का पता लगाने में मदद करने के लिए, या उन व्यक्तियों की पहचान करने में मदद करने के लिए जो स्वयं की पहचान करने में असमर्थ हैं।

ब्लू नोटिस

किसी आपराधिक जांच के संबंध में किसी व्यक्ति की पहचान, स्थान या गतिविधियों के बारे में अतिरिक्त जानकारी एकत्र करने के लिए।

ब्लैक नोटिस

अज्ञात शवों के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए।

ग्रीन नोटिस

किसी व्यक्ति की आपराधिक गतिविधियों के बारे में चेतावनी देने के लिए, जहां उस व्यक्ति को सार्वजनिक सुरक्षा के लिए संभावित खतरा माना जाता है।

आरेंज नोटिस

किसी ऐसी घटना, व्यक्ति, वस्तु या प्रक्रिया के बारे में चेतावनी देने के लिए जारी किया जाता है जो सार्वजनिक सुरक्षा के लिए गंभीर और तत्काल खतरा पैदा करती है।

पर्पल नोटिस

अपराधियों द्वारा अपनाए गए तौर-तरीकों, वस्तुओं, उपकरणों और छिपाने के तरीकों के बारे में जानकारी प्राप्त करना या प्रदान करना।

सिल्वर नोटिस (पायलट चरण)

आपराधिक संपत्तियों की पहचान और पता लगाने के लिए।

संदेसरा बंधुओं को मिली छूट के संदेश पर चिंता

पिछले महीने, सुप्रीम कोर्ट ने भगोड़े संदेसरा भाइयों के खिलाफ मामले वापस लेने पर सहमति जताई थी। शर्त यह थी कि वे 5,100 करोड़ रुपए का पूर्ण और अंतिम भुगतान करें। साथ में कोर्ट ने यह भी कहा कि इस आदेश को मिसाल के तौर पर नहीं माना जा सकता। सुप्रीम कोर्ट ने भगोड़े संदेसरा बंधुओं को 1.6 अरब अमेरिकी डालर के बैंक धोखाधड़ी मामले में 5,100 करोड़ रुपए का भुगतान करके समझौता करने की अनुमति दे दी और सभी कार्यवाही रद्द कर दी।

इससे यह बहस छिड़ गई कि क्या बड़े आर्थिक अपराधी छूट को खरीद सकते हैं। कानूनी विशेषज्ञों और ईडी को चिंता है कि इससे माल्या और मोदी जैसे अन्य भगोड़ों को भी ऐसे समझौते करने के लिए प्रोत्साहन मिल सकता है। सुप्रीम कोर्ट ने 19 नवंबर को स्टर्लिंग बायोटेक लिमिटेड के प्रमोटर संदेसरा बंधुओं और उनके चार्टर्ड अकाउंटेंट के खिलाफ सभी दीवानी और आपराधिक कार्यवाही को समाप्त करने पर सहमति व्यक्त की, बशर्ते वे 17 दिसंबर तक या उससे पहले सुप्रीम कोर्ट रजिस्ट्री को 5,100 करोड़ रुपए जुर्माने और ब्याज सहित कुल कथित धोखाधड़ी राशि का लगभग एक तिहाई पूर्ण और अंतिम भुगतान के रूप में जमा कर दें।

साल 1985 में स्थापित स्टर्लिंग बायोटेक लिमिटेड गुजरात स्थित संदेसरा समूह की कंपनी है। इसका स्वामित्व नितिन और चेतन जयंतीलाल संदेसरा भाइयों के पास है। दोनों भाइयों की एक और कंपनी है। इसका नाम स्टर्लिंग आयल एक्सप्लोरेशन एंड एनर्जी प्रोडक्शन लिमिटेड है। इसकी स्थापना साल 2003 में हुई थी और इसका मुख्यालय नाइजीरिया में है। संदेसरा परिवार 2017 में अल्बानियाई पासपोर्ट पर भारत छोड़कर चला गया क्योंकि उन्हें केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआइ), प्रवर्तन निदेशालय (ईडी), गंभीर धोखाधड़ी जांच कार्यालय (एसएफआइओ) और आयकर विभाग सहित कई एजंसियों द्वारा ऋण धोखाधड़ी के कई आरोपों का सामना करना पड़ रहा था। साल 2020 में, उन्हें साल 2018 के एक कानून के तहत भगोड़ा आर्थिक अपराधी घोषित किया गया था। इसके तहत दीवानी मुकदमों में भाग लेने की उनकी क्षमता भी निलंबित कर दी गई और संपत्तियों की कुर्की अनिवार्य कर दी गई।

उनके खिलाफ मामले की बात करें तो, इसमें 5,383 करोड़ रुपए से ज्यादा के ऋण शामिल हैं। सीबीआइ के अनुसार, इस पैसे को मुखौटा कंपनियों के जरिए संदेसरा बंधुओं के विदेशों में व्यापारिक संचालन और निजी जेट और महंगी अचल संपत्ति सहित निजी विलासिता वाली संपत्तियों को निधि देने के लिए इस्तेमाल किया गया था। सीबीआइ ने साल 2017 में कथित धोखाधड़ी की राशि 5,383 करोड़ रुपए बताई थी। समय के साथ, जुर्माने और ब्याज के चक्रवृद्धि होने से बैंकों को देय कुल राशि में काफी वृद्धि हुई, और ईडी के अनुमान के अनुसार अब धोखाधड़ी की कुल राशि 16,000 करोड़ रुपए या लगभग 1.6 अरब अमेरिकी डालर से अधिक है।

न्यायमूर्ति जेके माहेश्वरी और न्यायमूर्ति विजय बिश्नोई ने अपने आदेश में कहा कि कार्यवाही की सामान्य भावना सार्वजनिक धन की रक्षा करने और गबन की गई राशि को वापस पाने के इरादे को दर्शाती है और चूंकि सार्वजनिक धन उधारदाताओं को लौटाया जा रहा था, इसलिए भाइयों के खिलाफ आपराधिक कार्यवाही जारी रखने से कोई उपयोगी उद्देश्य पूरा नहीं होगा।

गौरतलब है कि प्रवर्तन निदेशालय, जिसने संदेसरा परिवार से जुड़ी कंपनियों की 14,550 करोड़ रुपए की अचल और चल संपत्तियों को जब्त किया था, सर्वोच्च न्यायालय के समक्ष कार्यवाही में पक्षकार नहीं था। हालांकि, सीबीआइ ने 2017 में संदेसरा परिवार और उनकी कंपनी स्टर्लिंग बायोटेक के खिलाफ मामला दर्ज किया था। प्रवर्तन निदेशालय का मानना है कि संदेसरा को खुद को मुसीबत से बाहर निकालने की अनुमति देने वाले आदेश का संदर्भ अन्य भगोड़े आर्थिक अपराधियों द्वारा दिया जा सकता है।

इंडियन एक्सप्रेस समूह
जनसत्ता सरोकार | विमर्श | दो
जनसत्ता | 14 दिसंबर, 2025

इतिहास से छेड़छाड़, भविष्य का तिरस्कार

दूसरी नजर

पी चिदंबरम

> राष्ट्रगान या राष्ट्रगीत के लिए कुछ छंदों का चयन कोई असामान्य बात नहीं है। जन गण मन, जो कि राष्ट्रगान है, रवींद्रनाथ टैगोर की पूर्ण कविता का संक्षिप्त रूप है। कई देशों के राष्ट्रगान लंबे गीतों के संक्षिप्त रूप हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इस तथ्य को जानबूझकर नजरअंदाज किया कि आरएसएस और भाजपा के पूर्ववर्ती संगठन की भारत के स्वतंत्रता संग्राम में या वंदे मातरम् गाने या उसे लोकप्रिय बनाने में कोई भूमिका नहीं थी।

इतिहास एक सार्वजनिक संपत्ति की तरह है। कोई भी इसमें प्रवेश कर सकता है और इतिहास लिख सकता है या उसका पुनर्लेखन कर सकता है- जब तक कि बाद का कोई शोध और अध्ययन उन तथ्यों को गलत साबित न कर दे। यूरोपीय सिद्धांतकारों और कुछ नकलची भारतीय इतिहासकारों ने आर्यों को एक श्रेष्ठ वर्ग के रूप में चित्रित किया, जिन्होंने भारत और अन्य देशों पर आक्रमण करके उन्हें 'सभ्य' बनाया। यह एक मिथक था। भारत के कई हिस्सों में आर्यों के आने से बहुत पहले प्राचीन उन्नत सभ्यताएं मौजूद थीं: उदाहरण के लिए, तमिलनाडु के कीझाड़ी और अन्य स्थानों में पुरातात्विक खोजों से 3500 ईसा पूर्व की एक समृद्ध सभ्यता का पता चलता है।

क्रिस्टोफर कोलंबस द्वारा अमेरिका की 'खोज' इतिहास का एक प्रारंभिक पाठ था, जो हम सबने स्कूल में पढ़ा था। यह कई मायनों में गलत था; कोलंबस के इस महाद्वीप पर पहुंचने से कई शताब्दी पहले से ही वहां लोगों की आबादी मौजूद थी, जिसे अब अमेरिका कहा जाता है। शोध ने साबित किया है कि उत्तरी वाइकिंग्स, कोलंबस से लगभग 500 साल पहले उत्तरी अमेरिका पहुंच चुके थे।

तथ्यों को तोड़ने-मरोड़ने वाले

राजनेता इतिहास के साथ छेड़छाड़ करने में माहिर होते हैं। भाजपा (और सरकार) ने कांग्रेस पर राष्ट्रगीत वंदे मातरम् को विकृत करने का आरोप लगाया और शीतकालीन सत्र में संसद के दोनों सदनों में एक दिन की बहस पर जोर दिया। पार्टी के वक्ताओं ने अपने-अपने तरीके से 'इतिहास' का वर्णन किया; यह विरूपित इतिहास था- एक तरह का दुष्प्रचार। इसमें सबसे आगे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी थे। उनके शब्दों में:

'वंदे मातरम् की रचना उस समय हुई थी, जब 1857 के स्वतंत्रता संग्राम के बाद ब्रिटिश साम्राज्य अस्थिर था तथा उसने भारत पर तरह-तरह के दबाव डाले और अन्याय किए। तब बंकिम-दा ने चुनौती दी, और ताकत के साथ जवाब दिया, उसी ललकार से वंदे मातरम् का जन्म हुआ...

'...मोहम्मद अली जिन्ना ने 15 अक्तूबर, 1937 को लखनऊ से वंदे मातरम् के खिलाफ नारा लगाया। मुसलिम लीग के निराधार बयानों का दृढ़ता से खंडन करने और उनकी निंदा करने के बजाय तत्कालीन कांग्रेस अध्यक्ष जवाहरलाल नेहरू ने वंदे मातरम् के प्रति अपनी और कांग्रेस पार्टी की प्रतिबद्धता की पुष्टि नहीं की और स्वयं वंदे मातरम् पर ही सवाल उठाना शुरू कर दिया। जिन्ना के विरोध के ठीक पांच दिन बाद 20 अक्तूबर, 1937 को नेहरू ने नेताजी सुभाष चंद्र बोस को एक पत्र लिखकर जिन्ना की भावना से सहमति व्यक्त की...

'...(नेहरू ने कहा) 'मैंने वंदे मातरम् गीत की पृष्ठभूमि पढ़ी है। मुझे लगता है कि यह पृष्ठभूमि मुसलमानों को भड़का सकती है।'

'...दुर्भाग्यवश, 26 अक्तूबर, 1937 को कांग्रेस ने वंदे मातरम् पर समझौता कर लिया और इसे टुकड़ों में बांट दिया... इतिहास गवाह है कि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने मुसलिम लीग के आगे घुटने टेक दिए और उसके दबाव में आकर तुष्टीकरण की राजनीति अपना ली... कांग्रेस अब एममसी (मुसलिम लीग-माओवादी कांग्रेस) बन चुकी है।'

अमित शाह ने कहा कि राष्ट्रगीत को बांटने से तुष्टीकरण की राजनीति को बढ़ावा मिला, जिसके कारण विभाजन हुआ। यह कल्पना की ऐसी उड़ान है कि इतिहास को तोड़-मरोड़ कर पेश करने वाले भी असहज महसूस करेंगे।

संक्षिप्त इतिहास

यहां राष्ट्रगीत का घटनाक्रम दिया गया है (**देखें बाक्स**)।

राष्ट्रगान या राष्ट्रगीत के लिए कुछ छंदों का चयन कोई असामान्य बात नहीं है। *जन गण मन*, जो कि राष्ट्रगान है, रवींद्रनाथ टैगोर की पूर्ण कविता का संक्षिप्त रूप है। कई देशों के राष्ट्रगान लंबे गीतों के संक्षिप्त रूप हैं।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इस तथ्य को जानबूझकर नजरअंदाज किया कि आरएसएस और भाजपा के पूर्ववर्ती संगठन की भारत के स्वतंत्रता संग्राम में या *वंदे मातरम्* गाने या उसे लोकप्रिय बनाने में कोई भूमिका नहीं थी। वास्तव में, आरएसएस ने अपने राष्ट्रीय मुख्यालय में 52 वर्षों तक राष्ट्रीय ध्वज नहीं फहराया था।

गलत प्राथमिकताएं

सन 1937 से अब तक दो छंदों वाले राष्ट्रगीत पर किसी ने विवाद नहीं उठाया। अब क्यों? संसद और सरकार को वर्तमान में जनता की गंभीर समस्याओं और भविष्य के लिए देश के महत्त्वाकांक्षी लक्ष्यों पर ध्यान देना चाहिए।

चीन के संवैधानिक निकाय रोबोटिक्स, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, मशीन लर्निंग, अंतरिक्ष एवं महासागरों की चुनौतियों और डेटा पर चर्चा करते हैं, जो इस ग्रह पर मानव जीवन में बड़े बदलाव लाएंगे। भारत की संसद को वर्तमान में गरीबी, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा, बुनियादी ढांचा, वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन एवं सभी के लिए उनकी उपलब्धता, वित्तीय स्थिरता, व्यापार घाटा, जलवायु परिवर्तन और अन्य ज्ञात समस्याओं पर ध्यान देना चाहिए। भविष्य में बढ़ती असमानता, जनसंख्या, आंतरिक प्रवासन, धर्मनिरपेक्षता, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी और अन्य अज्ञात मसले भारत के सामने एक चुनौती के रूप में होंगे।

इतिहास को तोड़-मरोड़ कर पेश करना बहुत बुरी बात है, लेकिन भविष्य का तिरस्कार अक्षम्य है।

1870 का दशक- बंकिम चंद्र चटर्जी ने एक स्तुति गीत की कुछ पंक्तियां लिखीं, जो अप्रकाशित रहीं।

1881- इस कविता का विस्तारित संस्करण *आनंदमठ* उपन्यास में शामिल किया गया।

1905- रवींद्रनाथ टैगोर ने राष्ट्रवादी प्रदर्शनों का नेतृत्व करते हुए *वंदे मातरम्* गाया; यह एक राजनीतिक नारा बन गया।

1908- तमिल कवि सुब्रमण्या भारती ने अपनी कविता 'एन्थैयुम थायुम...' में *वंदे मातरम्* को अमर कर दिया।

बंकिम चटर्जी का यह गीत हर स्वतंत्रता सेनानी की जुबान पर था।

1930 का दशक- सांप्रदायिक राजनीति चरम पर थी, और यह गीत विवादास्पद हो गया।

28-09-1937- राजेंद्र प्रसाद ने सरदार पटेल को पत्र लिखकर गीत के व्यापक विरोध पर चिंता व्यक्त की और सुझाव दिया कि इस पर कांग्रेस की नीति स्पष्ट कर दी जानी चाहिए।

कांग्रेस कार्य समिति की बैठक की पूर्व संध्या पर नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने टैगोर से सलाह ली।

17-10-1937- नेताजी बोस ने जवाहरलाल नेहरू को पत्र लिखकर कांग्रेस कार्य समिति में गीत पर चर्चा करने का अनुरोध किया।

20-10-1937- नेहरू ने बोस को पत्र लिखकर कहा कि यह विवाद सांप्रदायिक तत्त्वों द्वारा गढ़ा गया है और वे इस मामले पर टैगोर तथा अन्य लोगों से चर्चा करेंगे।

26-10-1937- टैगोर ने नेहरू को पत्र लिखकर कहा कि गीत का पहला भाग अपने आप में पूर्ण है और इसमें प्रेरणादायक संदेश हैं, जो किसी भी धार्मिक समुदाय के लिए आपत्तिजनक नहीं हैं।

28-10-1937- कांग्रेस कार्य समिति ने कविता के दो छंदों को राष्ट्रगीत के रूप में अपनाया।

जनवरी 1939- कांग्रेस कार्य समिति ने *महात्मा गांधी की उपस्थिति* में वर्धा में हुई एक बैठक में इस प्रस्ताव को दोहराया।

सुविधा की सियासत

वक्त की नब्ज

तवलीन सिंह

> देश की समस्या यह है कि एक ताकतवर विपक्ष की हमको सख्त आवश्यकता है। उसके बिना न संसद के अंदर और न संसद के बाहर उन चीजों में सुधार आने वाले हैं, जिनकी जनता को जरूरत है। सरकारी सेवाओं में सुधार के अलावा हमको उन बुनियादी चीजों में परिवर्तन चाहिए, जिनके बिना जीना मुश्किल है अपने देश में। हमारे बेहाल शहरों में जीना छोड़ो, सांस लेना मुश्किल हो गया है।

जानती हूं कि जो बात आज कहने वाली हूं इस लेख में, उसको बहुत बार कह चुकी हूं, लेकिन क्या करूं? राहुल गांधी का लोकसभा में भाषण सुनने के बाद दोबारा कहने पर मजबूर हूं कि नेता प्रतिपक्ष अपने प्रधानमंत्री की सबसे बड़ी शक्ति हैं। जब भी बोलते हैं, खासतौर पर संसद के अंदर, साबित करते हैं कि उनको गंभीरता से लेना मुश्किल नहीं, नामुमकिन है। इस बार बहस का विषय उनके कहने पर तय हुआ था। एसआइआर (विशेष गहन पुनरीक्षण) पर संसद में बहस करवाने के लिए महीनों से प्रदर्शन करते आए हैं कांग्रेसी सांसद संसद के परिसर में। ऐसे प्रदर्शन हुए हैं राहुल गांधी के कहने पर, इसलिए सोचा था मैंने कि इस बार उनकी तरफ से ऐसा भाषण सुनने को मिलेगा, जिसको याद किया जाएगा इतिहास के पन्नों में।

इस उम्मीद से मैंने उनका पूरा भाषण शुरू से अंत तक सुना, लेकिन शुरू जब उन्होंने खादी कपड़ा और कांजीवरम साड़ियों से किया, मैं हैरान हुई। फिर उन्होंने आरोप लगाया कि विश्वविद्यालयों के कुलपति आजकल चुने जाते हैं सिर्फ ऐसे लोग, जिनकी सोच राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की विचारधारा से मेल खाती है, तो सोचने लगी कि शायद विषय को भूल गए हैं। सभापति को भी अब तक ऐसा लगने लगा था, तो उन्होंने नेता प्रतिपक्ष को टोकते हुए याद दिलाया कि बहस किस विषय पर हो रही थी। तिलमिलाकर राहुल गांधी ने कहा कि उनको विषय याद है और उस पर ही आने वाले हैं।

यहां उन्होंने याद दिलाया कि ब्राजील की एक महिला ने हरियाणा के चुनावों में बाईस बार वोट डाला था। इससे साबित होता है, उन्होंने आगे कहा, कि हरियाणा का चुनाव चोरी से भारतीय जनता पार्टी ने जीता है। ऐसा महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश में भी हुआ है उनके हिसाब से और हाल में बिहार में भी वोट चोरी करके भाजपा जीती है। फिर धमकी दी चुनाव आयुक्त को कि उनका जब समय आएगा सत्तापक्ष में बैठने का तो उनको ढूंढ़कर दंडित कराएंगे। उनके इस भाषण को सुनकर तय कर लिया मैंने कि राहुल गांधी को वास्तव में गंभीरता से लेना नामुमकिन है। बहस के अंत में जब गृहमंत्री ने तगड़ा जवाब दिया उनके आरोपों का, तो नेता प्रतिपक्ष अपने सांसदों को लेकर 'वाकआउट' कर गए। जाते-जाते गृहमंत्री को धमकी देते गए कि उनमें हिम्मत नहीं है उनके तीन 'परमाणु बम वाली' प्रेस वार्ताओं पर बहस करवाएं। अब खबर यह है कि संसद सत्र के बीच ही वह निकल गए हैं विदेश।

इस बहस के बाद संयोग से मेरी मुलाकात हुई एक मोदी भक्त से, जिसने मुस्कराते हुए मुझे कहा, '2029 में भी मोदी के नेतृत्व में लोकसभा चुनाव लड़ेगी भारतीय जनता पार्टी और मुझसे लिख कर ले लो कि मोदी चौथी बार प्रधानमंत्री बनने वाले हैं'। मैंने जब उनसे कहा कि ऐसा मैं नहीं मानती हूं इसलिए कि आम लोगों के जीवन में वह परिवर्तन नहीं आया है, जिसका वादा मोदी करते आए हैं पिछले ग्यारह वर्षों से। सरकारी स्कूल वैसे के वैसे रद्दी हैं आज भी। सरकारी अस्पतालों में कोई परिवर्तन नहीं दिखता है। गांवों में जो घर-घर नल का वादा था वह भी लटका हुआ है। रही भ्रष्टाचार समाप्त करने की बात, तो यहां भी थोड़ा फर्क नहीं दिखता है आम मतदाताओं को। तो जीतेंगे कैसे चौथी बार? उस भक्त ने फिर से मुस्कराकर कहा, 'जीतेंगे, जब तक उनके मुख्य प्रतिद्वंद्वी राहुल गांधी रहते हैं'। उनकी इस बात ने मुझे चुप करा दिया।

देश की समस्या यह है कि एक ताकतवर विपक्ष की हमको सख्त आवश्यकता है। उसके बिना न संसद के अंदर और न संसद के बाहर उन चीजों में सुधार आने वाले हैं, जिनकी जनता को जरूरत है। सरकारी सेवाओं में सुधार के अलावा हमको उन बुनियादी चीजों में परिवर्तन चाहिए, जिनके बिना जीना मुश्किल है अपने देश में। हमारे बेहाल शहरों में जीना छोड़ो, सांस लेना मुश्किल हो गया है। हाल में लौटी हूं न्यूयार्क से, जहां रोज एक्यूआइ जांचती थी और हैरान रह जाती थी कि दुनिया के इस सबसे बड़े महानगर में वायु प्रदूषण है ही नहीं। पानी इतना साफ़ है कि सीधा नल खोलकर लोग पीते हैं बिना इस चिंता के कि उनको टाइफाइड या पीलिया जैसी कोई बीमारी हो सकती है।

अपने देश में हाल यह है कि तकरीबन सारी बीमारियां होती हैं गंदगी की वजह से। गंदगी के कारण 1000 में से 28 भारतीय बच्चे मर जाते हैं पांच साल तक पहुंचने से पहले और अक्सर ये मौतें होती हैं ऐसी बीमारियों से, जो लाइलाज नहीं हैं। अगर हमारे शासकों ने ध्यान दिया होता शहरों और गांवों में सफाई पर, तो न बच्चे मरते और न बीमारियां फैलतीं। हमसे गरीब देश हमसे साफ क्यों हैं, हमारे शासक कभी पूछते नहीं हैं। दूर जाने की जरूरत नहीं है, श्रीलंका ही चले जाइए और देखिए कि न शहरों की सड़कों पर कूड़ा दिखता है और न गांवों में गंदगी। पिछले साल मैंने सड़क के रास्ते कोलंबो से कैंडी तक यात्रा की और यकीन मानिए कि मैंने कहीं कूड़ा नहीं देखा।

कहने का मतलब है मेरा कि बहुत कुछ है करने को अपने देश में, लेकिन जब तक नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी रहेंगे, तब तक कोई उम्मीद नहीं है कि कुछ होने वाला है। अव्वल तो विदेश की यात्राएं उनकी कुछ ज्यादा होती हैं और जहां जाते हैं लोगों को कहना नहीं भूलते हैं कि भारत को बर्बाद किया है नरेंद्र मोदी ने सारी लोकतांत्रिक संस्थाओं को समाप्त करके। इतना बुरा हाल है, तो आप देश में कुछ ज्यादा समय क्यों नहीं बिताते हैं? या फिर अपनी जगह किसी और को देते क्यों नहीं हैं? दूसरी तरफ मोदी और मोदी भक्त चैन से बैठे हुए हैं इस बात को याद करके कि जब तक राहुल गांधी हैं मोदी के सामने, तब तक 'आएगा तो मोदी ही'।

सहमति और दृष्टिकोण

संदर्भ

राकेश सिन्हा

> किसी भी राष्ट्र का सांस्कृतिक पक्ष उसकी बुनियाद का अहम मुद्दा होता है। उससे आंख-मिचौली कर राष्ट्र अपने आपको सशक्त नहीं बना सकता है। न ही बहस में उभरने वाले तथ्यों और तर्कों से भयभीत होना चाहिए। स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान सांस्कृतिक पक्ष की उपेक्षा हुई। उपनिवेशवाद सिर्फ राजनीतिक स्वतंत्रता पर ही हमला नहीं था, बल्कि देश की सांस्कृतिक चेतना पर भी आघात था। पर सांस्कृतिक प्रश्नों पर शायद ही प्रस्ताव पारित किया गया।

वंदे मातरम् की 150वीं वर्षगांठ पर संसद में हुई बहस विरासत पर जश्न के साथ-साथ समकालीन राजनीतिक वैचारिक विभाजन का प्रतिबिंब हो गई। स्वाभाविक है, उन लोगों को निराशा हुई होगी, जो बहस में आम सहमति ढूंढ़ना चाहते थे। ऐसा सोचना या अपेक्षा रखना गलत है, क्योंकि बहस जश्न के लिए थी भी नहीं। इतिहास के वे प्रश्न, जो स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान राजनीतिक कुलीनों के निर्णयों के आधार पर हमारे बीच आए और आम लोग उस निर्णय प्रक्रिया से दूर रखे गए, उन्हें हम स्थगित वैचारिक बहस कह सकते हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इतिहास के पिटारे को खोल दिया। यह किसी भी राष्ट्र के लिए, विशेषकर भारत के लिए आवश्यकता ही नहीं, सबसे अधिक अपेक्षित है। हम कौन हैं, भारत का अभिप्राय क्या है, हमारी सभ्यता की नींव क्या है और वह वर्तमान में भारत में कितना अहम है! ऐसे प्रश्न बच्चों के लेखों की तरह बताए जाते रहे, जिसमें 'चित भी मेरी, पट भी मेरी' का सिद्धांत था। भ्रम को पाल कर रखना वैसे ही है, जैसे शरीर की बीमारी को छिपाकर रखना। लोकतंत्र में तीखी बहस और दृष्टिकोण की लड़ाई जितनी गहरी होती है, लोकचेतना उतनी ही मजबूत होती है। ऐसी बहसों में शब्दों, भावों, घटनाओं का चयनित उपयोग होना अस्वाभाविक नहीं है। उन बातों में सिमटना मूल उद्देश्य और परिणाम से अपने आपको दूर कर लेना है।

सहमति बनाम दृष्टिकोणों की तीखी लड़ाई पर सबसे अच्छा उदाहरण जर्मनी का है। यह विशेषकर उन लोगों के लिए, अधिक उपयोगी है जो ऐसी बहसों से बचना चाहते हैं। जर्मनी का संविधान 1849 में बना था। वहां जनतांत्रिक प्रश्नों पर बहस लंबी चली थी। उस दौर में जनतंत्र की प्रकृति को लेकर अलग-अलग दृष्टिकोण वाले दो प्रोफेसरों द्वारा जर्मनी की संसद में और संसद के बाहर बहस चलाई गई। जो बहस 1870 के दशक में शुरू हुई, वह 1880 में खत्म हुई। वे दोनों फ्रैंकफर्ट पार्लियामेंट के सदस्य थे। प्रो जीवी स्नेलमैन प्रसिद्ध दार्शनिक हीगेल के समर्थक थे। बहस के दूसरे पक्ष का नेतृत्व प्रो लीयो मेकलिन कर रहे थे। स्नेलमैन मानते थे कि बहस का तीखापन और निरंतर विभाजन का दृष्टिकोण राष्ट्र को कमजोर करता है और जनतंत्र का अवमूल्यन होता है। वे आम सहमति के पक्षधर थे। इसके विपरीत मेकलिन का मानना था कि कोई भी विषय परम सत्य (पूर्ण) नहीं होता है, न ही राजनीति में कोई पूर्ण विवेक होता है। संदर्भों और परिस्थितियों के अनुसार नई बातें, नए मत और नए प्रस्ताव उभरते है और यही राष्ट्र और जनतंत्र, दोनों की बुनियाद को मजबूत करता है।

जर्मनी और भारत, दोनों का संविधान लंबी बहस का जीता जागता उदाहरण है। अंतर सिर्फ बहस करने वालों की पक्षधरता का है। जर्मनी की संविधान सभा (फ्रैंकफर्ट पार्लियामेंट) में विश्वविद्यालय, महाविद्यालय शिक्षकों की संख्या डेढ़ सौ से अधिक थी। इसलिए इसे 'प्रोफेसरों का पार्लियामेंट' कहा जाता है। भारत का संविधान बनाने वालों में वकीलों की भूमिका अहम थी, इसीलिए राजनीतिक वैज्ञानिक आइवर जेनिंग्स ने इसे 'वकीलों का स्वर्ग' कहा था। दोनों में एक और अंतर है। जर्मनी में विवादित मुद्दों पर बहस अधूरी नहीं हुई और 'फ्रैंकफर्ट पार्लियामेंट' के साथ बड़ी संख्या में बुद्धिजीवी और आम लोग संसद के बाहर इस बहस में शामिल थे। उस वक्त का अखबार 'हिलसींग फोरस डगबाल्ड' मेकलिन के समर्थन में व्यापक बहस को आगे बढ़ाने का राष्ट्रीय मंच था।

भारत की एक विडंबना रही है। अनेक वैचारिक मुद्दों पर बहस अधूरी या न के बराबर हुई। कब, कैसे और क्यों फैसला हुआ, वह आधा अधूरा ही हमारे सामने है। यह जनतांत्रिक समाज के लिए अनपेक्षित है। उदाहरण के तौर पर संविधान की मूल प्रति में, जो भारत की सभ्यता और सांस्कृतिक यात्रा को चित्रित करने वाले बाईस चित्र थे। उनको संविधान की पुस्तक में लाने और उन्हें हटाने के निर्णय से आम लोग क्या, स्वयं संविधान सभा भी अपरिचित थी। भारत को 'कामनवेल्थ' (राष्ट्रमंडल) का सदस्य बनाना सामान्य निर्णय नहीं था। इसमें एक बड़ा वैचारिक पक्ष शामिल था। इस पर भी एचवी कामथ ने संविधान सभा में पूछा था कि 'हमारे बीच कब प्रस्ताव आया और कब बहस हुई!'

'वंदे मातरम्' को राष्ट्रगान नहीं बनाने पर बहस कुलीनवादी भी नहीं थी, औपचारिक तौर पर सांकेतिकता के साथ निर्णय हुआ। वंदे मातरम् स्वयं में भारत को परिभाषित करने वाला एक सांस्कृतिक विचारधारा का नेतृत्व करता है। इसने राष्ट्रवाद को जागृत किया और राष्ट्रीयता पर बहस का कारण भी बना। उसे बहस का मुद्दा नहीं बनाना बेमानी था। आज उसे आम लोगों के बीच ले जाया जा रहा है।

किसी भी राष्ट्र का सांस्कृतिक पक्ष उसकी बुनियाद का अहम मुद्दा होता है। उससे आंख-मिचौली कर राष्ट्र अपने आपको सशक्त नहीं बना सकता है। न ही बहस में उभरने वाले तथ्यों और तर्कों से भयभीत होना चाहिए। स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान सांस्कृतिक पक्ष की उपेक्षा हुई। उपनिवेशवाद सिर्फ राजनीतिक स्वतंत्रता पर ही हमला नहीं था, बल्कि देश की सांस्कृतिक चेतना पर भी आघात था। पर सांस्कृतिक प्रश्नों पर शायद ही प्रस्ताव पारित किया गया। इसके विपरीत अफ्रीकी नेशनल कांग्रेस साम्राज्यवाद विरोधी लड़ाई में भाषाई, सांस्कृतिक पक्षों को बराबर का महत्त्व देता रहा। आज अफ्रीका अपनी अस्मिता को लेकर भ्रमित नहीं है।

भारत में वैचारिक विविधता एवं विरोधाभास दोनों का होना लाजमी है। इसमें भयभीत होना नहीं चाहिए। हम अध्यात्म से लेकर सामाजिक जीवन में अतिशय बहुलता वाला देश हैं। बहुलता हमारा स्वभाव है, इसलिए भावना और विवेक को एक लगाम से नहीं हांका जा सकता है। उसका विविध और विरोधाभासी बने रहना तब तक विभाजन का कारण नहीं होता है, जब तक हम एक-दूसरे की वैधानिकता स्वीकार कर विचारों की साझेदारी करते हैं। समकालीन राजनीति इसी साझेदारी से बच रही है।

शोर के बीच

बाखबर

सुधीश पचौरी

> एक ओर 'इंडिगो' के एकाधिकार का 'मनमानापन' और दूसरी ओर मंत्रालय तथा डीजीसीए के बीच एक चुप्पी। हजारों उड़ानें रद्द। हवाईअड्डों पर लावारिस छोड़ दिए गए तमाम यात्रियों की तकलीफें। गनीमत कि चैनलों के रिपोर्ताजों और आलोचना ने अधिकारियों पर कुछ असर डाला।

एक सौ पचासवीं वर्षगांठ मनाता बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय का वंदे मातरम्! बंगाल का वंदे मातरम्... अखिल भारत का राष्ट्रगीत वंदे मातरम्! वर्षगांठ मनाने को लेकर संसद में प्रधानमंत्री का संबोधन... कि जिस गीत ने देश के आजादी के आंदोलन को ऊर्जा दी, प्रेरणा दी, उस वंदे मारतम् का गायन करना सदन का सौभाग्य। राष्ट्रगीत की सुदीर्घ यात्रा का बखान... इतिहास में किस-किस ने गाया वंदे मातरम्... इसने गाया, उसने गाया, देशभर ने गाया, दुनिया के देशों ने भी गाया, गांधी ने गाया, नेताजी सुभाष बोस ने गाया, नेहरू ने गाया, पटेल ने गाया, टैगोर ने गाया वंदे मातरम्..! स्वतंत्रता संग्राम के दौरान देश को एकजुट करने वाला वंदे मातरम्... अंग्रेजों को डराने वाला वंदे मातरम्... 'जननी जन्मभूमि स्वर्गादपि गरीयसी' से जुड़ता वंदे मातरम्!

किसने गाया, किसने खारिज किया वंदे मातरम्! जिन्ना ने खारिज किया! तुष्टीकरण के लिए संशोधित किया गया वंदे मातरम्। इस तरह दो 'बंदों' का हुआ वंदेमातरम्..! इस पर संसद में शोर और उस शोर में भी 'वंदे मातरम्-वंदे मातरम्'। यहां कोई पक्ष या प्रतिपक्ष नहीं। 2047 में विकसित भारत बनाने का अवसर। हजारों वर्षों का भारत बोलता है वंदे मातरम् में। वीर का अभिमान हैं ये शब्द! पहले रहा 'सप्त कोटि' वाले बंगाल का वंदे मारतम्, फिर हुआ तीस कोटि का वंदे मातरम्, अब है 140 कोटि का वंदे मातरम्..! कुछ कहे कि सभी गाते वंदे मातरम्। एक कहे कि राष्ट्रगीत सबका गीत। ग्यारह घंटे तक वंदे मातरम् होता रहा। सत्ता पक्ष और विपक्ष का 'वंदे मातरम्'। गृहमंत्री का वंदे मातरम् कि 'राष्ट्रगान' और 'राष्ट्रगीत' भारत माता की दो आखें हैं।

एक चर्चक बोले कि ये हिंदू गीत कैसे है... ये तो भारत का 'राष्ट्रगीत' है जो राष्ट्र को नमन करता, कराता है। इससे किसी को क्या एतराज हो सकता है? पहले भी कई मुसलिम नेताओं ने गाया है, तब हम क्यों न गाएं? ऐसी ही एक बहस में सुनाई पड़ी एक एंकर की मजेदार तुकबंदी कि: 'हम राष्ट्रभक्तों के लिए वंदे मातरम् 'एनर्जी' है, जबकि कुछ के लिए 'एलर्जी' है! बहुतों ने मांग की कि हम जिस वंदे मारतम् को गाते हैं, वह अधूरा है। उसे उसके पूरे मूल रूप में बहाल किया जाना चाहिए और संविधान में जरूरी संशोधन किए जाने चाहिए। एक चर्चक ने फरमाया कि बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय का 'आनंदमठ' एक 'हिंदू लेखन' है जो 'संन्यासी विद्रोह' पर आधारित है... जो अपने मूल में मुसलिम शासकों की ज्यादतियों के खिलाफ था। बाद में वह अंग्रेजों के शासन की ज्यादतियों के खिलाफ सारे देश को एकजुट करने वाला बन गया। कइयों ने कहा कि यह गीत तो राष्ट्रगान से बेहतर नजर आता है। कुछ वक्ताओं ने वंदे मातरम् को भी चुनावी राजनीति में लपेट दिया कि सत्तापक्ष वंदे मारतम् की डेढ़ सौवीं वर्षगांठ इसलिए मना रहा कि अगले वर्ष बंगाल का चुनाव है और बंगाली का वोट लेना है।

वंदे मातरम् पर अच्छे संबोधन प्रधानमंत्री, गृहमंत्री और रक्षामंत्री के रहे। इसी क्रम में एक बेहतरीन वक्तव्य भाजपा के रविशंकर का रहा और विपक्ष में बेहतरीन बोलने वालों में पहला नंबर प्रियंका गांधी का रहा, जबकि दूसरा गौरव गोगोई का रहा। इसके बाद की सबसे चर्चित कहानी 'एसआइआर' यानी मतदाता सूची के गहन पुनरीक्षण को लेकर 'सिरफुटौव्वल' की रही। विपक्ष के नेता ने एक बार फिर संसद में 'वोट चोरी' का मुद्दा उठाया और चुनाव आयोग को लेकर धमकी दोहराई कि हम आए तो ऐसा कानून लाएंगे जो तुम्हारा हिसाब करेगा... हम छोड़ने वाले नहीं। इसी बीच उत्तर प्रदेश में हो रही एसआइआर की इस खबर ने कइयों को झटका दिया कि उत्तर प्रदेश में दो करोड़ से अधिक इससे संबंधित फार्म लौट कर नहीं आए हैं। तब क्या उत्तर प्रदेश में दो करोड़ से अधिक मतदाता 'अनुपस्थित', फर्जी, मृत या प्रवासित हैं? वंदे मातरम् और एसआइआर को लेकर एक चैनल में सत्ता प्रवक्ता और एक विपक्षी प्रवक्ता के बीच ऐसी भिड़ंत हुई, जो देखते-देखते गाली-गलौज तक आ गई।

एक ओर 'इंडिगो' के एकाधिकार का 'मनमानापन'और दूसरी ओर मंत्रालय और डीजीसीए के बीच एक अजानी चुप्पी। हजारों उड़ानें रद्द। हवाईअड्डों पर लावारिस छोड़ दिए गए तमाम यात्रियों की तकलीफें। गनीमत कि चैनलों के रिपोर्ताजों और आलोचना ने अधिकारियों पर कुछ असर डाला। आखिर मंत्री और डीजीसीए सबको सक्रिय होना पड़ा। फिर भी 'एअरलाइन' वालों ने अपने किराए कई-कई गुना बढ़ा दिए... और कहीं कोई विरोध नहीं।

चलते-चलतेः अब तमिलनाडु में भी एक 'बाबरी' क्षण बनता दिखता है। मदुरई में दो पहाड़ी। एक पहाड़ी पर दीप जले... दूसरी पर मजार। दूसरी पहाड़ी पर 'दीपम उत्सव' के लिए मजार वालों को कोई 'आपत्ति नहीं', लेकिन सरकार को एतराज। फिर अदालत और उसका फैसला कि दीप जले तो जले, लेकिन सत्ता को फिर एतराज। फिर अदालत, सत्ता, अदालत और 'दीपम' के पक्ष में फैसला देने वाले जज के खिलाफ एक सौ सात सांसदों का महाभियोग का प्रस्ताव!

कैबिनेट मंत्री ने बराही तालाब के पुनरुद्धार की घोषणा की

तालाब के सौंदर्यीकरण व पुनरुद्धार पर खर्च होंगे 65 करोड़, डीपीआर तैयार

एक से डेढ़ वर्ष में यह तालाब पुन: पानी से लबालब हो जाएगा

भास्कर न्यूज | फरीदाबाद

कैबिनेट मंत्री विपुल गोयल ने शनिवार को ओल्ड फरीदाबाद के ऐतिहासिक बराही तालाब के पुनरुद्धार की घोषणा की। उन्होंने कहा इस तालाब का धार्मिक, सांस्कृतिक व ऐतिहासिक महत्व है। यहां 36 बिरादरी के लोग बराही माता की पूजा करते हैं। छठ पर्व का भी आयोजन होता है। इसके सौंदर्यीकरण व पुनरुद्धार पर 65 करोड़ रुपए खर्च होंगे। इसकी डीपीआर तैयार हो चुकी है। एक से डेढ़ वर्ष में यह तालाब पानी से लबालब हो जाएगा। इसके बाद लोग यहां नौकायन का भी आनंद ले सकेंगे। इस दौरान कैबिनेट मंत्री गोयल ने बाबा फरीद पार्क सहित ओल्ड फरीदाबाद के अन्य पार्कों के सौंदर्यीकरण का भी आश्वासन दिया।

महर्षि वाल्मीकि सामुदायिक भवन का कार्य शुरू

कैबिनेट मंत्री ने शनिवार को वार्ड नंबर 31 के बाढ़ मोहल्ला में महर्षि वाल्मीकि सामुदायिक भवन के निर्माण एवं बस्सा पाड़ा में सड़क निर्माण कार्य का शुभारंभ किया। उन्होंने कहा सामुदायिक भवन पर 52.5 लाख रुपए खर्च होंगे। यदि इसके लिए अतिरिक्त राशि की आवश्यकता पड़ी तो सरकार उसे भी उपलब्ध कराएगी। जिससे क्षेत्रवासियों को बेहतर सामुदायिक भवन मिल सके। इसके साथ ही ओल्ड फरीदाबाद की विभिन्न गलियों के पक्कीकरण कार्य की भी शुरुआत की। इस कार्य पर 18.5 लाख और 22.5 लाख रुपए खर्च होंगे। इन दो सड़कों के बनने से लोगों को आवागमन में सुविधा होगी। कैबिनेट मंत्री ने कहाकि ओल्ड फरीदाबाद के लिए आने वाला एक वर्ष विकास के लिहाज से बेहद महत्वपूर्ण है। चाहे अनाज मंडी क्षेत्र में नए अस्पताल की योजना हो, नए स्कूलों की स्थापना हो, पानी-बिजली की बेहतर व्यवस्था हो या जहां कच्ची सड़कें हैं, उन्हें पक्का करने का कार्य। इन सभी कार्यों पर सरकार तेजी से काम करेगी।

फरीदाबाद. विकास कार्यों की जानकारी देते कैबिनेट मंत्री विपुल गोयल।

एक-दो माह में शुरू होगी नई सब्जी मंडी की पार्किंग

गोयल ने कहा मौजूदा पार्कों को और अधिक सुंदर व उपयोगी बनाया जाएगा। नई सब्जी मंडी में बनाई गई पार्किंग को एक-दो महीनों में शुरू कर दिया जाएगा। इससे यातायात व्यवस्था सुचारू हो सकेगी। साथ ही बाजार क्षेत्र में स्नानघर एवं आधुनिक बाथरूम के निर्माण का शिलान्यास शीघ्र किया जाएगा। जिससे दुकानदारों व आम लोगों को सुविधा मिल सके। इस अवसर पर पार्षद शैफाली सिंगला, पार्षद प्रियंका बिष्ट, पार्षद मुकेश अग्रवाल, पार्षद कुलदीप साहनी, पार्षद सचिन शर्मा आदि मौजूद थे।

दोस्त के साथ घूमने निकले 12वीं के छात्र की संदिग्ध मौत

फरीदाबाद | सीकरी में शुक्रवार सुबह दोस्तों के साथ घर से घूमने के लिए निकले बारहवीं कक्षा के एक छात्र की संदिग्ध मौत हो गई। हिमांशु के शरीर पर चोट के कोई निशान नहीं हैं। सेक्टर-58 थाने की पुलिस मामले की जांच कर रही है। पुलिस के अनुसार सीकरी निवासी हरीश ने बताया कि उनका बेटा हिमांशु शुक्रवार सुबह 10 बजे दोस्त के साथ घूमने निकला था। करीब एक घंटे बाद उसके फोन से दोस्त अंशुल ने कॉल कर उसके बेहोश होने की जानकारी दी। उसे बीके अस्पताल ले जाया गया। जहां उसे मृत घोषित कर दिया गया। उन्होंने दोस्त पर हिमांशु की हत्या करने का शक जताया है। सेक्टर-58 थाना प्रभारी विनोद कुमार के अनुसार हिमांशु के शरीर पर चोट के कोई निशान नहीं हैं। इसलिए पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद ही साफ हो पाएगा कि मौत कैसे हुई। पिता की शिकायत ले ली गई है।

स्मार्ट सिटी परियोजना में शामिल फतेहपुर चंदीला गांव में जल्द विकास कार्य शुरू होंगे

प्रधान सलाहकार ढेसी ने अधिकारियों को एक्शन प्लान तैयार करने के निर्देश दिए

भास्कर न्यूज | फरीदाबाद

स्मार्ट सिटी परियोजना में शामिल फतेहपुर चंदीला गांव में जल्द विकास कार्य शुरू होंगे। सड़क बनाने के साथ सीवर लाइन भी बिछाई जाएंगी। शहरी विकास प्रधान सलाहकार डीएस ढेसी ने शुक्रवार को हुई अंतर एजेंसी समन्वय बैठक में गांव में विकास कार्य के लिए अधिकारियों को एक्शन प्लान तैयार करने के निर्देश दिए। इसके बाद संबंधित विभाग योजना बनाने में जुट गए हैं।

योजना को तैयार कर अमल में लाने के लिए डीसी-एमसीएफ आयुक्त की संयुक्त समिति भी गठित की गई है। स्मार्ट सिटी लिमिटेड की ओर से फतेहपुर चंदीला को करीब 11 साल पहले स्मार्ट सिटी परियोजना में शामिल किया गया था। लेकिन यहां कोई काम नहीं हुआ। गांव में सीवर, पानी और सड़क सहित अनेक समस्याएं हैं। कई गलियों में सीवर ओवरफ्लो होकर पानी बाहर बह रहा है। इससे ग्रामीण परेशान हैं। बैठक में प्रधान सलाहकार ने कहा कि फतेहपुर चंदीला क्षेत्र में सड़क और सीवरेज की स्थिति लंबे समय से लोगों के लिए परेशानी का कारण बनी हुई है। बरसात में जलभराव, टूटी सड़कों और सीवर ओवरफ्लो की शिकायतें लगातार सामने आ रही हैं। ऐसे में अब देरी बर्दाश्त नहीं की जाएगी।

बीके-हार्डवेयर रोड पर स्लिप रोड बनाने की योजना 3 माह से अटकी

भास्कर न्यूज | फरीदाबाद

एनआईटी क्षेत्र में बीके-हार्डवेयर रोड पर स्लिप रोड बनाने की योजना तीन माह से अटकी है। इसके न बनने से जाम की समस्या रहती है। स्थानीय लोगों का कहना है कि कई वर्षों से ट्रैफिक जाम यहां एक बड़ी समस्या है। क्षेत्रवासियों ने कई बार नगर निगम से यहां स्लिप रोड बनाने की मांग की, लेकिन योजना कागजों से बाहर नहीं निकल पाई। उनका कहना है कि जहां-जहां कट हैं वहां स्लिप रोड बनने से ट्रैफिक का दबाव कम होगा और जाम की स्थिति सुधरेगी। नगर निगम की ओर से बीके-हार्डवेयर रोड के दो प्रमुख स्थान नेहरू ग्राउंड कट और हार्डवेयर चौक से एनआईटी की तरफ जाने वाले मार्ग पर स्लिप रोड बनाने के प्रस्ताव को मंजूरी दी गई थी। 9.63 लाख का बजट तय कर टेंडर प्रक्रिया शुरू करने की तैयारी थी। लेकिन मंजूरी व बजट जारी होने की प्रक्रिया में देरी से काम आगे नहीं बढ़ पाया। निगम के कार्यकारी अभियंता नितिन कादियान का कहना है कि शहर में जहां-जहां जाम लगता है, वहां स्लिप रोड बनाने की योजना बनाई है। हार्डवेयर-बीके रोड पर स्लिप रोड का काम जल्द शुरू होगा।

लुटेरों के चार साथी और गिरफ्तार, 20 लाख रुपए व गाड़ी बरामद

भास्कर न्यूज | पलवल

सीआईए ने केएमपी एक्सप्रेस-वे पर 58 लाख की लूट के मामले में पकड़े गए तीन लुटेरों की निशानदेही पर उनके चार साथियों को भी गिरफ्तार कर लिया गया। पुलिस ने इनसे लूट के 20 लाख रुपए बरामद किए हैं। नौ दिसंबर की रात करीब 11 बजे केएमपी एक्सप्रेस-वे पर यादुपुर फ्लाईओवर के पास बदमाशों ने भैंसों की बिक्री कर आ रहे ट्रक चालक को रोककर उससे 58 लाख रुपए लूट लिए थे। इसके बाद हिसार जिले के खांडाखेड़ी निवासी ट्रक चालक रणधीर की शिकायत पर सदर थाने में केस दर्ज कर लिया गया। इसके बाद सीआईए प्रभारी रविन्द्र कुमार की टीम ने 11 दिसंबर को मास्टरमाइंड सहित तीन आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया। शिनाख्त परेड व अदालत प्रक्रिया के चलते आरोपियों के नाम व पहचान उजागर नहीं किए गए हैं। तीनों को चार दिन के रिमांड पर लिया गया है। इनकी निशानदेही पर वारदात में शामिल चार और आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया गया। लुटेरों ने पूछताछ में बताया कि वारदात का मास्टरमाइंड आरोपी, शिकायतकर्ता व ट्रांसपोर्टर तीनों एक ही गांव के हैं।

हवाई फायरिंग करने वाले चार आरोपी गिरफ्तार

फरीदाबाद | पुलिस ने 30 नवंबर को पर्वतीया कॉलोनी में हवाई फायरिंग करने वाले चार अपराधियों को गिरफ्तार कर लिया। इनसे पूछताछ में 9 वाहन चोरी के मामलों का खुलासा हुआ है। इनसे एक कट्टा, चोरी की 7 मोटरसाइकिल व 2 स्कूटी बरामद हुई हैं। पुलिस प्रवक्ता के अनुसार पर्वतीया कॉलोनी निवासी व्यक्ति ने पुलिस को दी शिकायत में बताया था कि 30 नवंबर की रात वह बाजार से घर की तरफ आ रहे थे। जब वह घर के पास पहुंचे तो वहां खड़े कुछ लड़कों ने दो हवाई फायर किए। उन्होंने सारन थाने में यह मामला दर्ज कराया। इसके बाद पुलिस ने नौ दिसंबर को आशिफ (25) निवासी पर्वतीया कॉलोनी को गिरफ्तार का तीन दिन के रिमांड पर लिया। इसके बाद अजय (24), विशाल (23) व करण (20) निवासी पर्वतीया कालोनी को 12 दिसंबर को गिरफ्तार किया। पूछताछ में सामने आया कि 30 नवंबर की रात आशिफ ने अपने साथी अजय, विशाल व करन के साथ फायरिंग की थी। पूछताछ में सामने आया कि सभी आरोपी वाहन चोरी करते हैं। मुजेसर थाने की 2, शहर बल्लभगढ़, सेक्टर 8 सेंट्रल, सारन, पल्ला व आदर्श नगर थाने की एक-एक वाहन चोरी की वारदात का खुलासा हुआ है।

जटिल व दुर्लभ सर्जरी: 35 साल बाद बिस्तर से उठ चला मरीज

भास्कर न्यूज | फरीदाबाद

इराक का 55 वर्षीय एक मरीज सड़क दुर्घटना के बाद करीब 35 वर्षों से बिस्तर पर था। फरीदाबाद आकर उसे एक नई जिंदगी मिली। आर्थोपेडिक सर्जन डॉ. राकेश कुमार ने बेहद जटिल और दुर्लभ सर्जरी कर इस अनोखे केस की जानकारी उन्होंने मेडिकल सेमिनार में दी। उन्होंने बताया यह मामला इराक के 55 वर्षीय मरीज से जुड़ा है, जिसे करीब 35 साल पहले हुए सड़क हादसे में जांघ की मांसपेशियां लगभग 15 सेंटीमीटर पूरी तरह गायब हो गई थीं। इससे मरीज का घुटना चल नहीं रहा था। वह असहनीय दर्द के साथ घुटना के न चलने से परेशान था। मरीज 35 साल से बिस्तर पर था।

इस दौरान घुटने में गंभीर खराबी आ चुकी थी। जोड़ों के कार्टिलेज पूरी तरह घिस जाने से स्थिति गंभीर हो गई। इससे घुटना रिप्लेसमेंट की आवश्यकता थी। लेकिन जांघ की मांसपेशियां गायब होने से घुटने का ऑपरेशन संभव नहीं हो पा रहा था।

फरीदाबाद. मरीज के साथ आर्थोपेडिक सर्जन डॉ. राकेश कुमार।

राष्ट्रीय लोक अदालत में 69987 मामलों का निपटारा आपसी सहमति से हुआ

फरीदाबाद | सेक्टर-12 कोर्ट परिसर में शनिवार को राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजन किया गया। इसमें 69987 केसों का निपटारा आपसी सहमति से किया गया। लोक अदालत के बनाई गई 17 बेंच में 89377 केस रखे गए। जिनमें से 69987 का निपटारा दिया गया। मोटर व्हीकल दुर्घटना 58, छोटे-मोटे आपराधिक मामले 3340, चेक बाउंस के 357, बिजली से संबंधित 687, समरी चालान के 61892, वैवाहिक संबंधी 121, दीवानी के 223, बैंक रिकवरी के 1359, रेवेन्यू के 1931 और लेबर डिस्प्यूट के 19 मामलों का निपटारा आपसी सहमति से किया गया। सीजेएम रितु यादव ने कहा कि लोक अदालत में लोगों का ट्रैफिक केसों को लेकर काफी रुझान रहा।

वही समाज आगे बढ़ता है जिसकी जड़ें अपनी संस्कृति से जुड़ी होती हैं: हुड्डा

भास्कर न्यूज | फरीदाबाद

गुर्जर आर्ट एंड कल्चर की ओर से सूरजकुंड में चल रहे तीन दिवसीय गुर्जर महोत्सव में शनिवार को रोहतक के कांग्रेस सांसद दीपेंद्र सिंह हुड्डा पहुंचे। उन्होंने कहाकि यह महोत्सव गुर्जर समाज के ही लिए नहीं 36 बिरादरी के लिए एक मिसाल है। इस महोत्सव में देश-विदेश से लाखों लोग आए हैं। उन्होंने कहा वही समाज आगे बढ़ता है जिसकी जड़ें अपनी संस्कृति से जुड़ी होती हैं। यह संस्कृति इस महोत्सव में देखने को मिल रहा है। गुर्जर समाज का स्वाभिमान का इतिहास रहा है। जिसने किसी के भी सामने सिर नहीं झुकाया।

हुड्डा ने कहाकि कांग्रेस ने हमेशा गुर्जर समाज को आगे बढ़ाने का काम किया है। पिछले दिनों गांव अनंगपुर में हुई तोड़फोड़ को लेकर हुई महापंचायत में हम अपनी पूरी टीम के साथ गुर्जर समाज के लिए कंधे से कंधा मिलाकर खड़े रहे और आगे भी हम गुर्जर समाज के साथ हमेशा खड़े रहेंगे। इस मौके पर वरिष्ठ कांग्रेस नेता विजय प्रताप ने कहा यह महोत्सव एनसीआर सहित पूरे देश में मशहूर हो गया है। मेले में पहुंचने पर हुड्डा का विजय प्रताप के संयोजन में लोगों ने जोरदार स्वागत किया। इस मौके पर पूर्व सांसद अवतार सिंह भड़ाना, पूर्व विधायक नीरज शर्मा, रोहित नागर, पराग शर्मा, जगन डागर, तरुण तेवतिया, नितिन सिंगला, सुमित गौड़, वेदपाल दायमा, अनिल नेता, गिरीश भारद्वाज, राजाराम ठाकुर, रिंकू चंदीला आदि मौजूद थे।

फरीदाबाद. गुर्जर महोत्सव में पहुंचने पर सांसद दीपेंद्र सिंह हुड्डा का स्वागत करते लोग।

प्रदूषण • एक्यूआई का स्तर फिर हुआ खतरनाक, मानेसर में 351 दर्ज

कई सेक्टरों में पॉल्यूशन मापक तक नहीं, दिनभर छाई रही धूल की चादर

भास्कर न्यूज | गुरुग्राम

गुरुग्राम समेत एनसीआर में एक्यूआई का स्तर शनिवार को एक बार फिर बहुत खराब स्थिति में पहुंच गया। न्यू व ओल्ड गुरुग्राम में औसत एक्यूआई 322 दर्ज किया गया, जबकि औद्योगिक क्षेत्र मानेसर में एक्यूआई 351 दर्ज किया। वहीं वेस्ट गुरुग्राम के 30 से अधिक सेक्टरों व कालोनियों में पॉल्यूशन का स्थिति काफी चिंताजनक है, लेकिन इन सेक्टरों में एक भी पॉल्यूशन मापक नहीं है। इसके अलावा, राजीव चौक से 25 किलोमीटर दूर सोहना तक भी एक भी पॉल्यूशन मापक नहीं है, ऐसे में पॉल्यूशन की मॉनिटरिंग नहीं हो पा रही है। जबकि इन क्षेत्रों में निर्माण कार्यों के कारण दिनभर पॉल्यूशन की सफेद चादर छाई रही, जिसकी वजह आरएमसी प्लांट व जगह-जगह की हो रही खुदाई है। धनकोट व राजेंद्रा पार्क से लगते द्वारका एक्सप्रेस-वे से लगते क्षेत्र में लोगों के लिए दम घुटने जैसी स्थिति बन गई है। शनिवार की सुबह के समय अच्छी धूप खिली लेकिन दोपहर बाद बादल छाए रहे। मौसम विभाग के अनुसार शनिवार को न्यूनतम तापमान 8.7 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया, जबकि अधिकतम तापमान 25.2 डिग्री सेल्सियस रहा।

हवा की रफ्तार कम होने से बढ़ रहा है प्रदूषण

शनिवार सुबह छाया सीजन का पहला कोहरा

गुरुग्राम में ठंड के साथ शनिवार को कुछ क्षेत्रों में सीजन का पहला कोहरा छाया। हालांकि कोहरा हल्का रहने से विजिबिलिटी 300 मीटर तक रही। वहीं मौसम विभाग ने रविवार को आंशिक रूप से बादल छाए रहने की संभावना जताई है। बादल छाए रहने से दो डिग्री सेल्सियस तक तापमान बढ़ने का भी पूर्व अनुमान है।

तीन दिन से हवा की रफ्तार कम हो गई, जिससे पॉल्यूशन का स्तर तेजी से बढ़ा है। शुक्रवार को गुरुग्राम का एक्यूआई 286 दर्ज किया गया था, जो शनिवार को 26 प्वाइंट बढ़ गया। वहीं इससे पहले गत गुरुवार को गुरुग्राम का एक्यूआई 268 दर्ज किया गया था। इससे पहले 10 दिसंबर तक हवा की रफ्तार तेज रहने से एक्यूआई का स्तर 200 से कम हो गया था। यही वजह है कि ग्रेप के चरण-3 की पाबंदियों को हटा दिया गया था। लेकिन ग्रेप-3 की पाबंदियां हटते ही निर्माण कार्य, जनरेटर व गुरुग्राम में चलने वाले आरएमसी प्लांट आदि चलने लगे, जिससे पॉल्यूशन मे तेजी से इजाफा हो गया।

गुरुग्राम में बेशक एक्यूआई का स्तर 322 दर्ज किया गया, लेकिन एनसीआर क्षेत्र में सबसे अधिक पॉल्यूशन नोएडा में एक्यूआई 442 दर्ज किया गया। जबकि दिल्ली व गाजियाबाद में एक्यूआई 431 रहा। वहीं सोमवार से हवा की रफ्तार बढ़ने से पॉल्यूशन से राहत मिलने की उम्मीद है।

फेंक क्रेडिट मैसेज भेजकर महिला से 98 हजार ठगे

गुरुग्राम| साइबर क्राइम मानेसर थाना एरिया में जालसाज ने फेंक क्रेडिट मैसेज भेजकर एक महिला से 98 हजार रुपए की ठगी कर ली। पीड़िता की शिकायत मिलने पर पुलिस ने केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी।पुलिस को दी शिकायत में गुडग़ांव के सेक्टर-82 स्थित एक सोसाइटी में रहने वाली दीपिका ने कहा कि उसके पास चार नवंबर को एक कॉल आई। जिसमें कॉलर ने कहा कि उसे दीपिका के पति अंकित को 12 हजार रुपए की पेमेंट करनी है। जिसे वह दीपिका के अकाउंट में कर रहा है।

लोक अदालत में 90,886 मामलों का हुआ निपटारा, 24.93 करोड़ रुपए हुआ सेटलमेंट

भास्कर न्यूज | गुरुग्राम

जिला विधिक सेवाएं प्राधिकरण, गुरुग्राम द्वारा शनिवार को जिला न्यायालय परिसर में राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजन किया गया। यह आयोजन माननीय न्यायाधीश, पंजाब एवं हरियाणा उच्च न्यायालय तथा कार्यकारी अध्यक्ष, हरियाणा राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण के मार्गदर्शन एवं जिला एवं सत्र न्यायाधीश-अध्यक्ष, जिला विधिक सेवाएं प्राधिकरण, गुरुग्राम वाणी गोपाल शर्मा के निर्देशानुसार संपन्न हुआ। मुख्य न्यायिक दंडाधिकारी एवं सचिव, जिला विधिक सेवाएं प्राधिकरण, गुरुग्राम राकेश कादियान ने बताया कि इस राष्ट्रीय लोक अदालत में जिला न्यायालय, सोहना एवं पटौदी की सभी पीठों को मिलाकर विभिन्न श्रेणियों के लगभग 97,678 मामलों को सूचीबद्ध किया गया, जिनमें से 90,886 मामलों का सफलतापूर्वक निपटारा किया गया। इन मामलों के निपटारे से कुल 24 करोड़ 93 हजार 8 सौ 47 रुपये का सेटलमेंट हुआ। इस दौरान सभी पीठों में पैनल अधिवक्ताओं की नियुक्ति की गई थी, जिन्होंने उपस्थित रहकर पक्षकारों के बीच समझौता कराने में न्यायालयों एवं जिला विधिक सेवाएं प्राधिकरण को सहयोग प्रदान किया। पीठों की संख्या के अनुरूप पैनल अधिवक्ताओं की प्रतिनियुक्ति की गई थी।

फर्जी आईडी पर 350 सिमकार्ड एक्टिव करने वाला आरोपी असम से गिरफ्तार

नूंह | साइबर अपराधियों को फर्जी सिम कार्ड उपलब्ध कराने वाले एक बड़े रैकेट का पर्दाफाश हुआ है। साइबर क्राइम पुलिस और सीआईए स्टाफ नूंह की संयुक्त टीम ने असम निवासी मुख्य आरोपी रियाजुल हुसैन को गिरफ्तार किया है। रियाजुल हुसैन लगातार साइबर अपराधियों को फर्जी सिम कार्ड सप्लाई करने में सक्रिय था और उसने अब तक ढाई सौ से अधिक फर्जी सिम कार्ड नूंह क्षेत्र के साइबर ठगों को उपलब्ध कराए थे।

एएसपी आयुष यादव के अनुसार यह गिरफ्तारी अगस्त महीने में दर्ज एक मामले में हुई है। उनके अनुसार पुलिस ने जब गुप्त सूचना के आधार पर पुलिस ने नूंह-सोहना रोड पर रेवासन के पास असम निवासी एक युवक को 350 फर्जी सिम कार्ड के साथ गिरफ्तार किया था। जिसने पूछताछ में खुलासा किया कि ये सिम वह स्थानीय युवक को देने जा रहा था। जांच आगे बढ़ने पर पता चला कि ये सभी फर्जी सिम असम के गोलपारा जिले में रियाजुल हुसैन की दुकान 'रोज लाइट हाउस' से जारी की गई थीं। रियाजुल ने फर्जी दस्तावेजों का इस्तेमाल कर ये सिम एक्टिव कीं और साइबर अपराधियों तक पहुंचाईं। पुलिस जांच में वोडाफोन-आइडिया और जियो कंपनियों से प्राप्त रिकॉर्ड से पुष्टि हुई कि अधिकांश सिम रियाजुल हुसैन के पीओएस कोड से जारी हुई थीं।

चरस सप्लाई करने का एक आरोपी अरेस्ट

गुरुग्राम | सेक्टर-39 क्राइम ब्रांच ने सेक्टर-38 के निकट से एक युवक को अवैध चरस सप्लाई करते काबू किया है। पुलिस ने आरोपी से 415 ग्राम अवैध चरस बरामद कर सदर थाना में संबंधित धाराओं के तहत केस दर्ज कर लिया।

दरअसल, सेक्टर-39 क्राइम ब्रांच को सूचना मिली कि एक युवक सेक्टर-38 में अवैध रुप से चरस सप्लाई करने के लिए आया है। जिस पर पुलिस ने मौके पर अवैध चरस सहित युवक को धर दबोचा।

दूसरे की जमीन बेचकर ठगी करने के गिरोह का एक आरोपी गिरफ्तार

गुरुग्राम | सेक्टर-17 क्राइम ब्रांच ने दूसरों की जमीन दिखाकर फर्जी एग्रीमेंट के माध्यम से ठगी करने वाले गिरोह के एक सदस्य को नई दिल्ली रेलवे स्टेशन से गिरफ्तार किया है। पुलिस ने तीन दिन के रिमांड के बाद आरोपी को अदालत में पेश किया, जहां से उसे न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया गया। आरोपी की पहचान यूपी के गाजियाबाद निवासी विजय शर्मा (40) के रूप में हुई। पुलिस ने आरोपी को अदालत से तीन दिन के रिमांड पर लिया। जिसमें पूछताछ में आरोपी ने गुरुग्राम व उत्तर-प्रदेश में जमीन से संबंधित ठगी की दो अन्य वारदातों को अंजाम देने का भी खुलासा किया। आरोपी ने बताया कि वह अश्वनी चौधरी व कविंद्र सिंह के गिरोह का सदस्य है। जो फर्जी जमीन खरीदने वाली पार्टी बनकर लोगों को ऊंचे दामों का लालच देते हैं और फर्जी एग्रीमेंट करके उनके साथ ठगी करते हैं।

जूडो जूनियर स्टेट चैंपियनशिप चयन के लिए ट्रायल आज

गुरुग्राम| जूडो जूनियर स्टेट चैंपियनशिप को लेकर रविवार को चयन के लिए ट्रायल आयोजित किए जाएंगे। इन ट्रायल्स के माध्यम से गुरुग्राम जिले के खिलाड़ियों का चयन किया जाएगा। ट्रायल दौलताबाद स्थित गुरुग्राम जूडो अकैडमी में होंगे। जूडो कोच महेंद्र सिंह ने बताया कि ट्रायल के दौरान सुबह 9 बजे से 10 बजे तक खिलाड़ियों का भार वर्ग लिया जाएगा, जबकि सुबह 10:30 बजे से मुकाबलों के आधार पर ट्रायल शुरू होंगे। ट्रायल में वर्ष 2006 से 2011 के बीच जन्मे खिलाड़ी भाग ले सकेंगे। खिलाड़ियों को अपने निर्धारित भार वर्ग में केवल एक किलोग्राम की छूट दी जाएगी। ट्रायल में शामिल होने वाले खिलाड़ियों को अपने सभी जरूरी दस्तावेज साथ लाने होंगे, जिनमें आधार कार्ड और जन्मतिथि से संबंधित प्रमाण पत्र अनिवार्य हैं। लड़कों के ट्रायल 56, 60, 66, 73, 81, 90, 100 और +100 किलोग्राम भार वर्ग में होंगे। वहीं लड़कियों के लिए 44, 48, 52, 57, 63, 70, 78 और +78 किलोग्राम भार वर्ग निर्धारित किए गए हैं। ट्रायल में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले सभी खिलाड़ियों को राज्य स्तरीय जूडो प्रतियोगिता में भाग लेने का अवसर मिलेगा, जो 21 दिसंबर को हरियाणा के कैथल जिले में आयोजित की जाएगी। कैथल में होने वाली प्रतियोगिता में विजेता रहने वाले खिलाड़ी जूनियर नेशनल जूडो चैंपियनशिप के लिए चयनित होंगे, जो 9 से 11 जनवरी तक कोलकाता में आयोजित की जाएगी।

कर्मी के नाम पर लिया लोन, ईएमआई कटने पर हुआ खुलासा

गुरुग्राम | साइबर क्राइम मानेसर थाना एरिया में जालसाज ने कंपनी कर्मी के नाम पर लोन लेकर 4,74,861 रुपए की चपत लगा दी। पीडित को इसका पता तब चला जब लोन की ईएमआई के रूप में उसके अकाउंट से 12,585 रुपए कट गए। शिकायत मिलने पर पुलिस ने केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी। पुलिस को दी शिकायत में महेंद्रगढ़ के गांव पाली निवासी दिनेश कुमार ने कहा कि वह गुडग़ांव के मानेसर एरिया में रहता है। वह मौजूदा समय नीमराना स्थित एक कंपनी में काम करता है। बीती छह दिसंबर को उसके एक्सिस बैंक के अकाउंट से 12,585 रुपए कट गए। जिस पर वह सुशांतलोक एरिया स्थित ब्रांच पहुंचा। जहां उसे पता चला कि किसी ने उसके अकाउंट से मोबाइल नंबर बदलवाकर 9 नवंबर को 4,74,861 रुपए का लोन ले लिया। उसके अकाउंट से जो राशि काटी गई थी वह लोन की ईएमआई थी।

एटीएम बूथ काटकर चोरी वाले गिरोह के 3 सदस्य दबोचे

नूंह | कई राज्यों में एटीएम तोड़ लाखों रुपये चोरी के आरोप में पुलिस ने एक गिरोह के तीन सदस्यों को गिरफ्तार किया है। पुलिस इनके और साथियों के बारे में और जानकारी जुटा रही है। एटीएम तोड़कर चुराए गई रकम करोड़ों में पहुंचने की संभावना जताई जा रही है। गिरोह का सरगना अभी पुलिस की पकड़ से बाहर है।

इंस्पेक्टर प्रदीप कुमार के नेतृत्व वाली सीआईए नूंह की टीम ने एक सूचना के आधार पर अरशद उर्फ कंजा निवासी शिकारपुर, धर्मेंद्र कुमार निवासी जिला प्रतापगढ़ (यूपी) तथा अरशद उर्फ मुल्ला निवासी उदाका, राजस्थान को गिरफ्तार कर लिया। इनकी गिरफ्तारी फिरोजपुर झिरका के बींवा रोड पर जून महीने में तोड़ी गई एक एटीएम मशीन तोड़कर 24 लाख 29 हजार रुपये चोरी के मामले में की गई लेकिन जब आरोपियों ने अंजाम दी वारदातों के बारे में बताना शुरू किया तो पुलिसकर्मी हैरान रह गए।

शुरूआती पूछताछ में इन्होंने बताया कि गिरोह का सरगना पिनगवां के गांव मुढैता का रहने वाला शाहिद है। वह खुद ही एटीएम मशीन काटता है। शेष सभी आरोपियों के काम भी बांटे हुए थे। अरशद उर्फ मुल्ला कार चालक है। वह मुंढैता निवासी अपने हमनाम और एक अन्य के साथ मिलकर रेकी करने का काम भी करता था।

दस करोड़ की अवैध विदेशी शराब मामले में शॉप मालिक गिरफ्तार

भास्कर न्यूज | गुरुग्राम

यहां एक वाइन शॉप से पकड़ी गई अवैध विदेशी शराब के मामले में पुलिस ने शॉप मालिक अंकुश गोयल को गिरफ्तार किया है। पुलिस इस केस में एक आरोपी वाइन शॉप मैनेजर को पहले ही गिरफ्तार कर चुकी है। आरोप है कि अंकुश व मैनेजर की देखरेख में ही वाइन शॉप में अवैध विदेशी शराब का जखीरा संग्रहित किया गया था। वहीं 10 करोड़ से अधिक की अवैध विदेशी शराब के मामले में आबकारी विभाग के एक अधिकारी को भी सस्पेंड किया जा चुका है। दरअसल, आबकारी विभाग को सूचना मिली थी कि सिग्नेचर टॉवर स्थित एल-2 व एल-14ए जेडजीआरई-14 मैसर्ज सुरेंद्र की वाइन शॉप में बिना होलोग्राम एवं ट्रैक-ट्रेस स्ट्रिप्स वाली करोड़ों की विदेशी शराब की 3,921 पेटियां व 176 बोतलें संग्रहित की गई हैं। जिस पर विभाग की टीम ने मौके पर रेड मारी और दो कमरों से करोड़ों की शराब बरामद की। सेक्टर-40 थाना पुलिस में केस दर्ज कर लिया गया और इस मामले में जांच के लिए डीसीपी क्राइम की अगुवाई में क्राइम ब्रांच व सेक्टर-40 थाना पुलिस की स्पेशल इन्वेस्टिगेशन टीम गठित की गई। स्पेशल इन्वेस्टिगेशन टीम ने वीरवार को आरोपी मैनेजर को गांव सिलोखरा जिला गुरुग्राम से काबू कर लिया। जिसकी पहचान फतेहाबाद निवासी अजय (26) के रूप में हुई थी। वहीं इस केस में बुधवार को आबकारी विभाग के ही एक अधिकारी को सस्पेंड भी किया जा चुका है। इसके बाद टीम ने वाईन-शॉप के एक मालिक को राजस्थान के झुंझुनू से काबू कर लिया। आरोपी की पहचान नारनौल के अंकुश गोयल (40) के रूप में हुई।

अवैध शराब ठेकों को सील करने की मांग

गुरुग्राम | जिला एवं सत्र न्यायालय, गुरुग्राम में प्रैक्टिस कर रहे अधिवक्ता कुलभूषण भारद्वाज ने गुरुग्राम में बड़ी संख्या में अवैध रूप से संचालित शराब ठेकों एवं उनसे जुड़े शराब अहातों को तत्काल सील करने की मांग को लेकर जिला आयुक्त, पुलिस आयुक्त, मुख्य अग्निशमन अधिकारी सहित अन्य वरिष्ठ अधिकारियों को शिकायत दी है। इसके साथ ही उन्होंने शिकायत की प्रतिलिपि मुख्य सचिव एवं मुख्यमंत्री हरियाणा को भेजी है। उन्होंने अवैध शराब अहातों को तत्काल सील करने के साथ सभी लाइसेंस रद्द करने और दोषी अधिकारियों पर कड़ी कार्रवाई की मांग की है।

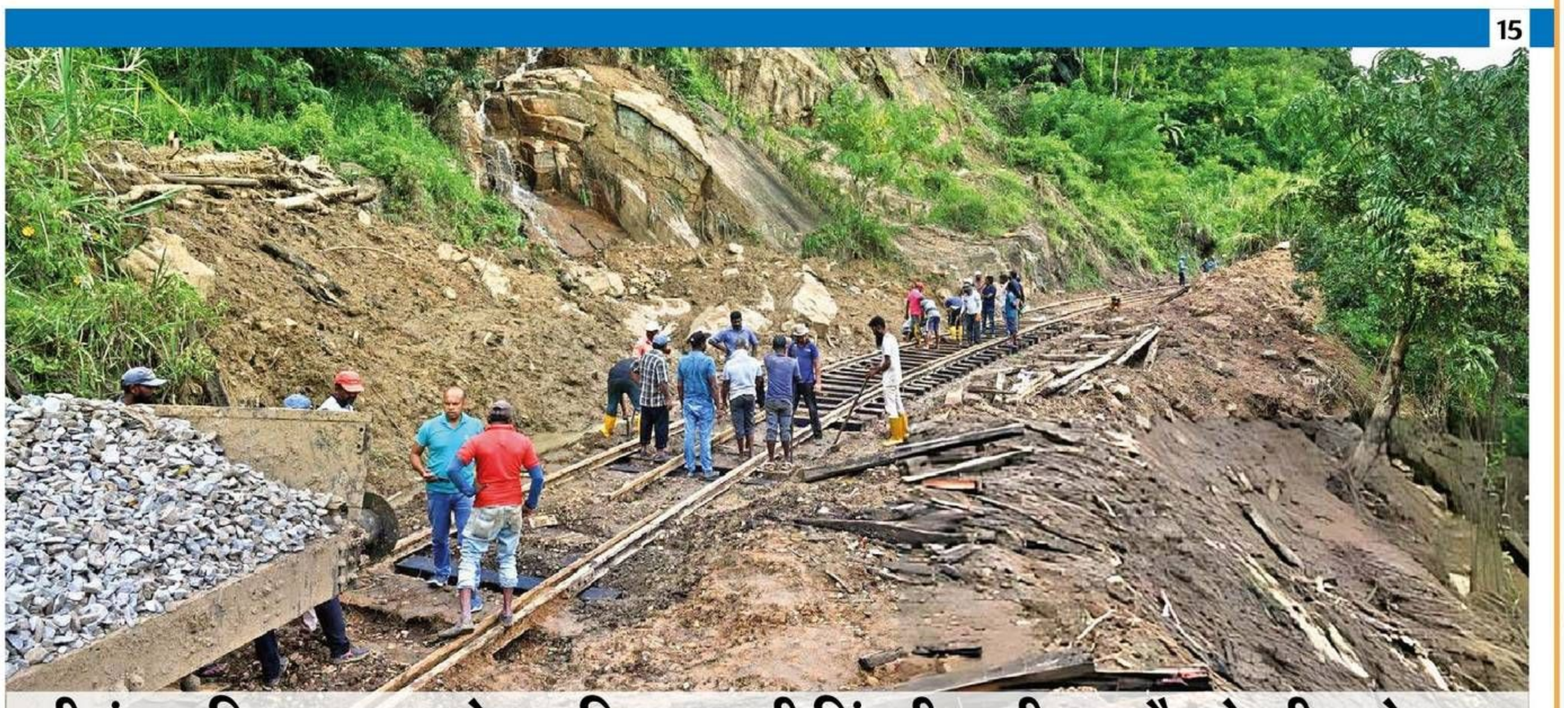

श्रीलंका: दित्वा तूफान के 15 दिन बाद भी जिंदगी पटरी पर लौटाने की जद्दोजहद

कोलंबो | तस्वीरें श्रीलंका की हैं, यहां 28 नवंबर को आए भीषण चक्रवाती तूफान दित्वा के करीब 15 दिन के बाद के हालात अब तक सामान्य नहीं हो पाए हैं। शनिवार को मसपन्ना इलाके में भूस्खलन के बाद रेल की पटरियों को सुधारने और बसों पर जमे कीचड़ को हटाने में मजदूर जुटे हुए हैं। तूफान और उसके बाद लगातार हुई मानसूनी बारिश ने देशभर में भारी बाढ़ और भूस्खलन हुआ। अब तक श्रीलंका में 639 लोगों की मौत की पुष्टि हो चुकी है। तूफान से करीब 18 लाख लोग प्रभावित हुए हैं, जबकि 2.33 लाख से ज्यादा लोग बेघर होकर राहत शिविरों में रहने को मजबूर हैं। जो लोग अपने घर लौट रहे हैं वे वहां के हालात देखकर हैरान है क्योंकि हजारों घरों में 3-3 फीट तक मलबा जम चुका है। श्रीलंका के सभी 25 जिलों में आपदा का असर देखा गया और सैकड़ों गांवों की संपर्क सड़कें और ब्रिज टूट चुके हैं। सड़कों, पुलों और सार्वजनिक परिवहन को भारी नुकसान पहुंचा है। भारत सहित दुनिया के कई देशों ने राहत दल और सामग्री भेजी है।

भूस्खलन के बाद मलबे में दबीं बसें।

घर से मलबे को हटाता एक व्यक्ति।

नीति बनाम हकीकत • 10-12 साल में कई एयरलाइंस डूबीं; इस हाल में 5 नए खिलाड़ी भी जमीन पर ही होंगे

कई एयरलाइंस धड़ाम, पर सिस्टम अधूरा; नए ऑपरेटरों को भी 'जुगाड़ का आसमान'

एम. रियाज हाशमी | नई दिल्ली

संसद में सिविल एविएशन मंत्री राम मोहन नायडू ने कहा कि भारत में '5 बड़ी एयरलाइंस के लिए पर्याप्त स्पेस है।' यह इंडिगो संकट पर केंद्र सरकार की प्रतिक्रिया भर नहीं था, बल्कि मौजूदा सिविल एविएशन मॉडल को लेकर एक नीतिगत दावा था। बढ़ती यात्री मांग के आधार पर उन्होंने और बड़ी एयरलाइंस की जरूरत बताई। लेकिन यह बयान जिस पृष्ठभूमि में आया, वही इसकी सबसे बड़ी कसौटी है।

घरेलू हवाई बाजार का 64% हिस्सा संभालने वाली इंडिगो के ऑपरेशनल ब्रेकडाउन ने दिखा दिया कि भारतीय एविएशन सिस्टम कुछ बड़े ऑपरेटरों पर खतरनाक स्तर तक निर्भर हो चुका है। बीते 10 से 12 वर्षों में किंगफिशर, जेट एयरवेज, एयर डेक्कन और गो-एयर जैसे उदाहरण बताते हैं कि पतन का पैटर्न एक-सा रहा। देश में कई एयरलाइंस धड़ाम के बाद भी सिस्टम अधूरा है। ऐसे हालात में नए ऑपरेटरों के लिए भी जुगाड़ के बिना आसमान में उड़ान भरना मुश्किल है।

एक एयरलाइन खड़ी करने की असली कीमत: 8 से 10 हजार करोड़

भारत में नई एयरलाइन शुरू करना केवल विमान लीज पर लेने या लाइसेंस हासिल करने तक सीमित नहीं है। संसदीय समितियों और एविएशन एक्सपर्ट्स के आकलन बताते हैं कि एक मिड-साइज घरेलू एयरलाइन को शुरुआती 3 से 5 वर्षों में 8,000 से 10,000 करोड़ रुपए की वित्तीय सहनशीलता चाहिए, जिसमें तत्काल रिटर्न नहीं मिलता। डीजीसीए के नियमों के तहत ऑपरेटिंग परमिट से पहले ही नेटवर्थ, फ्लीट प्लान, मेंटेनेंस और इंश्योरेंस जैसी शर्तों पर भारी खर्च होता है। इसके बाद एयरक्राफ्ट लीजिंग की लागत आती है, जो पूरी तरह डॉलर में होती है, जबकि टिकट से आय रु. में। यही करेंसी मिसमैच बीते एक दशक में कई एयरलाइंस के लिए बड़ा जोखिम बना। संसद की स्थायी समिति की 380वीं रिपोर्ट के अनुसार, एविएशन टर्बाइन फ्यूल कुल ऑपरेटिंग लागत का 35 से 40% तक हो सकता है। राज्यों द्वारा एटीएफ पर अलग-अलग वैट और दूसरी ओर किराए पर सरकारी प्राइस-कैपिंग, एयरलाइंस के मार्जिन को और कम कर देती है। जेट एयरवेज और किंगफिशर के मामलों में बेहतर लोड फैक्टर के बावजूद लीज रेंट, ब्याज और फ्यूल भुगतान में देरी से पूरा ऑपरेशनल चक्र टूट गया। गो-एयर के संकट में इंजन सप्लाई और मेंटेनेंस विवाद के साथ वित्तीय कमी निर्णायक साबित हुई।

रेगुलेटरी सिस्टम खुद संकट में

डीजीसीए की कार्यप्रणाली पर बनी 2003 की रोडमैप रिपोर्ट, 2006 की कौर समिति और 380वीं संसदीय रिपोर्ट एक साझा निष्कर्ष पर पहुंचती हैं कि एविएशन रेगुलेटरी सिस्टम खुद संसाधन-संकट से जूझ रहा है। वर्क फोर्स, लंबित सेफ्टी ऑडिट और सीमित निगरानी के कारण नई एयरलाइंस के लिए अप्रत्याशित ग्राउंडिंग और ऑपरेशनल जोखिम बढ़ जाते हैं। अनुभव बताता है कि जब तक बुनियादी कमजोरियां दूर नहीं होतीं, भारतीय आसमान नए खिलाड़ियों के लिए विस्तार से ज्यादा अस्तित्व की परीक्षा बना रहेगा।

भास्कर एक्सपर्ट मार्केट विस्तार पर फोकस, पर सिस्टम विकसित नहीं किया

रोहित ज्योतिष, अर्थशास्त्री, ओपी जिंदल यूनि.

जब किसी सेक्टर में बाजार हिस्सेदारी कुछ ही कंपनियों के पास सिमट जाती है, तो पूरा सिस्टम 2-3 पॉइंट्स ऑफ फेल्योर' पर टिक जाता है। एविएशन में एक ऑपरेटर की विफलता यात्रियों को ही नहीं, बल्कि एयरपोर्ट, एटीसी और पूरे नेटवर्क को प्रभावित करती है। केंद्रीकृत बाजार में कंपनियां लागत घटाने और परिचालन को अधिकतम खींचने की स्थिति में पहुंच जाती हैं, जिससे सेफ्टी व रेजिलिएंस पर दबाव पड़ता है।

विरल आचार्य, इकॉनोमिस्ट, न्यूयॉर्क यूनिवर्सिटी

2015 के बाद भारत की सबसे बड़ी कंपनियों ने कॉरपोरेट आय के बढ़ते हिस्से पर कब्जा किया है। एविएशन में कुछ बड़े खिलाड़ी बाजार, पूंजी और नीति पर हावी हैं। बड़े आकार से लागत दक्षता तो मिलती है, लेकिन जब प्रतिस्पर्धा घटती है, तो जोखिम पूरे सिस्टम में फैल जाता है। तब किसी एक कंपनी की विफलता सेक्टर-लेवल संकट में बदल सकती है, जैसा इंडिगो केस में दिखा।

अमित सिंह, एविएशन एक्सपर्ट, सेफ्टी मैटर्स

एक दशक में जिस तेजी से मार्केट का विस्तार हुआ, उसी अनुपात में न तो सेफ्टी ओवरसाइट सिस्टम मजबूत हुआ और न ही रेगुलेटरी कैपेसिटी बढ़ी। डीजीसीए, एटीसी और सेफ्टी ऑडिट मैकेनिज्म संसाधन-संकट में रहे, जबकि एयरलाइंस पर परिचालन और अनुपालन का दबाव कई गुना बढ़ता गया। सरकार ने मार्केट विस्तार को प्राथमिकता दी, सिस्टम को उसी स्तर पर विकसित नहीं किया।

संडे बिग इन्फो आज बेहतर है या बीता कल?

चुनौतियों से परेशान दुनिया मान रही 'बीते दिन अच्छे थे'

नई दिल्ली | दुनिया मान रही है कि आज से कहीं ज्यादा बेहतर बीता कल था। 30 देशों में 23,772 लोगों पर हुए सर्वे में 44% ने 1975 में जन्म लेने को बेहतर माना। 55% मानते हैं कि 1975 में लोग ज्यादा खुश थे। सुरक्षा से लेकर पर्यावरण तक कई पैमानों पर 1975 को बेहतर माना। आइए समझते हैं कि आखिर ऐसा क्यों है...

1975 vs 2025 : 44% लोग 1975 में जन्म चाहते हैं

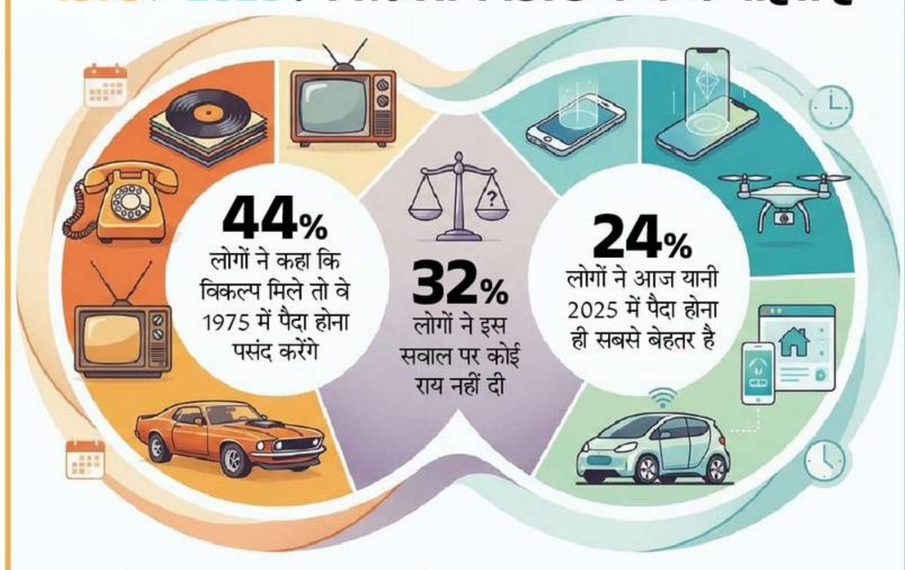

सिर्फ जेन जी को 2025 पसंद, बाकी सबका रुझान 1975 की तरफ...

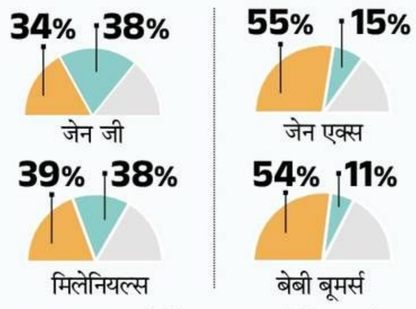

55% मानते हैं 50 साल पहले लोग खुश थे 16% को लगता है कि 2025 में ज्यादा खुश हैं

1975 में ये सब अच्छा था

2025 में ये बेहतर हुआ

पसंद: दुनिया में बीते दिनों की याद हावी, लेकिन दक्षिण कोरिया में आज ही अच्छा

30 देशों में ज्यादातर को 1975 पसंद है। दक्षिण कोरिया में सिर्फ 19% ने 1975 चुना, जबकि 44% ने 2025 को बेहतर समय बताया।

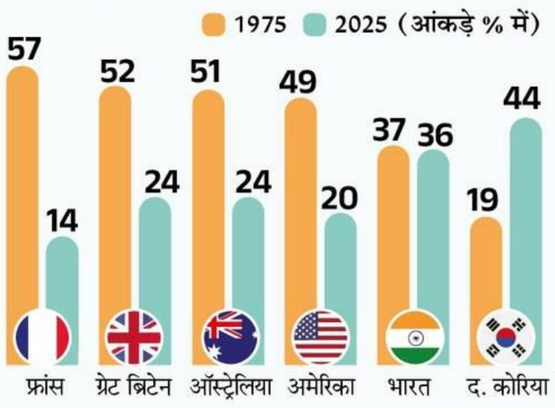

दुनिया ऐसा क्यों सोच रही है?

2020 का दौर मुश्किल दशक: गत 5 वर्षों में महामारी, रिकॉर्ड गर्मी, महंगाई, एआई के दखल जैसे कारणों से लोग भविष्य को लेकर चिंतित हैं। 78% मानते हैं कि दुनिया 2020 की तुलना में ज्यादा असुरक्षित हुई है। 16% मानते हैं कि सरकारें भावी संकट संभाल पाएंगी।

क्या 1975 वाकई बहुत अच्छा था?

सच का अंदाजा नहीं...
1975 की कई हकीकतों का लोगों को अंदाजा नहीं। जीवन प्रत्याशा ज्यादा मान रहे हैं। मैक्सिको में तब की जीवन प्रत्याशा 71.8 साल बताई, जबकि 61.9 साल थी। भारत की 69.4 वर्ष मानी, जबकि 50.8 साल थी।

शिक्षा पर गलत धारणा...
दुनिया मानती है कि 2025 में 75-100% आबादी पढ़-लिख सकती है, लेकिन औसत अनुमान अब भी वास्तविक 88% से कम है। 1975 की साक्षरता दर (65%) को लगभग सभी देशों ने कम आंका।

तथ्य नहीं भावना हावी...
कई देशों में पर्यावरण, सुरक्षा और हैप्पीनेस पर नकारात्मकता बढ़ी है। पर, हेल्थकेयर व एजुकेशन में दुनिया काफी आगे बढ़ी है। दुनिया तथ्यों से नहीं, अपनी भावनाओं और मौजूदा हालात से तय कर रही है कि 1975 बेहतर था।

स्रोत: इप्सॉस इज लाइफ गेटिंग बेटर, 1975 वर्सेज 2025 सर्वे

पलमायरा के पास गश्त टीम पर गोलीबारी, सीरियाई फोर्स के भी कई जवान घायल

असद के तख्तापलट के बाद पहली बार सीरिया में अमेरिकी सेना पर हमला, 3 लोगों की मौत

© The New York Times
दैनिक भास्कर से विशेष अनुबंध के तहत

दमिश्क | सीरिया में 8 दिसंबर 2024 को तत्कालीन राष्ट्रपति असद के तख्तापलट के करीब एक साल बाद अमेरिकी सेना पर बड़ा हमला हुआ है। शनिवार को मध्य सीरिया में हुए इस घातक हमले में 2 अमेरिकी सैनिकों और एक अमेरिकी दुभाषिये की मौत हो गई।

अमेरिकी रक्षा मंत्रालय पेंटागन ने पुष्टि की है कि यह हमला पलमायरा के पास उस वक्त किया गया, जब अमेरिकी और सीरियाई सुरक्षाबल संयुक्त गश्त पर थे। पेंटागन के मुताबिक, मारे गए सैनिक इस्लामिक स्टेट के खिलाफ चल रहे आतंकवाद विरोधी अभियान का हिस्सा थे।

अचानक गोलीबारी में अमेरिकी दल को निशाना बनाया गया, जिससे मौके पर अफरातफरी मच गई। हमले में 3 अन्य अमेरिकी सैनिक गंभीर घायल हुए हैं, जबकि सीरियाई सुरक्षा बलों के भी कई जवान जख्मी हुए हैं। सीरियाई सरकारी एजेंसी साना ने बताया कि हमलावर को मौके पर ही ढेर कर दिया गया, लेकिन उसकी पहचान पर सस्पेंस बना हुआ है।

ट्रम्प का दावा खारिज: थाईलैंड ने कहा- कंबोडिया पर सैन्य कार्रवाई जारी रहेगी

बैंकॉक | थाईलैंड के पीएम अनुतिन चार्नवीराकुल ने कहा है कि कंबोडिया पर सैन्य कार्रवाई जारी रहेगी। उन्होंने अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के संघर्ष-विराम कराने के दावे को भी खारिज कर दिया। ट्रम्प ने पिछले कहा था कि थाईलैंड और कंबोडिया के बीच सीजफायर हो गया है। अनुतिन ने शनिवार को सोशल मीडिया पोस्ट में लिखा, 'थाईलैंड तब तक सैन्य कार्रवाई करता रहेगा, जब तक हमारी जमीन और लोगों को कोई खतरा रहेगा। शनिवार सुबह की हमारी सैन्य कार्रवाई इसका सबूत है।' पिछले 6 दिन से जारी संघर्ष में 20 की मौत हुई है। करीब 6 लाख लोग बेघर हुए हैं।

ओडिशा: आदिवासी छात्र की संदिग्ध हालात में मौत

भास्कर न्यूज | भुवनेश्वर

ओडिशा के भुवनेश्वर स्थित कलिंग इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंस (केआईएसएस) में 14 साल के आदिवासी छात्र की संदिग्ध हालात में मौत हो गई। मृतक छात्र कक्षा 9 में पढ़ता था। परिवार ने हत्या का आरोप लगाया और शनिवार को क्योंझर में कलेक्टर ऑफिस के सामने शव रखकर प्रदर्शन किया। छात्र के पिता ने क्योंझर टाउन थाने में शिकायत दर्ज कराई है। उनके मुताबिक, उसके शरीर पर चोट के निशान थे। केआईएसएस कलिंग इंस्टीट्यूट ऑफ इंडस्ट्रियल टेक्नोलॉजी से जुड़ा संस्थान है, जहां पहले भी तीन छात्रों की संदिग्ध हालात में मृत्यु की घटना हो चुकी है।

कार्रवाई • ओमान की खाड़ी में अवैध डीजल ले जा रहा था

ईरान ने समुद्र में ऑयल टैंकर रोका, भारत सहित 3 देशों के 18 क्रू सवार

भास्कर न्यूज | तेहरान/नई दिल्ली

ईरान ने ओमान की खाड़ी में एक ऑयल टैंकर को जब्त किया है, जिस पर भारत, श्रीलंका और बांग्लादेश के 18 क्रू सवार थे। फार्स न्यूज एजेंसी ने होरमुजगान प्रांत के एक अधिकारी के हवाले से बताया कि टैंकर 60 लाख लीटर कथित अवैध डीजल ले जा रहा था और उसने सभी नेविगेशन सिस्टम बंद कर रखे थे। ईरानी बलों का कहना है कि खाड़ी क्षेत्र में ईंधन तस्करी के खिलाफ नियमित कार्रवाई की जाती है। ईरान इससे पहले भी ऐसे कई टैंकर जब्त कर चुका है और इन कार्रवाइयों को घरेलू कानून प्रवर्तन से जोड़कर पेश करता है।

अमेरिका ने जिस टैंकर को जब्त किया, उसका तेल चीन जाना था

अमेरिका ने वेनेजुला के तट के पास जिस ऑयल टैंकर को जब्त किया है, वह क्यूबा को तेल आपूर्ति नेटवर्क का हिस्सा था, लेकिन उसका अधिकांश तेल चीन भेजा जा रहा था। 'स्किपर' नाम का टैंकर 4 दिसंबर को वेनेजुला से 20 लाख बैरल कच्चा तेल लेकर रवाना हुआ, जिसका आधिकारिक गंतव्य क्यूबा का मातानजास बंदरगाह बताया था। करीब 50 हजार बैरल तेल एक अन्य जहाज को क्यूबा के लिए ट्रांसफर किया। शेष तेल के साथ स्किपर एशिया, विशेष रूप से चीन की ओर बढ़ गया।

न्यूज विंडो

बांग्लादेश में ऑपरेशन डेविल हंट-2 शुरू

ढाका | बांग्लादेश में ताजा हिंसा के बाद अंतरिम सरकार ने देशभर में सख्त सुरक्षा अभियान का आदेश दिया है। एक युवा नेता को गोली मारे जाने के बाद ऑपरेशन डेविल हंट का दूसरा चरण शुरू किया गया। आरोपी पर इनाम घोषित किया है।

जम्मू में ड्रग्स तस्करों के 8 अवैध ढांचे ध्वस्त

जम्मू | जम्मू-कश्मीर में नशा तस्करों के खिलाफ बड़ी कार्रवाई करते हुए 8 अवैध ढांचे ध्वस्त किए गए। ये सभी एनडीपीएस मामलों में शामिल आरोपियों के थे। पुलिस कठुआ ड्रग्स केस की जांच कर रही है।

अग्निकांड के बाद गोवा में दो नाइटक्लब सील

पणजी | गोवा में 6 दिसंबर को नाइटक्लब में हुए भीषण अग्निकांड के बाद प्रशासन ने सख्त कार्रवाई शुरू कर दी है। इस हादसे में 25 लोगों की मौत हुई थी। इसके बाद वागाटोर इलाके के दो प्रमुख नाइटक्लब (कैफे CO2 गोवा और गोया क्लब) को नियम उल्लंघन के चलते सील कर दिया गया। जांच में फायर एनओसी की कमी, संरचनात्मक खामियां सामने आया।

बेलारूस: नोबेल विजेता, और विपक्षी नेता रिहा

मिन्स्क | बेलारूस के राष्ट्रपति अलेक्जेंडर लुकाशेंको ने 123 राजनीतिक कैदियों को रिहा करने का आदेश दिया है। रिहा किए गए लोगों में 2022 के नोबेल शांति पुरस्कार विजेता अलेस बियालियात्सकी व मुख्य विपक्षी नेता मारिया कालेसनिकावा शामिल हैं। यह कदम अमेरिकी बैन हटाने के बाद उठाया गया।

भास्कर खास स्पेन में नशे की लत-जीन-पढ़ाई में संबंधों पर वैज्ञानिक अध्ययन

जेनेटिक वजहों से नशे की लत पड़ने का जोखिम अधिक, ये पढ़ाई से भटकाव के लिए भी जिम्मेदार

भास्कर न्यूज | मैड्रिड

नशे की लत और पढ़ाई में दिक्कत ये दो समस्याएं अकसर साथ-साथ दिखाई देती हैं। अब वैज्ञानिकों ने इनके पीछे छुपे गहरे कारण की पहचान की है- साझा जेनेटिक फैक्टर। यानी कुछ खास जीन वेरिएंट्स ऐसे हैं, जो न केवल नशे की लत का जोखिम बढ़ाते हैं, बल्कि किसी व्यक्ति की शिक्षा पूरी करने की क्षमता को भी प्रभावित करते हैं। यह जानकारी हाल ही में स्पेन में हुई नई स्टडी में सामने आई है।

स्टडी रिपोर्ट में कहा गया है कि कई बार स्कूल की दिक्कत और ड्रग्स की लत दो अलग समस्याएं नहीं, बल्कि एक ही जीन सेट के दो अलग नतीजे हो सकते हैं। मेडिकल जर्नल 'एडिक्शन' की रिपोर्ट के अनुसार, वैज्ञानिकों ने ऐसे जीन वेरिएंट्स की पहचान की है, जो नशे की लत और पढ़ाई के स्तर को विपरीत दिशा में प्रभावित करते हैं। वेल डी हेब्रोन रिसर्च इंस्टीट्यूट की प्रमुख रिसर्चर जुडिट कबाना डोमिंगुएज ने कहा, 'नशे की लत और शिक्षा स्तर के बीच जेनेटिक संबंध होने से किसी व्यक्ति में सब्स्टेंस यूज डिसऑर्डर का खतरा 66% तक बढ़ सकता है।

शिक्षा को बढ़ावा देकर नशे को रोक सकते हैं

रिसर्च टीम का मानना है कि अगर शिक्षा के स्तर को बढ़ावा दिया जाए, तो इससे हेल्थ सिस्टम को नशे की रोकथाम के लिए बेहतर रणनीति बनाने में मदद मिल सकती है। रिसर्चर जुडिट ने कहा, 'भले ही अभी और रिसर्च की जरूरत है, लेकिन हमारे नतीजे बताते हैं कि शिक्षा को बढ़ावा देना नशे की रोकथाम में मददगार हो सकता है।'

मानव जीनोम को स्कैन खास जीन की पहचान

शोधकर्ताओं ने पूरे मानव जीनोम को स्कैन कर यह देखा कि कौन से जीन वेरिएंट्स किसी बीमारी या व्यवहार से जुड़े हैं। **नतीजा क्या निकला:**
- रिसर्च में ऐसे जीन वेरिएंट्स मिले जो नशे की लत का खतरा बढ़ाते हैं और साथ ही कम शिक्षा स्तर से भी जुड़े हैं।
- यही जीन वेरिएंट्स खराब स्वास्थ्य और कमजोर सामाजिक-आर्थिक स्थिति से भी जुड़े पाए गए।
- अभी यह तय नहीं किया जा सकता कि कम पढ़ाई नशे की लत को बढ़ाती है या नशे की लत पढ़ाई में रुकावट बनती है।

उपलब्धि • ग्रासरूट ट्रायल से गंभीर स्ट्रोक इलाज में नई आशा

एम्स दिल्ली: भारत में पहली बार एडवांस्ड ब्रेन स्टेंट का क्लिनिकल ट्रायल सफल

भास्कर न्यूज | नई दिल्ली

स्ट्रोक के इलाज के क्षेत्र में भारत ने एक ऐतिहासिक उपलब्धि हासिल की है। एम्स दिल्ली ने देश का पहला समर्पित क्लिनिकल ट्रायल सफलतापूर्वक पूरा किया है, जिसमें गंभीर स्ट्रोक के इलाज के लिए बनाए गए अत्याधुनिक ब्रेन स्टेंट का परीक्षण किया गया। इस ट्रायल का नाम ग्रासरूट है, जिसमें सुपरनोवा स्टेंट की सुरक्षा और प्रभावशीलता का मूल्यांकन किया गया। एम्स दिल्ली इस ट्रायल का राष्ट्रीय समन्वय केंद्र और प्रमुख नामांकन स्थल रहा। इस ट्रायल के नतीजे प्रतिष्ठित जर्नल ऑफ न्यूरोइंटरवेंशनल सर्जरी में प्रकाशित हुए हैं, जो ब्रिटिश मेडिकल जर्नल समूह का हिस्सा है।

एम्स दिल्ली के न्यूरोइमेजिंग और इंटरवेंशनल न्यूरो-रेडियोलॉजी विभाग के प्रमुख और इस ट्रायल के राष्ट्रीय प्रधान अन्वेषक डॉ. शैलेश बी गायकवाड़ ने इसे भारत में स्ट्रोक उपचार के लिए एक निर्णायक मोड़ बताया। उन्होंने कहा कि यह देश का पहला ऐसा स्ट्रोक डिवाइस है, जिसे पूरी तरह घरेलू क्लिनिकल ट्रायल के आधार पर मंजूरी मिली है।

इस साल की शुरुआत में ग्रासरूट ट्रायल के आंकड़ों को केंद्रीय औषधि मानक नियंत्रण संगठन ने स्वीकार किया, जिसके बाद स्टेंट को भारत में नियमित उपयोग की अनुमति मिल गई।

स्ट्रोक से पीड़ित 17 लाख लोगों के लिए नई उम्मीद

- ग्रासरूट ट्रायल देश के 8 केंद्रों में किया गया और इसे मेक-इन-इंडिया पहल के लिए भी बड़ी सफलता माना जा रहा है।
- यह स्टेंट भारत की विविध मरीज आबादी को ध्यान में रखकर बनाया गया है, जहां कम उम्र में स्ट्रोक के मामले अधिक देखे जाते हैं।
- अब इसका निर्माण भारत में किया जाएगा, जिससे यह किफायती दरों पर उपलब्ध हो सकेगा।
- विशेषज्ञों के अनुसार, यह उपलब्धि हर साल स्ट्रोक से प्रभावित होने वाले करीब 17 लाख भारतीयों के लिए नई उम्मीद लेकर आई है।

CCI NG 3.7 Product: NBTDelhiBS PubDate: 14-12-2025 Zone: Mahanagar Edition: 1 Page: NBTMAH13 User: cci Time: 12-13-2025 20:56 Color:

सर्दी की हेल्दी सौगात

सर्दी का मौसम डाइट से अपने शरीर को मज़बूत बनाने का मौसम है। सर्दियों में मिलने वाले कुछ फल और सब्जियां तो बेहद फायदेमंद होते हैं, जानते हैं इनके बारे में:

सर्दी के मौसम में सही तरीके से, सही चीज़ें और सही मात्रा में खा लें तो यह सिक्योर्ड इन्वेस्टमेंट शरीर को अगली सर्दी तक फायदा देता है। इस मुद्दे पर आयुर्वेद और मॉडर्न मेडिसिन के एक्सपर्ट्स भी अमूमन एक ही राय रखते हैं। असल में सर्दियों में हमारे पेट की अग्नि यानी पाचनशक्ति बेहतरीन होती है। इन दिनों मिलने वाली कुछ खास चीज़ें हैं जिन्हें खाएं तो एक तरफ जहां खून की मात्रा बढ़ती है, दूसरी ओर इम्यूनिटी भी पावरफुल होती है। इन दिनों कौन-सी सब्जी, कौन-सा फल खाना सबसे बढ़िया है? क्या-क्या ज़रूर खाएं? एक्सपर्ट्स से बातकर जानकारी दे रहे हैं लोकेश के. भारती

आयुर्वेद के मौलिक सिद्धांतों के अनुसार, ठंड में शरीर की गर्मी भीतर की ओर ही सिमट जाती है, जिससे डाइजेस्टिव सिस्टम (पाचन तंत्र) ज्यादा ऐक्टिव हो जाता है और जठराग्नि (भूख लगने, भोजन पचाने और शरीर की जज्ब करने की शक्ति) बहुत तेज़ (प्रबल) हो जाती है। अगर यह अग्नि भोजन खाने के बाद भी संतुष्ट न हो तो यह शरीर की धातुओं जैसे रस, रक्त और मांस को पचाने लगती है, जिससे शरीर में कमज़ोरी और वात दोष की बढ़ोतरी होती है। इसलिए हेमंत ऋतुचर्या में ऐसे आहार के सेवन पर बल दिया गया है जो स्वभाव से स्निग्ध (Oily) और मधुर (Sweet) रस प्रधान हो। हेमंत ऋतु की सब्जियां इन ज़रूरतों को पूरा करने का कुदरती साधन है।

सर्दी की सत्ता

सर्दियों में खाने के कई विकल्प मौजूद होते हैं, लेकिन यहां सबसे खास चीज़ों के बारे में बताया गया है। इनका उपयोग हर दिन या फिर हफ्ते में 4 से 5 दिन करने से शरीर तंदुरुस्त रहता है।

आंवला
पाएं सेहत और स्वाद

पुरानी कहावत है कि जिस आंगन में आंवले का पेड़ हो, वहां बीमारी निवास नही करती यानी हर दिन आंवले के सेवन से शरीर को बहुत फायदा होता है। यह पाचन तंत्र को दुरुस्त करता है और इससे इम्यूनिटी मजबूत होती है। यह विटामिन- C का सबसे बेहतर सोर्स भी है। इससे स्किन की परेशानी दूर होती है। इसे आयुर्वेद में रसायन कहा गया है। यहां रसायन का मतलब है जो बुढ़ापे को दूर करे और जवानी बरकरार रखे। इसके अलावा और भी कई फायदे हैं। हो सके तो इसके मुरब्बे से बचना चाहिए क्योंकि उसमें चीनी होती है।

आंवला रोज 1 ही काफी: अगर हम हर दिन एक आंवला, एक बार में या कई बार में, कच्चा या नमक के साथ या फिर उबालकर खाएं तो हमारे शरीर की हर दिन की विटामिन-C की ज़रूरत पूरी हो जाती है।

- कच्चा या उबला आंवला खट्टा लगे तो उसके साथ नमक (सेंधा बेहतर है) ले सकते हैं। इससे उसका टेस्ट बढ़ जाता है। अगर बीपी की परेशानी है तो नमक न लें।
- हम आंवले का अचार या कैंडी खाते हैं तो भी हमें आंवले में मौजूद कुल विटामिन-C का 60 से 70 फीसदी तक मिल जाता है।

घी
को न करें मिस

आयुर्वेद में घी को सर्वोत्तम स्निग्ध द्रव्य कहा गया है। यह वात (इसके असंतुलन से स्किन सूखी हो जाती है, पैरों की मांसपेशियों में ऐंठन और दर्द रहता है, वज़न कम होता है और नींद कम आती है) को संतुलित करने में सबसे असरदार माना जाता है। सर्दियों में वात दोष स्वाभाविक रूप से बढ़ता है, इसलिए घी शरीर को ज़रूरी स्निग्धता, ताप और पोषण देता है। घी जठराग्नि को संतुलित रखकर भोजन को ठीक तरह से पचाता है। स्किन, जॉइंट, ब्रेन को न्यूट्रीशन देता है। कफ को न बढ़ाते हुए शरीर में ऊर्जा और बल का संचार करता है।

- सर्दियों में रोज़ाना एक-दो चम्मच देसी गाय का घी भोजन में शामिल करना काफी फायदेमंद है। हर दिन 1 से 2 चम्मच शुद्ध घी का सेवन किया जा सकता है।
- मिलेट्स खाते समय या दूसरे कार्ब्स (चावल, रोटी आदि) में अगर थोड़ी मात्रा में घी मिला दें तो इनका ग्लाइसिमिक इंडेक्स बढ़ जाता है। इससे ये जल्दी एनर्जी रिलीज नही करते और शरीर में फौरन ही शुगर लेवल नही बढ़ता।

ड्राई फ्रूट्स
और सीड्स का हो मेल

ड्राई फ्रूट्स: ये कई विटामिन्स, मिनरल्स और फाइबर के बेहतरीन सोर्स हैं। ये ज्यादातर उष्ण प्रकृति के होते हैं, इसलिए सर्दियों में खाने से ज्यादा फायदा होता है। अखरोट (2 से 3), बादाम (5 से 8), काजू (2 से 4), किशमिश (आधी से एक मुट्ठी), खजूर (2 से 3) आदि, इनमें से किसी 2 का चुनाव कर लें और हर दिन बदल-बदल कर खाएं। दरअसल, ये सभी सर्दियों के लिए विशेष रूप से उपयुक्त माने जाते हैं। इनके अलावा मेवा शरीर की मांस धातु को पुष्ट करती है। कमजोरी, जोड़ों के दर्द और सुस्ती को कम करती है। इनमें कुदरती रूप से तेल और प्रोटीन होते हैं जो शरीर को ऊष्मा प्रदान करते हैं। एक और बात का ख्याल रखें कि बादाम को भिगोकर खाना या मेवे को घी के साथ मिलाकर लड्डू के रूप में लेना अच्छा है।

ये सीड्स बढ़ा देंगे इम्यूनिटी

तिल: इंग्लिश में इसे Sesame Seeds कहते हैं। तिल की अहमियत को समझते हुए ही हर साल 14 या 15 जनवरी को मकर संक्रांति या तिल संक्रांति मनाया जाता है। तिल दो तरह के होते हैं, काले और सफेद। ये शरीर में टेस्टोस्टेरोन हार्मोन के स्तर को बनाकर रखने में मदद करते हैं। यह शुगर पेशंट के लिए फायदेमंद है। वह 1 से 2 लड्डू खा सकते हैं।

फ्लैक्स सीड्स: इसे अलसी, तीसी के नाम से भी जाना जाता है। यह आयरन का अच्छा सोर्स है। वेजिटेरियन लोगों के लिए यह ओमेगा-3 फैटी एसिड्स का बेहतरीन सोर्स है। एक दिन में 1 से 2 चम्मच तक खा सकते हैं।

चिया सीड्स: चिया सीड्स को पानी में भिगोकर खाने के बहुत फायदे हैं। इसके फाइबर दूसरे सीड्स जितने सख्त नही होते। आधा चम्मच ले सकते हैं।

पंपकिन सीड्स: पंपकिन जो काशीफल, पेठा, सीताफल के नाम से मिलता है, इसकी सब्जी न केवल टेस्टी होती है बल्कि हेल्थ के लिए भी अच्छी होती है। एक चौथाई या आधा चम्मच ले सकते हैं।

मिलेट्स का भी लें मज़ा

रागी, जुआर, बाजरा: ये सभी अच्छे हैं, लेकिन रागी बेहतरीन है। सर्दियों में जरूर खाना चाहिए। कुछ लोग इसे गेहूं के साथ मिलाकर मिक्स्ड यानी मल्टिग्रेन के रूप में भी लेते हैं। अगर किसी को गेहूं पचाने में परेशानी है तो इसे छोड़ भी सकते हैं। ग्लूटेन प्रोटीन से कुछ लोगों को परेशानी होती है। मिलेट्स शरीर में ट्राइग्लिसराइड्स (खून में मौजूद फैट) और सी-रिऐक्टिव प्रोटीन को कम करते हैं। इस वजह से ये हार्ट से जुड़ी समस्याओं को दूर करने में भी मददगार हैं। फाइबर की मात्रा भरपूर होती है। रागी कैल्शियम का बेहतरीन सोर्स है।

- शरीर को भोजन में से पानी जज्ब करने के लिए ज्यादा वक्त मिल जाता है। मिलेट्स से ग्लूटन या नॉन-ग्लूटन एलर्जी की समस्या भी नही है। रागी में दूसरे मिलेट्स, चावल, गेहूं आदि की तुलना में बहुत ज्यादा कैल्शियम होता है। इसलिए इसे दूध का विकल्प भी कहा जाता है। वहीं बाजरे में आयरन की अधिकता होती है।

सीज़न के गिफ्ट

यह मौसम हेल्दी खानपान के लिए बेहतरीन है। **ताज़े फल, सब्जी, आंवला, ड्राई फ्रूट्स, घी, तिल** आदि खाना बेहद फायदेमंद है।

अगर इस मौसम में सही डाइट रखें तो **पूरे साल इम्यूनिटी सही** रहती है और **हीमोग्लोबिन** भी कम नही होता।

हर दिन 1 से 3 फल (अमरूद, संतरा, सेब) और **1 प्लेट सलाद** (चुकंदर, गाजर, टमाटर, मूली) खाने से पाचन-पोषण स सही रहता है।

हर दिन आधा से 1 आंवला खाने से विटामिन-C की कमी नही होती। धनिया पत्ते के साथ चटनी बनाकर खाना भी फायदेमंद है।

साग (पालक, बथुआ, मेथी, पत्ते वाला प्याज आदि) खाने से खून की कमी नही होती और **'जिगर' यानी लिवर दमदार** बना रहता है।

हर दिन के भोजन में **गहरे रंग वाली सब्जी** (लाल बंद गोभी, काली या लाल गाजर, चुकंदर आदि) खाएं तो ये **लिवर, लंग्स** को बहुत भाते है।

शुद्ध **देसी घी मिल जाए तो 1 से 2 चम्मच** हर दिन सेवन करें। घी के अलावा अगर लहसुन खाते हैं तो इसे भी हर दिन शामिल करें।

शिलाजीत कुदरती है और कैल्शियम का अच्छा सोर्स भी। **इम्यूनिटी, बीपी काबू करने में** भी मददगार। इसे कम मात्रा में (1-2 ग्राम) ही लेना चाहिए।

काली मिर्च, दालचीनी, लौंग व इलायची उष्ण (गर्म) और सुगंधकारी होती है। गर्म तासीर की वजह से ये **खून की नलियों को संकुचित नहीं** होने देती और बीपी को काबू करने मदद करती है।

एक्सपर्ट पैनल

डॉ. एस. के. सरीन
डायरेक्टर, ILBS

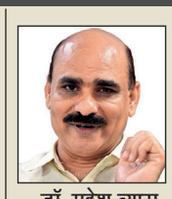

डॉ. महेश व्यास
डीन, ऑल इंडिया इंस्टिट्यूट ऑफ आयुर्वेद

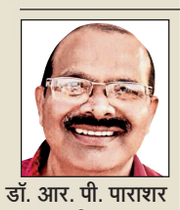

डॉ. आर. पी. पाराशर
वरिष्ठ आयुर्वेदाचार्य

ईशी खोसला
सीनियर डाइटिशन

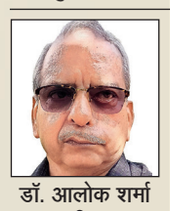

डॉ. आलोक शर्मा
वरिष्ठ आयुर्वेदाचार्य

डॉ. आनन्द पांडेय
मुख्य चिकित्सक, गंगा आयुर्वेदिक चिकित्सालय

मूली
सस्ती भी, अच्छी भी

आजकल मूली का भाव कम ही रहता है। अमूमन 10 से 30 रुपये प्रति किलो के हिसाब से यह मिल जाती है। लेकिन इसमें गुण भरपूर हैं।

- हमारे कई अंगों और सिस्टम को मजबूत बनाती है। मूली में भरपूर मात्रा में वॉटर, फाइबर, विटामिन-C, फोलेट, पोटेशियम और कई तरह के ऐंटिऑक्सिडेंट होते हैं जो **शरीर को अंदर से साफ करने** और पाचन बेहतर बनाने में भूमिका निभाते हैं।
- सबसे बड़ा फायदा हमारे डाइजेस्टिव सिस्टम को होता है। मूली में मौजूद फाइबर कब्ज दूर करता है, गैस कम करता है और पेट को हल्का रखता है।
- यह लिवर और गॉलब्लैडर को भी हेल्प करती है। इसमें मौजूद एंजाइम बाइल बनाने में मददगार है।
- यह शरीर को डिटॉक्स करने में भी मददगार है। किडनी को भी मूली फायदा पहुंचाती है। **यह हल्की डायूरेटिक (यूरिन बाहर निकालने में)** सब्जी है।
- मूली खाने से डकार की परेशानी हो तो अजवाइन, काला नमक आदि भी थोड़ी मात्रा में खा लें।
- यह दिल के लिए भी फायदेमंद है। इसमें मौजूद पोटैशियम बीपी को काबू में रखने में मददगार है। वहीं, **विटामिन-C की अच्छी मात्रा होने से मूली इम्यून सिस्टम को मजबूत** करती है। यह स्किन की जलन और एक्ने को भी कम करती है।
- **मूली को सलाद के रूप में दूसरी सब्जियों के साथ मिलाकर खाएं।** गाजर, चुकंदर और मूली व टमाटर को मिलाकर बनने वाली सलाद शानदार है। वहीं, सलाद में पत्ते वाली प्याज को भी शामिल कर सकते हैं। इससे फाइबर और ऐंटिऑक्सिडेंट ज्यादा मिलते हैं। ये सब्जियां लंबे समय तक एनर्जी देती हैं। ये फाइबर, बीटा-कैरोटीन (विटामिन A) और ऐंटिऑक्सिडेंट्स से भरपूर होती हैं। ये खून की मात्रा बढ़ाने में भी मददगार हैं। **हर दिन 1 प्लेट (300 से 400 ग्राम) सलाद खाएं या फिर जिन्हें सलाद चबाने में परेशानी हो वे इनका 1 गिलास जूस पी सकते हैं।**

पालक
बथुआ, मेथी हैं गुडलक

ताजा पालक तो अच्छा है ही, इस मौसम में बथुआ, मेथी, सोया (कुछ जगहों पर सुआ बोला जाता है), सरसों साग और इनके अलावा भी कई तरह के साग मिलते हैं। ये सभी विटामिन्स, मिनरल्स, फाइबर्स और ऐंटिऑक्सिडेंट के भंडार हैं। पालक समेत सभी साग में फोलेट नामक ऐसा तत्व पाया जाता है जो शरीर में नई कोशिकाएं बनाने के साथ कोशिकाओं में मौजूद डीएनए की मरम्मत का भी काम करता है। फाइबर, आयरन, विटामिन-C शरीर को हर तरह से स्वस्थ बनाए रखता है।

- ये आयरन, कैल्शियम, फोलेट, और विटामिन K, C, A के सोर्स हैं और खून बनाने में भी मददगार हैं। साथ ही साग इम्यूनिटी भी बढ़ाते हैं। मेथी खासतौर पर शुगर को सही रखने में मददगार हैं।
- मेथी और सरसों के साग स्वभाव से उष्ण और कटु रस वाले होते हैं। शरीर को आंतरिक गर्माहट देते हैं और पाचन अग्नि को उत्तेजित करते हैं।

लहसुन
की भी सुन लें

हर सीजन में खाएं लहसुन। सर्दियों में रोजाना 2 से 4 कली और गर्मियों में 1 से 2 कली खाना सही है।

ऐसे ही खाएं लहसुन: लहसुन को बारीक काटकर या क्रश करके 10 मिनट के लिए छोड़ दें, ताकि लहसुन में मौजूद एलिसिन ऐक्टिव हो जाए। एलिसिन बनने में 10 मिनट का वक्त लगता है। इसी एलिसिन की वजह से लहसुन में औषधीय गुण भी आते हैं। काटकर या क्रश करके फौरन ही खा लेंगे या पका लेंगे तो एलिसिन बनने का वक्त नही मिलेगा या थोड़ी मात्रा में बनेगा। वहीं पुराने लहसुन की तुलना में ताज़ा लहसुन को खाना ज्यादा फायदेमंद है। लहसुन एक अच्छा प्रोबायोटिक (यह हमारे गुड फ्लोरा के लिए भोजन है) भी है। लहसुन की छोटी (देसी लहसुन) कली में एलिसिन (फायदेमंद कंपाउंड) की मात्रा कुछ ज्यादा होती है। ये भूख बढ़ाने वाले और भोजन पचाने वाले होते हैं।

फल
ज़रूर खाएं

इस मौसम में कई तरह के फल मिलते हैं। मसलन: **अमरूद, सेब, संतरा, कीनू, अनार** आदि। इनमें से हर दिन कोई एक फल भी खा लें तो कई परेशानियां खत्म हो जाएंगी। अमरूद और सेब तो ऐसे फल हैं जिन्हें सुबह खाली पेट भी खा सकते हैं। इनके अलावा आजकल शरीफा (कस्टर्ड ऐपल) भी काफी मिलता है।

कीनू, माल्टा और संतरे में क्या फर्क?
अक्सर लोग कीनू, माल्टा और संतरे में फर्क नहीं कर पाते। जहां तक खाने के बाद मिलने वाले पोषण की बात है तो तीनों फलों में कोई खास फर्क नही होता। संतरा और माल्टा जहां कुदरती फल है यानी इन्हें कुदरत ने खुद विकसित किया है, वहीं कीनू का विकास अमेरिका के कैलिफोर्निया में 1935 में किया गया था। इसे विलो लीफ मैंडरिन और किंग नामक दो फलों के मिश्रण से बनाया गया है। बाद में यह पंजाब, हरियाणा जैसे राज्यों में उगाया जाने लगा।

क्यों खाना चाहिए: ये तीनों फल विटामिन-C, ऐंटिऑक्सिडेंट और फाइबर के बेहतरीन सोर्स हैं। इम्यूनिटी की मजबूती की बात हो या फिर शरीर में हीमोग्लोबिन के उत्पादन की, ऐसे कई कामों के लिए ये बेहतरीन विकल्प हैं।

संतरा

- यह कीनू और माल्टा की तुलना में ज्यादा मीठा और सुगंधित होता है।
- छिलका माल्टा से पतला लेकिन कीनू जितना मुलायम नहीं। छिलका हल्का खुरदरा होता है। रंग हल्का पीला-नारंगी या हरा। आमतौर पर हल्का मीठा, हल्का खट्टा, फ्रेश सुगंध।
- इसकी सुगंध बहुत पसंद की जाती है।

कीनू

- इसमें रस बहुत ज्यादा होता है। रंग चमकीला नारंगी होता है।
- छिलका पतला और आसानी से छिल जाता है। ज्यादातर मीठा होता है। कुछ में हल्की खटास रह सकती है।
- बाजार में मिलने वाला ऑरेंज जूस अक्सर कीनू से ही बनता है।

माल्टा

- संतरे की तुलना में छिलका मोटा और कुछ सख्त होता है। इसको छीलना थोड़ा मुश्किल होता है। अमूमन रंग गहरा होता है। यह नारंगी-लाल हो सकता है।
- यह खट्टा और मीठा, दोनों स्वाद देता है।
- यह भी रसीला होता है लेकिन कीनू जितना नहीं।

CCI NG 3.7 Product: NBTDelhiBS PubDate: 14-12-2025 Zone: Mahanagar Edition: 2 Page: NBTMA15 User: cci Time: 12-13-2025 23:00 Color:

फटाफट खबरें

बिहार में युवक की पीट पीटकर हत्या

■ **आईएएनएस नवादा :** बिहार में नवादा के हिसुआ थाना क्षेत्र में जमीन विवाद को लेकर बाइक सवार तीन युवकों ने एक ट्रैक्टर चालक पर चाकू से हमला कर उसे गंभीर रूप से जख्मी कर दिया। फिलहाल पुलिस मामले की जांच में जुटी है। पुलिस ने बताया कि मुकदमा दर्ज कर आरोपियों की तलाश जारी है। जल्द ही सभी को गिरफ्तार कर लिया जाएगा।

चलती मगध एक्सप्रेस में धमाका

■ **NBT न्यूज, वाराणसी :** नई दिल्ली से इस्लामपुर जा रही डाउन मगध एक्सप्रेस के जनरल कोच में शनिवार सुबह जोरदार धमाका होने से यात्रियों में अफरा-तफरी मच गई। कोच में लगे फायर इंस्टिंग्यूशर का ढक्कन अचानक फट गया। इससे पूरे कोच में धुआं फैल गया। यात्री घबरा गए और कई लोग खिड़कियों से कूद पड़े। भगदड़ और कूदने के दौरान दर्जनभर यात्री घायल हुए।

AAP की बैठक में BJP पर निशाना

■ **NBT रिपोर्ट, नई दिल्ली:** आम आदमी पार्टी (AAP) की राष्ट्रीय कार्यकारिणी और राष्ट्रीय परिषद की बैठक शनिवार को हुई। पार्टी ने बीजेपी पर हमला बोलते हुए कहा कि आम आदमी पार्टी को खत्म करने की कोशिश की गई, लेकिन पार्टी पहले से ज्यादा मजबूत है। मनीष सिसोदिया ने कहा कि जांच एजेंसियों का दुरुपयोग कर आप नेताओं को जेल भेजा गया।

मारपीट-वसूली में यूट्यूबर अरेस्ट

■ **पीटीआई, चेन्नई:** यूट्यूबर 'सावुक्कु' शंकर को शनिवार सुबह उनके घर से कथित मारपीट और वसूली के मामले में गिरफ्तार किया गया। एक डायरेक्टर की शिकायत पर केस दर्ज हुआ था। पुलिस ने कहा कि जांच अधिकारी के दरवाजा खटखटाने पर शंकर ने खोलने से इनकार कर दिया और कहा कि पुलिस पहले उनके वकीलों से बात करे।

केरल विधानसभा चुनाव के सेमीफाइनल से BJP और कांग्रेस दोनों की उम्मीदें बढ़ीं

तिरुवनंतपुरम के निकाय चुनाव में BJP ने 45 साल का किला ढहाया

Hemwati.Rajaura1@timesofindia.com

■ **नई दिल्ली:** केरल में हालिया लोकल बॉडी चुनावों के नतीजों को 2026 के विधानसभा चुनाव से पहले का सेमीफाइनल माना जा रहा है। इन नतीजों में कांग्रेस के नेतृत्व वाले यूनाइटेड डेमोक्रेटिक फ्रंट (यूडीएफ) की जीत ने न सिर्फ राज्य इकाई में नया आत्मविश्वास भरा है बल्कि 2026 विधानसभा की रणनीति को भी मजबूती दी है। राष्ट्रीय स्तर पर लगातार चुनौतियों से जूझ रही कांग्रेस के लिए केरल से आए सकारात्मक संकेत सियासी राहत देने वाले हैं।

स्थानीय निकाय चुनावों में बेहतर प्रदर्शन का सीधा असर पार्टी कैडर पर पड़ता है। पंचायतों, नगरपालिकाओं और निगमों में बढ़त से संगठनात्मक ऊर्जा बढ़ती है और पारंपरिक वोट बैंक खासतौर पर ईसाई और मुस्लिम समुदाय के साथ रिश्ते मजबूत होने की संभावना बनती है। यही कारण है कि इन नतीजों को कांग्रेस नेतृत्व 2026 की नींव के तौर पर देख रहा है।

कांग्रेस में गुटबाजी अब भी एक बड़ी चुनौती: हालांकि, पार्टी के सामने गुटबाजी की पुरानी समस्या अब भी एक बड़ी चुनौती बनी हुई है। राज्य की राजनीति में लंबे समय से संभावनाओं के केंद्र में रहे शशि थरूर जैसे नेताओं की भूमिका और आगे का रुख भी चर्चा में है। थरूर ने यूडीएफ को जीत पर बधाई दी, लेकिन साथ ही तिरुवनंतपुरम कॉरपोरेशन में बीजेपी की ऐतिहासिक जीत को भी स्वीकार करते हुए एनडीए को शुभकामनाएं दीं। यह उनके क्षेत्र में एनडीए की जीत थी।

निकाय चुनावों का होता रहा है विधानसभा पर असर: इन नतीजों ने सत्तारूढ़ वाम मोर्चा (एलडीएफ) की लगातार तीसरी बार सत्ता में वापसी की उम्मीदों को झटका दिया है। केरल की राजनीति में बीते तीन दशकों का चुनावी पैटर्न बताता है कि स्थानीय निकाय चुनाव ही अक्सर विधानसभा चुनाव की दिशा तय कर देते हैं। जिस गठबंधन को पंचायतों, नगरपालिकाओं और निगमों में बढ़त मिलती है, वही अगले विधानसभा चुनाव में भी आगे निकलता रहा है।

PTI

45 साल बाद तिरुवनंतपुरम में जीत के बाद बीजेपी के कार्यकर्ताओं ने जश्न मनाया

अब शहरी इलाकों से BJP को उम्मीदें

इस बार समीकरण उलटते दिख रहे हैं। यूडीएफ ने 157 जिला पंचायत पर जीत हासिल की है वही लेफ्ट फ्रंट 95 जिला पंचायत में आगे रहा। यूडीएफ की बढ़त जहां कांग्रेस के लिए संजीवनी साबित हो सकती है, वही एलडीएफ के लिए यह चेतावनी है। तिरुवनंतपुरम कॉरपोरेशन में बीजेपी के नेतृत्व वाले एनडीए की जीत भी उसके लिए मनोबल बढ़ाने वाली है और यह संकेत देती है कि कई शहरी इलाकों में पार्टी अपनी जमीन मजबूत करने की कोशिश में है।

2026 की तस्वीर अब ज़्यादा साफ

कुल मिलाकर, केरल के लोकल बॉडी चुनावों ने 2026 की तस्वीर को धुंधली नहीं, बल्कि काफी हद तक साफ कर दिया है। यूडीएफ के लिए यह मौका है कि वह संगठनात्मक एकजुटता और गुटबाजी पर काबू पाकर इस बढ़त को विधानसभा चुनाव तक बनाए रखे। वही, एलडीएफ के लिए यह समय आत्ममंथन और रणनीति में बदलाव का संकेत देता है।

ये लोकतंत्र की खूबसूरती: थरूर

शनिवार को कांग्रेस नेता शशि थरूर ने यूडीएफ की जीत की सराहना करते हुए, अपने तिरुवनंतपुरम निर्वाचन क्षेत्र में बीजेपी के ऐतिहासिक प्रदर्शन पर बधाई दी। उन्होंने इसे लोकतंत्र की खूबसूरती बताया। उन्होंने X पर एक पोस्ट में कहा कि जनता के फैसले का सम्मान किया जाना चाहिए।

नतीजे सांप्रदायिकता की भेंट चढ़े: विजयन

केरल के मुख्यमंत्री पिनारयी विजयन ने कहा कि विस्तारपूर्वक जांच की जाएगी और जरूरी सुधार करने के बाद हम आगे बढ़ेंगे। चुनाव परिणाम एक चेतावनी के रूप में सामने आया है कि लोगों को सांप्रदायिक ताकतों द्वारा फैलाई जा रही गलत सूचनाओं से बचाने के लिए अधिक सतर्कता बरतने की आवश्यकता है।

IMA से पासआउट हुई पहली महिला अफसर, सेना में शामिल

सेरेमनी के दौरान सई जाधव के परिजनों ने उनके कंधों पर सितारे लगाए।

■ **NBT रिपोर्ट, देहरादून**

देश की प्रतिष्ठित सैन्य प्रशिक्षण संस्था भारतीय सैन्य अकादमी (आईएमए) देहरादून से पहली बार किसी महिला अधिकारी ने प्रशिक्षण पूरा कर सेना में कमीशन पाया है। महाराष्ट्र के कोल्हापुर की रहने वाली सई जाधव ने भारतीय सैन्य अकादमी से पास आउट होकर आईएमए देहरादून के 93 वर्षों के गौरवशाली इतिहास में एक नया कीर्तिमान बनाया है।

वे आईएमए से पास आउट होने वाली पहली महिला सैन्य अधिकारी बन गई हैं। साल 1932 में स्थापित भारतीय सैन्य अकादमी अब तक करीब 67 हजार ऑफिसर्स कैडेट्स को प्रशिक्षण दे चुकी है। लेकिन इतने लंबे इतिहास में यह पहला अवसर है जब अकादमी से कोई महिला अधिकारी सैन्य प्रशिक्षण पूरा कर सेना का हिस्सा बनी है। अब से हालांकि आगामी जून में होने वाली पासिंग आउट परेड में पहली बार महिला ऑफिसर्स कैडेट्स परेड करते हुए नजर आएंगी और यह अकादमी का पहला महिला अधिकारियों का बैच होगा। लेकिन उससे पहले ही सई जाधव ने अकेले पास आउट होकर यह ऐतिहासिक उपलब्धि अपने नाम कर ली है। अकेली महिला ऑफिसर कैडेट के रूप में पास आउट हुईं सई जाधव औपचारिक पासिंग आउट परेड का हिस्सा नहीं बनीं।

पीपिंग सेरेमनी के दौरान उनके परिजनों ने उनके कंधों पर सितारे लगाए। सई जाधव का सेना से जुड़ाव सिर्फ व्यक्तिगत उपलब्धि नहीं है, बल्कि यह पारिवारिक परंपरा का भी हिस्सा है। अपने परिवार में भारतीय सेना में सेवा देने वाली वे चौथी पीढ़ी की सदस्य हैं।

तिरुवनंतपुरम की जीत पर BJP बोली- ये ऐतिहासिक

■ **NBT रिपोर्ट, नई दिल्ली**

तिरुवनंतपुरम के स्थानीय निकाय चुनाव के नतीजों को लेकर बीजेपी में खुशी की लहर है। बीजेपी के राष्ट्रीय प्रवक्ता सुधांशु त्रिवेदी ने कहा कि शनिवार का दिन बीजेपी और एनडीए के लिए ऐतिहासिक दिन है क्योंकि तिरुवनंतपुरम में पार्टी ने बहुमत हासिल कर लिया है। उन्होंने कहा कि ये परिणाम न केवल केरल की राजनीति के लिए ऐतिहासिक है बल्कि राष्ट्रीय राजनीति के लिए भी महत्वपूर्ण संकेत पेश करते हैं। यह केरल और देश का राजनीति में युगांतकारी बदलाव का संकेत है। कहा कि केरल के उन क्षेत्रों में जहां एलडीएफ व यूडीएफ के बीच लड़ाई हुई, वहां कांग्रेस व कम्यूनिस्ट जवाब दें कि उनका वोट किसने चोरी किया? उन्होंने कहा कि केरल की जनता ने बीजेपी व एनडीए में भरोसा जताया है।

सुधांशु त्रिवेदी

मोदी ने कहा- धन्यवाद तिरुवनंतपुरम

बोले- ये नतीजे केरल की राजनीति में एक अहम मोड़ हैं

■ **NBT रिपोर्ट, नई दिल्ली**

केरल की राजधानी तिरुवनंतपुरम के नगर निकाय चुनाव में NDA ने शानदार जीत हासिल की। CPI (M) नीत लेफ्ट डेमोक्रेटिक फ्रंट (LDF) को शिकस्त देकर निगम पर लगातार 45 वर्षों के वाम शासन का अंत कर दिया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने तिरुवनंतपुरम की जनता का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि नगर निगम चुनाव में बीजेपी-एनडीए को मिला जनादेश केरल की राजनीति में एक ऐतिहासिक क्षण है। एक्स पर लिखा, यह जनादेश दर्शाता है कि राज्य की जनता को विश्वास है कि केरल की विकास संबंधी आकांक्षाएं केवल बीजेपी के नेतृत्व में ही पूरी की जा सकती हैं, उन्होंने इस समर्थन को विकास, सुशासन और प्रगति के प्रति लोगों की मजबूत प्रतिबद्धता का प्रतीक बताया। पीएम ने इन शानदार नतीजों के लिए बीजेपी कार्यकर्ताओं के प्रति आभार व्यक्त किया।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने एक्स पर लिखा, धन्यवाद, तिरुवनंतपुरम! तिरुवनंतपुरम कॉर्पोरेशन में बीजेपी-NDA को मिला मैंडेट केरल की राजनीति में एक अहम मोड़ है। लोगों को यकीन है कि राज्य के विकास की उम्मीदों को सिर्फ़ हमारी पार्टी ही पूरा कर सकती है।

FILE

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी

31 मार्च तक नक्सली खत्म होंगे: शाह

केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह ने शनिवार को छत्तीसगढ़ के जगदलपुर में बस्तर ओलिंपिक के समापन समारोह को संबोधित किया। छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय भी मौजूद थे। शाह ने कहा, हमने तय किया था कि 31 मार्च, 2026 से पहले पूरे देश से लाल आतंक खत्म कर देंगे। बस्तर ओलंपिक-2025 में हम इस कगार पर हैं। ओलंपिक-2026 के वक्त तक पूरे देश से लाल आतंक खत्म हो चुका होगा।

पाक के लिए जासूसी के आरोप में युवक गिरफ्तार

AI Image

■ **आईएएनएस, डिब्रूगढ़**

अरुणाचल प्रदेश के पश्चिमी सियांग जिले के आलो से जासूसी के एक मामले में बड़ा खुलासा हुआ है। खुफिया एजेंसियों से मिली अहम जानकारी के आधार पर जम्मू-कश्मीर के एक युवक को पाकिस्तान के लिए जासूसी करने के आरोप में गिरफ्तार किया गया है। यह गिरफ्तारी पिछले एक सप्ताह में जासूसी के आरोप में हुई तीसरी गिरफ्तारी है।

गिरफ्तार युवक की पहचान जम्मू-कश्मीर के हिलाल अहमद (26) के रूप में हुई है। अधिकारियों के मुताबिक, हिलाल को 11 दिसंबर की रात करीब 11 बजे हिरासत में लिया गया। आरोप है कि वह संवेदनशील और गोपनीय जानकारियां साझा कर रहा था। इससे राष्ट्रीय सुरक्षा को खतरा पहुंच सकता था। पकड़े जाने के बाद 12 दिसंबर की सुबह उसे ईटानगर पुलिस थाने को सौंप दिया गया। अब मामले की जांच ईटानगर पुलिस कर रही है।

खुफिया एजेंसियों के इनपुट पर की गई कार्रवाई

असम में जासूसी के आरोप में वायु सेना का रिटायर्ड जवान गिरफ्तार: **भाषा, तेजपुर:** असम के सोनितपुर जिले में पाकिस्तानी जासूसों से कथित संपर्क के आरोप में भारतीय वायु सेना के एक रिटायर्ड जवान को गिरफ्तार किया गया है। पुलिस ने शनिवार को इसकी पुष्टि की। अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक हरिचरण भूमिज ने बताया कि शुरुआती जांच में पता चला है कि आरोपी ने सोशल मीडिया के जरिए पाकिस्तानी जासूस को संवेदनशील दस्तावेज और अहम जानकारी भेजी थी।

संसद हमले की 24वीं बरसी, शहीदों को दी गई श्रद्धांजलि

PTI

■ **भाषा, नई दिल्ली:** उपराष्ट्रपति सी पी राधाकृष्णन के नेतृत्व में सांसदों ने शनिवार को 2001 में संसद भवन पर आतंकवादियों के हमले के दौरान मारे गए लोगों को पुष्पांजलि अर्पित की। इस दौरान प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, गृह मंत्री अमित शाह, विपक्ष के नेता राहुल गांधी समेत अन्य सांसदों ने शहीदों को याद किया। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने संसद की रक्षा करते हुए अपने प्राणों का बलिदान देने वाले साहसी नायकों को श्रद्धांजलि दी और कहा कि देश उनके और उनके परिवारों का ऋणी रहेगा।

पंकज चौधरी होंगे UP में BJP के नए अध्यक्ष

■ **NBT रिपोर्ट, लखनऊ**

भारतीय जनता पार्टी को जल्द ही नया प्रदेश अध्यक्ष मिल जाएगा। महाराजगंज से सात बार सांसद और केंद्रीय वित्त राज्य मंत्री पंकज चौधरी का प्रदेश अध्यक्ष बनना तय हो गया है। शनिवार को उन्होंने पार्टी के राष्ट्रीय महामंत्री विनोद तांवड़े और प्रदेश के वरिष्ठ नेताओं की मौजूदगी में नामांकन दाखिल किया।

उनके मुकाबले किसी अन्य नेता ने पर्चा नहीं भरा, जिससे उनका निर्विरोध चुना जाना लगभग तय हो गया है। औपचारिक घोषणा रविवार को की जाएगी। नामांकन के समय मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, दोनों उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य और ब्रजेश पाठक सहित पार्टी के तमाम बड़े नेता बीजेपी कार्यालय पहुंचे।

मुख्यमंत्री योगी समेत 10 प्रस्तावकों ने पंकज चौधरी के नाम का प्रस्ताव रखा। तय समय तक कोई दूसरा नाम सामने नहीं आया, जिससे तस्वीर साफ हो गई।

FILE

एक साल से था इंतजार : करीब एक साल से बीजेपी प्रदेश अध्यक्ष के नाम को लेकर इंतजार चल रहा था। संगठनात्मक चुनाव की प्रक्रिया अक्टूबर से शुरू हुई थी। मार्च तक 70 जिलाध्यक्ष चुने गए, जबकि पिछले महीने 14 और जिलाध्यक्षों का चुनाव पूरा हुआ। अब नए प्रदेश अध्यक्ष के चयन के साथ यह प्रक्रिया अंतिम चरण में पहुंच गई है।

रविवार को डॉ. राम मनोहर लोहिया विधि विश्वविद्यालय में आयोजित कार्यक्रम में केंद्रीय चुनाव अधिकारी पीयूष गोयल पंकज चौधरी के नाम की आधिकारिक घोषणा करेंगे।

शिवराज चौहान के आवास पर अचानक सुरक्षा बढ़ाई गई

■ **भाषा, भोपाल :** केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान के भोपाल आवास के आसपास शनिवार को सुरक्षा बढ़ा दी गई। (बीजेपी) के सूत्रों का कहना है कि यह समय-समय पर होने वाली सुरक्षा की समीक्षा के बाद एक 'नियमित' प्रक्रिया है। आवास के मुख्य गेट के बाहर एक अस्थायी टेंट लगाया गया है और व्यस्त लिंक रोड पर कई अवरोधक लगाए गए हैं जबकि इलाके में अतिरिक्त पुलिसकर्मी भी देखे गए। घर के बाहर तैनात एक पुलिस निरीक्षक ने 'पीटीआई-भाषा' को बताया कि चौहान शुक्रवार देर रात आवास पर पहुंचे और शनिवार अपराह्न दिल्ली के लिए रवाना हो गए। मध्यप्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री की सुरक्षा में अचानक बढ़ोतरी से स्थानीय राजनीतिक जगत में अटकलें लगाई जा रही हैं कि चौहान को जल्द ही बीजेपी का राष्ट्रीय अध्यक्ष बनाया जा सकता है।

शिवराज चौहान

कांग्रेस ने कसा तंज़- BJP नाम बदलने में है मास्टर

■ **NBT रिपोर्ट, नई दिल्ली:** कांग्रेस ने मनरेगा कानून का नाम बदलने संबंधी विधेयक को मंत्रिमंडल से मंजूरी दिये जाने पर केंद्र सरकार पर शनिवार को निशाना साधा। कहा कि मोदी सरकार योजनाओं का नाम बदलने में 'मास्टर' है। मुख्य विपक्षी पार्टी ने सवाल किया, महात्मा गांधी नाम में क्या गलत है कि सरकार को यह कदम उठाना पड़ा। कांग्रेस के संचार प्रभारी महासचिव जयराम रमेश ने घटनाक्रम पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि मोदी सरकार योजनाओं और कानूनों का नाम बदलने में 'मास्टर' है। वे 'री-पैकेजिंग' और 'ब्रांडिंग' में माहिर हैं। उन्होंने कहा, वे पंडित नेहरू से नफरत करते हैं, लेकिन लगता है कि वे महात्मा गांधी से भी नफरत करते हैं।

ये समझ से परे: प्रियंका

इस प्रकरण पर कांग्रेस सांसद प्रियंका गांधी वाड्रा ने कहा कि मनरेगा का नाम बदलना समझ से परे है। शनिवार को संसद परिसर में प्रियंका गांधी वाड्रा ने कहा, मुझे समझ नही आ रहा कि मनरेगा का नाम बदलने के पीछे मोदी सरकार की मानसिकता क्या है?

पेंडिंग UAPA केसों की जांच का SC से आदेश

Rajesh.Choudhary
@timesofindia.com

■ **नई दिल्ली:** सुप्रीम कोर्ट ने गुरुवार को सभी हाई कोर्ट्स को निर्देश दिया है कि वे अनलॉफुल एक्टिविटी (प्रिवेंशन) एक्ट यानी UAPA जैसे कानूनों के तहत लंबित मामलों की विस्तृत हालात की जांच करें। अदालत ने कहा कि ऐसे मामलों में, जहां खुद को निर्दोष साबित करने का भार आरोपी पर होता है, हाई कोर्ट्स को पेंडिंग ट्रायल्स का आकलन करना होगा।

सुप्रीम कोर्ट ने हाई कोर्ट के मुख्य न्यायाधीशों से यह भी कहा कि वे यह सुनिश्चित करें कि इन मामलों की सुनवाई के लिए कितनी विशेष अदालतें बनी हैं और सरकारी वकीलों की नियुक्ति की स्थिति क्या है। अदालत ने स्पष्ट निर्देश दिया कि पांच साल से अधिक समय से लंबित मामलों की प्राथमिकता के आधार पर हर दिन सुनवाई कराई जाए। ये निर्देश उस समय दिए गए जब सुप्रीम कोर्ट 2010 के ज्ञानेश्वरी एक्सप्रेस ट्रेन हादसे में कोलकाता हाई कोर्ट द्वारा आरोपियों को दी गई जमानत के खिलाफ सीबीआई की याचिकाओं पर फैसला सुना रहा था। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि हाई कोर्ट ने जमानत देने में गलती की थी लेकिन घटना को लंबा समय बीत जाने और आरोपियों द्वारा जमानत शर्तों का दुरुपयोग न करने को देखते हुए इस चरण पर उनकी जमानत रद्द नहीं की जा सकती। जस्टिस संजय करोल और जस्टिस एन. कोटिश्वर सिंह की पीठ ने कहा कि जब किसी कानून में उल्टा भार आरोपी पर होता है, तो राज्य का दायित्व और बढ़ जाता है कि वह ट्रायल तेजी से पूरा कराए।

5 साल से अधिक पुराने मामलों में रोजाना सुनवाई का निर्देश

स्कूल में बच्चों का बोझ कम करने के लिए संसद में हुई चर्चा

Bhupender.Sharma
@timesofindia.com

■ **नई दिल्ली :** राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में साफ कहा गया है कि स्कूल बैग के वजन को कम करने के लिए ठोस प्रयास करने होंगे। इसके बाद सीबीएसई, एनसीईआरटी, केंद्रीय विद्यालय संगठन, नवोदय विद्यालय संगठन की विशेषज्ञ कमिटी ने स्कूल बैग नीति भी बनाई और हर क्लास के स्कूल बैग के वजन की अधिकतम सीमा भी तय की गई। संसद में इस बारे में एक सवाल भी पूछा गया था, जिसके लिखित जवाब में स्कूल बैग के वजन को कम करने और देश के सभी स्कूलों के वार्षिक कैलेंडर में 10 बैगलेस (Bagless Days) के नियम को अनिवार्य रूप से शामिल करने की बात कही गई है।

शिक्षा मंत्रालय ने सांसद रामवीर सिंह बिधूड़ी के एक सवाल के जवाब में लोकसभा में बताया है कि NEP 2020 के अनुसार प्री-प्राइमरी स्टूडेंट्स को स्कूल बैग नहीं ले जाना चाहिए।

AI Image

- एक सवाल के जवाब में शिक्षा मंत्रालय ने नई शिक्षा नीति में स्कूल बैग से जुड़े नियम बताए
- 10% हो बैग का वजह शरीर के वजन का... नियम का नहीं हो रहा पालन

अधिकतम कितना होना चाहिए बैग का वजन

- प्री प्राइमरी-बैग की जरूरत नहीं
- 1.6- 2.2 Kg पहली और दूसरी क्लास
- 1.7- 2.5 Kg तीसरी से पांचवी क्लास
- 2-3 2-3 छठी- सातवी क्लास
- 2.5- 4 आठवी क्लास
- 2.5- 4.5 9वी- 10वी क्लास
- 3.5- 5 11वी-12वी क्लास किग्रा

'प्राइवेट स्कूलों पर रखनी होगी नज़र'

सांसद ने कहा, स्कूलों में बैगलेस डेज भी शुरू हुए हैं। यह एक अच्छी शुरुआत है और उम्मीद की जानी चाहिए कि इससे स्कूल बैग का वजन कम होगा। सरकार को स्कूल बैग के वजन पर नजर भी रखनी होगी क्योंकि चंद प्राइवेट स्कूल पैसे कमाने के चक्कर में जिस प्रकार प्रकाशकों के साथ हाथ मिला लेते हैं, उसका दंड बच्चों को भारी बैग उठाकर भोगना पड़ता है। दिल्ली पैरेंट्स असोसिएशन के अध्यक्ष वीरेंद्र सिंह का कहना है कि स्कूल बैग का बढ़ता वजन एक गंभीर समस्या बन रहा है।

BMW केस में SC बोला- ऐसे लड़कों को सबक ज़रूरी

FILE

■ **NBT रिपोर्ट, नई दिल्ली**

2024 में BMW से मारी थी टक्कर

सुप्रीम कोर्ट ने 2024 के चर्चित मुंबई BMW हिट-एंड-रन मामले में आरोपी मिहिर शाह की जमानत याचिका पर सुनवाई से इनकार कर दिया। अदालत ने सख्त टिप्पणी करते हुए कहा कि इनको कुछ समय तक अंदर रहना चाहिए, ऐसे लड़कों को सबक सिखाने की जरूरत है। जस्टिस दीपांकर दत्ता की अगुवाई वाली बेंच ने कहा कि आरोपी एक संपन्न परिवार से है और उसके पिता उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे के नेतृत्व वाले शिवसेना धड़े से जुड़े रहे हैं। अदालत ने कहा कि यह अपनी मर्सिडीज शेड में खड़ा करता है, BMW निकालता है, टक्कर मारता है और फरार हो जाता है। अब कुछ समय अंदर ही रहने दें। आरोपी के सीनियर वकील रेबेका जॉन ने बताया कि हाईकोर्ट ने प्रमुख गवाहों के बयान दर्ज होने के बाद जमानत के लिए आवेदन करने की इजाजत दी थी।

कोर्ट का जमानत याचिका पर सुनवाई इनकार

क्या है मामला?

24 साल के मिहिर शाह को 9 जुलाई 2024 को गिरफ्तार किया गया था। उस पर आरोप है कि उसने मुंबई के वर्ली इलाके में अपनी BMW से एक दोपहिया को टक्कर मार दी। इसमें 45 साल के कावेरी नाखवा की मौत हो गई और उनके पति प्रदीप नाखवा घायल हो गए। आरोप के अनुसार दुर्घटना के बाद मिहिर शाह बांद्रा-वर्ली सी लिंक की ओर तेज रफ्तार से भागा, जबकि महिला कार के बोनट पर फंसी हुई थी।

CCI NG 3.7 Product: NBTDelhiBS PubDate: 14-12-2025 Zone: Mahanagar Edition: 1 Page: NBTMAH13 User: cci Time: 12-13-2025 20:56 Color:

सर्दी की हेल्दी सौगात

सर्दी का मौसम डाइट से अपने शरीर को मज़बूत बनाने का मौसम है। सर्दियों में मिलने वाले कुछ फल और सब्जियां तो बेहद फायदेमंद होते हैं, जानते हैं इनके बारे में:

सर्दी के मौसम में सही तरीके से, सही चीज़ें और सही मात्रा में खा लें तो यह सिक्योर्ड इन्वेस्टमेंट शरीर को अगली सर्दी तक फायदा देता है। इस मुद्दे पर आयुर्वेद और मॉडर्न मेडिसिन के एक्सपर्ट्स भी अमूमन एक ही राय रखते हैं। असल में सर्दियों में हमारे पेट की अग्नि यानी पाचनशक्ति बेहतरीन होती है। इन दिनों मिलने वाली कुछ खास चीज़ें हैं जिन्हें खाएं तो एक तरफ जहां खून की मात्रा बढ़ती है, दूसरी ओर इम्यूनिटी भी पावरफुल होती है। इन दिनों कौन-सी सब्जी, कौन-सा फल खाना सबसे बढ़िया है? क्या-क्या ज़रूर खाएं? एक्सपर्ट्स से बातकर जानकारी दे रहे हैं लोकेश के. भारती

आयुर्वेद के मौलिक सिद्धांतों के अनुसार, ठंड में शरीर की गर्मी भीतर की ओर ही सिमट जाती है, जिससे डाइजेस्टिव सिस्टम (पाचन तंत्र) ज्यादा ऐक्टिव हो जाता है और जठराग्नि (भूख लगने, भोजन पचाने और शरीर की जज्ब करने की शक्ति) बहुत तेज़ (प्रबल) हो जाती है। अगर यह अग्नि भोजन खाने के बाद भी संतुष्ट न हो तो यह शरीर की धातुओं जैसे रस, रक्त और मांस को पचाने लगती है, जिससे शरीर में कमज़ोरी और वात दोष की बढ़ोतरी होती है। इसलिए हेमंत ऋतुचर्या में ऐसे आहार के सेवन पर बल दिया गया है जो स्वभाव से स्निग्ध (Oily) और मधुर (Sweet) रस प्रधान हो। हेमंत ऋतु की सब्जियां इन ज़रूरतों को पूरा करने का कुदरती साधन है।

सर्दी की सत्ता

सर्दियों में खाने के कई विकल्प मौजूद होते हैं, लेकिन यहां सबसे खास चीज़ों के बारे में बताया गया है। इनका उपयोग हर दिन या फिर हफ्ते में 4 से 5 दिन करने से शरीर तंदुरुस्त रहता है।

आंवला
पाएं सेहत और स्वाद

पुरानी कहावत है कि जिस आंगन में आंवले का पेड़ हो, वहां बीमारी निवास नही करती यानी हर दिन आंवले के सेवन से शरीर को बहुत फायदा होता है। यह पाचन तंत्र को दुरुस्त करता है और इससे इम्यूनिटी मजबूत होती है। यह विटामिन- C का सबसे बेहतर सोर्स भी है। इससे स्किन की परेशानी दूर होती है। इसे आयुर्वेद में रसायन कहा गया है। यहां रसायन का मतलब है जो बुढ़ापे को दूर करे और जवानी बरकरार रखे। इसके अलावा और भी कई फायदे हैं। हो सके तो इसके मुरब्बे से बचना चाहिए क्योंकि उसमें चीनी होती है।

आंवला रोज 1 ही काफी: अगर हम हर दिन एक आंवला, एक बार में या कई बार में, कच्चा या नमक के साथ या फिर उबालकर खाएं तो हमारे शरीर की हर दिन की विटामिन-C की ज़रूरत पूरी हो जाती है।

- कच्चा या उबला आंवला खट्टा लगे तो उसके साथ नमक (सेंधा बेहतर है) ले सकते हैं। इससे उसका टेस्ट बढ़ जाता है। अगर बीपी की परेशानी है तो नमक न लें।
- हम आंवले का अचार या कैंडी खाते हैं तो भी हमें आंवले में मौजूद कुल विटामिन-C का 60 से 70 फीसदी तक मिल जाता है।

घी
को न करें मिस

आयुर्वेद में घी को सर्वोत्तम स्निग्ध द्रव्य कहा गया है। यह वात (इसके असंतुलन से स्किन सूखी हो जाती है, पैरों की मांसपेशियों में ऐंठन और दर्द रहता है, वज़न कम होता है और नींद कम आती है) को संतुलित करने में सबसे असरदार माना जाता है। सर्दियों में वात दोष स्वाभाविक रूप से बढ़ता है, इसलिए घी शरीर को ज़रूरी स्निग्धता, ताप और पोषण देता है। घी जठराग्नि को संतुलित रखकर भोजन को ठीक तरह से पचाता है। स्किन, जॉइंट, ब्रेन को न्यूट्रीशन देता है। कफ को न बढ़ाते हुए शरीर में ऊर्जा और बल का संचार करता है।

- सर्दियों में रोज़ाना एक-दो चम्मच देसी गाय का घी भोजन में शामिल करना काफी फायदेमंद है। हर दिन 1 से 2 चम्मच शुद्ध घी का सेवन किया जा सकता है।
- मिलेट्स खाते समय या दूसरे कार्ब्स (चावल, रोटी आदि) में अगर थोड़ी मात्रा में घी मिला दें तो इनका ग्लाइसिमिक इंडेक्स बढ़ जाता है। इससे ये जल्दी एनर्जी रिलीज नही करते और शरीर में फौरन ही शुगर लेवल नही बढ़ता।

ड्राई फ्रूट्स
और सीड्स का हो मेल

ड्राई फ्रूट्स: ये कई विटामिन्स, मिनरल्स और फाइबर के बेहतरीन सोर्स हैं। ये ज्यादातर उष्ण प्रकृति के होते हैं, इसलिए सर्दियों में खाने से ज्यादा फायदा होता है। अखरोट (2 से 3), बादाम (5 से 8), काजू (2 से 4), किशमिश (आधी से एक मुट्ठी), खजूर (2 से 3) आदि, इनमें से किसी 2 का चुनाव कर लें और हर दिन बदल-बदल कर खाएं। दरअसल, ये सभी सर्दियों के लिए विशेष रूप से उपयुक्त माने जाते हैं। इनके अलावा मेवा शरीर की मांस धातु को पुष्ट करती है। कमजोरी, जोड़ों के दर्द और सुस्ती को कम करती है। इनमें कुदरती रूप से तेल और प्रोटीन होते हैं जो शरीर को ऊष्मा प्रदान करते हैं। एक और बात का ख्याल रखें कि बादाम को भिगोकर खाना या मेवे को घी के साथ मिलाकर लड्डू के रूप में लेना अच्छा है।

ये सीड्स बढ़ा देंगे इम्यूनिटी

तिल: इंग्लिश में इसे Sesame Seeds कहते हैं। तिल की अहमियत को समझते हुए ही हर साल 14 या 15 जनवरी को मकर संक्रांति या तिल संक्रांति मनाया जाता है। तिल दो तरह के होते हैं, काले और सफेद। ये शरीर में टेस्टोस्टेरोन हार्मोन के स्तर को बनाकर रखने में मदद करते हैं। यह शुगर पेशंट के लिए फायदेमंद है। वह 1 से 2 लड्डू खा सकते हैं।

फ्लैक्स सीड्स: इसे अलसी, तीसी के नाम से भी जाना जाता है। यह आयरन का अच्छा सोर्स है। वेजिटेरियन लोगों के लिए यह ओमेगा-3 फैटी एसिड्स का बेहतरीन सोर्स है। एक दिन में 1 से 2 चम्मच तक खा सकते हैं।

चिया सीड्स: चिया सीड्स को पानी में भिगोकर खाने के बहुत फायदे हैं। इसके फाइबर दूसरे सीड्स जितने सख्त नही होते। आधा चम्मच ले सकते हैं।

पंपकिन सीड्स: पंपकिन जो काशीफल, पेठा, सीताफल के नाम से मिलता है, इसकी सब्जी न केवल टेस्टी होती है बल्कि हेल्थ के लिए भी अच्छी होती है। एक चौथाई या आधा चम्मच ले सकते हैं।

मिलेट्स का भी लें मज़ा

रागी, जुआर, बाजरा: ये सभी अच्छे हैं, लेकिन रागी बेहतरीन है। सर्दियों में जरूर खाना चाहिए। कुछ लोग इसे गेहूं के साथ मिलाकर मिक्स्ड यानी मल्टिग्रेन के रूप में भी लेते हैं। अगर किसी को गेहूं पचाने में परेशानी है तो इसे छोड़ भी सकते हैं। ग्लूटेन प्रोटीन से कुछ लोगों को परेशानी होती है। मिलेट्स शरीर में ट्राइग्लिसराइड्स (खून में मौजूद फैट) और सी-रिऐक्टिव प्रोटीन को कम करते हैं। इस वजह से ये हार्ट से जुड़ी समस्याओं को दूर करने में भी मददगार हैं। फाइबर की मात्रा भरपूर होती है। रागी कैल्शियम का बेहतरीन सोर्स है।

- शरीर को भोजन में से पानी जज्ब करने के लिए ज्यादा वक्त मिल जाता है। मिलेट्स से ग्लूटन या नॉन-ग्लूटन एलर्जी की समस्या भी नही है। रागी में दूसरे मिलेट्स, चावल, गेहूं आदि की तुलना में बहुत ज्यादा कैल्शियम होता है। इसलिए इसे दूध का विकल्प भी कहा जाता है। वहीं बाजरे में आयरन की अधिकता होती है।

सीज़न के गिफ्ट

यह मौसम हेल्दी खानपान के लिए बेहतरीन है। **ताज़े फल, सब्जी, आंवला, ड्राई फ्रूट्स, घी, तिल** आदि खाना बेहद फायदेमंद है।

अगर इस मौसम में सही डाइट रखें तो **पूरे साल इम्यूनिटी सही** रहती है और **हीमोग्लोबिन** भी कम नही होता।

हर दिन 1 से 3 फल (अमरूद, संतरा, सेब) और **1 प्लेट सलाद** (चुकंदर, गाजर, टमाटर, मूली) खाने से पाचन-पोषण स सही रहता है।

हर दिन आधा से 1 आंवला खाने से विटामिन-C की कमी नही होती। धनिया पत्ते के साथ चटनी बनाकर खाना भी फायदेमंद है।

साग (पालक, बथुआ, मेथी, पत्ते वाला प्याज आदि) खाने से खून की कमी नही होती और **'जिगर' यानी लिवर दमदार** बना रहता है।

हर दिन के भोजन में **गहरे रंग वाली सब्जी** (लाल बंद गोभी, काली या लाल गाजर, चुकंदर आदि) खाएं तो ये **लिवर, लंग्स** को बहुत भाते है।

शुद्ध **देसी घी मिल जाए तो 1 से 2 चम्मच** हर दिन सेवन करें। घी के अलावा अगर लहसुन खाते हैं तो इसे भी हर दिन शामिल करें।

शिलाजीत कुदरती है और कैल्शियम का अच्छा सोर्स भी। **इम्यूनिटी, बीपी काबू करने में** भी मददगार। इसे कम मात्रा में (1-2 ग्राम) ही लेना चाहिए।

काली मिर्च, दालचीनी, लौंग व इलायची उष्ण (गर्म) और सुगंधकारी होती है। गर्म तासीर की वजह से ये **खून की नलियों को संकुचित नहीं** होने देती और बीपी को काबू करने मदद करती है।

एक्सपर्ट पैनल

डॉ. एस. के. सरीन
डायरेक्टर, ILBS

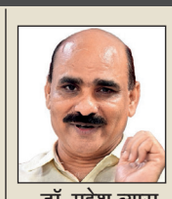

डॉ. महेश व्यास
डीन, ऑल इंडिया इंस्टिट्यूट ऑफ आयुर्वेद

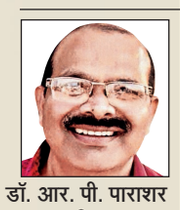

डॉ. आर. पी. पाराशर
वरिष्ठ आयुर्वेदाचार्य

ईशी खोसला
सीनियर डाइटिशन

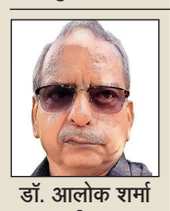

डॉ. आलोक शर्मा
वरिष्ठ आयुर्वेदाचार्य

डॉ. आनन्द पांडेय
मुख्य चिकित्सक, गंगा आयुर्वेदिक चिकित्सालय

मूली
सस्ती भी, अच्छी भी

आजकल मूली का भाव कम ही रहता है। अमूमन 10 से 30 रुपये प्रति किलो के हिसाब से यह मिल जाती है। लेकिन इसमें गुण भरपूर हैं।

- हमारे कई अंगों और सिस्टम को मजबूत बनाती है। मूली में भरपूर मात्रा में वॉटर, फाइबर, विटामिन-C, फोलेट, पोटेशियम और कई तरह के ऐंटिऑक्सिडेंट होते हैं जो **शरीर को अंदर से साफ करने** और पाचन बेहतर बनाने में भूमिका निभाते हैं।
- सबसे बड़ा फायदा हमारे डाइजेस्टिव सिस्टम को होता है। मूली में मौजूद फाइबर कब्ज दूर करता है, गैस कम करता है और पेट को हल्का रखता है।
- यह लिवर और गॉलब्लैडर को भी हेल्प करती है। इसमें मौजूद एंजाइम बाइल बनाने में मददगार है।
- यह शरीर को डिटॉक्स करने में भी मददगार है। किडनी को भी मूली फायदा पहुंचाती है। **यह हल्की डायूरेटिक (यूरिन बाहर निकालने में)** सब्जी है।
- मूली खाने से डकार की परेशानी हो तो अजवाइन, काला नमक आदि भी थोड़ी मात्रा में खा लें।
- यह दिल के लिए भी फायदेमंद है। इसमें मौजूद पोटैशियम बीपी को काबू में रखने में मददगार है। वहीं, **विटामिन-C की अच्छी मात्रा होने से मूली इम्यून सिस्टम को मजबूत** करती है। यह स्किन की जलन और एक्ने को भी कम करती है।
- **मूली को सलाद के रूप में दूसरी सब्जियों के साथ मिलाकर खाएं।** गाजर, चुकंदर और मूली व टमाटर को मिलाकर बनने वाली सलाद शानदार है। वहीं, सलाद में पत्ते वाली प्याज को भी शामिल कर सकते हैं। इससे फाइबर और ऐंटिऑक्सिडेंट ज्यादा मिलते हैं। ये सब्जियां लंबे समय तक एनर्जी देती हैं। ये फाइबर, बीटा-कैरोटीन (विटामिन A) और ऐंटिऑक्सिडेंट्स से भरपूर होती हैं। ये खून की मात्रा बढ़ाने में भी मददगार हैं। **हर दिन 1 प्लेट (300 से 400 ग्राम) सलाद खाएं या फिर जिन्हें सलाद चबाने में परेशानी हो वे इनका 1 गिलास जूस पी सकते हैं।**

पालक
बथुआ, मेथी हैं गुडलक

ताजा पालक तो अच्छा है ही, इस मौसम में बथुआ, मेथी, सोया (कुछ जगहों पर सुआ बोला जाता है), सरसों साग और इनके अलावा भी कई तरह के साग मिलते हैं। ये सभी विटामिन्स, मिनरल्स, फाइबर्स और ऐंटिऑक्सिडेंट के भंडार हैं। पालक समेत सभी साग में फोलेट नामक ऐसा तत्व पाया जाता है जो शरीर में नई कोशिकाएं बनाने के साथ कोशिकाओं में मौजूद डीएनए की मरम्मत का भी काम करता है। फाइबर, आयरन, विटामिन-C शरीर को हर तरह से स्वस्थ बनाए रखता है।

- ये आयरन, कैल्शियम, फोलेट, और विटामिन K, C, A के सोर्स हैं और खून बनाने में भी मददगार हैं। साथ ही साग इम्यूनिटी भी बढ़ाते हैं। मेथी खासतौर पर शुगर को सही रखने में मददगार हैं।
- मेथी और सरसों के साग स्वभाव से उष्ण और कटु रस वाले होते हैं। शरीर को आंतरिक गर्माहट देते हैं और पाचन अग्नि को उत्तेजित करते हैं।

लहसुन
की भी सुन लें

हर सीजन में खाएं लहसुन। सर्दियों में रोजाना 2 से 4 कली और गर्मियों में 1 से 2 कली खाना सही है।

ऐसे ही खाएं लहसुन: लहसुन को बारीक काटकर या क्रश करके 10 मिनट के लिए छोड़ दें, ताकि लहसुन में मौजूद एलिसिन ऐक्टिव हो जाए। एलिसिन बनने में 10 मिनट का वक्त लगता है। इसी एलिसिन की वजह से लहसुन में औषधीय गुण भी आते हैं। काटकर या क्रश करके फौरन ही खा लेंगे या पका लेंगे तो एलिसिन बनने का वक्त नही मिलेगा या थोड़ी मात्रा में बनेगा। वहीं पुराने लहसुन की तुलना में ताज़ा लहसुन को खाना ज्यादा फायदेमंद है। लहसुन एक अच्छा प्रोबायोटिक (यह हमारे गुड फ्लोरा के लिए भोजन है) भी है। लहसुन की छोटी (देसी लहसुन) कली में एलिसिन (फायदेमंद कंपाउंड) की मात्रा कुछ ज्यादा होती है। ये भूख बढ़ाने वाले और भोजन पचाने वाले होते हैं।

फल
ज़रूर खाएं

इस मौसम में कई तरह के फल मिलते हैं। मसलन: **अमरूद, सेब, संतरा, कीनू, अनार** आदि। इनमें से हर दिन कोई एक फल भी खा लें तो कई परेशानियां खत्म हो जाएंगी। अमरूद और सेब तो ऐसे फल हैं जिन्हें सुबह खाली पेट भी खा सकते हैं। इनके अलावा आजकल शरीफा (कस्टर्ड ऐपल) भी काफी मिलता है।

कीनू, माल्टा और संतरे में क्या फर्क?
अक्सर लोग कीनू, माल्टा और संतरे में फर्क नहीं कर पाते। जहां तक खाने के बाद मिलने वाले पोषण की बात है तो तीनों फलों में कोई खास फर्क नही होता। संतरा और माल्टा जहां कुदरती फल है यानी इन्हें कुदरत ने खुद विकसित किया है, वहीं कीनू का विकास अमेरिका के कैलिफोर्निया में 1935 में किया गया था। इसे विलो लीफ मैंडरिन और किंग नामक दो फलों के मिश्रण से बनाया गया है। बाद में यह पंजाब, हरियाणा जैसे राज्यों में उगाया जाने लगा।

क्यों खाना चाहिए: ये तीनों फल विटामिन-C, ऐंटिऑक्सिडेंट और फाइबर के बेहतरीन सोर्स हैं। इम्यूनिटी की मजबूती की बात हो या फिर शरीर में हीमोग्लोबिन के उत्पादन की, ऐसे कई कामों के लिए ये बेहतरीन विकल्प हैं।

संतरा

- यह कीनू और माल्टा की तुलना में ज्यादा मीठा और सुगंधित होता है।
- छिलका माल्टा से पतला लेकिन कीनू जितना मुलायम नहीं। छिलका हल्का खुरदरा होता है। रंग हल्का पीला-नारंगी या हरा। आमतौर पर हल्का मीठा, हल्का खट्टा, फ्रेश सुगंध।
- इसकी सुगंध बहुत पसंद की जाती है।

कीनू

- इसमें रस बहुत ज्यादा होता है। रंग चमकीला नारंगी होता है।
- छिलका पतला और आसानी से छिल जाता है। ज्यादातर मीठा होता है। कुछ में हल्की खटास रह सकती है।
- बाजार में मिलने वाला ऑरेंज जूस अक्सर कीनू से ही बनता है।

माल्टा

- संतरे की तुलना में छिलका मोटा और कुछ सख्त होता है। इसको छीलना थोड़ा मुश्किल होता है। अमूमन रंग गहरा होता है। यह नारंगी-लाल हो सकता है।
- यह खट्टा और मीठा, दोनों स्वाद देता है।
- यह भी रसीला होता है लेकिन कीनू जितना नहीं।

CCI NG 3.7 Product: NBTDelhiBS PubDate: 14-12-2025 Zone: Mahanagar Edition: 2 Page: NBTMA15 User: cci Time: 12-13-2025 23:00 Color:

फटाफट खबरें

बिहार में युवक की पीट पीटकर हत्या

■ **आईएएनएस नवादा :** बिहार में नवादा के हिसुआ थाना क्षेत्र में जमीन विवाद को लेकर बाइक सवार तीन युवकों ने एक ट्रैक्टर चालक पर चाकू से हमला कर उसे गंभीर रूप से जख्मी कर दिया। फिलहाल पुलिस मामले की जांच में जुटी है। पुलिस ने बताया कि मुकदमा दर्ज कर आरोपियों की तलाश जारी है। जल्द ही सभी को गिरफ्तार कर लिया जाएगा।

चलती मगध एक्सप्रेस में धमाका

■ **NBT न्यूज, वाराणसी :** नई दिल्ली से इस्लामपुर जा रही डाउन मगध एक्सप्रेस के जनरल कोच में शनिवार सुबह जोरदार धमाका होने से यात्रियों में अफरा-तफरी मच गई। कोच में लगे फायर इंस्टिंग्यूशर का ढक्कन अचानक फट गया। इससे पूरे कोच में धुआं फैल गया। यात्री घबरा गए और कई लोग खिड़कियों से कूद पड़े। भगदड़ और कूदने के दौरान दर्जनभर यात्री घायल हुए।

AAP की बैठक में BJP पर निशाना

■ **NBT रिपोर्ट, नई दिल्ली:** आम आदमी पार्टी (AAP) की राष्ट्रीय कार्यकारिणी और राष्ट्रीय परिषद की बैठक शनिवार को हुई। पार्टी ने बीजेपी पर हमला बोलते हुए कहा कि आम आदमी पार्टी को खत्म करने की कोशिश की गई, लेकिन पार्टी पहले से ज्यादा मजबूत है। मनीष सिसोदिया ने कहा कि जांच एजेंसियों का दुरुपयोग कर आप नेताओं को जेल भेजा गया।

मारपीट-वसूली में यूट्यूबर अरेस्ट

■ **पीटीआई, चेन्नई:** यूट्यूबर 'सावुक्कु' शंकर को शनिवार सुबह उनके घर से कथित मारपीट और वसूली के मामले में गिरफ्तार किया गया। एक डायरेक्टर की शिकायत पर केस दर्ज हुआ था। पुलिस ने कहा कि जांच अधिकारी के दरवाजा खटखटाने पर शंकर ने खोलने से इनकार कर दिया और कहा कि पुलिस पहले उनके वकीलों से बात करे।

केरल विधानसभा चुनाव के सेमीफाइनल से BJP और कांग्रेस दोनों की उम्मीदें बढ़ीं

तिरुवनंतपुरम के निकाय चुनाव में BJP ने 45 साल का किला ढहाया

Hemwati.Rajaura1@timesofindia.com

■ **नई दिल्ली:** केरल में हालिया लोकल बॉडी चुनावों के नतीजों को 2026 के विधानसभा चुनाव से पहले का सेमीफाइनल माना जा रहा है। इन नतीजों में कांग्रेस के नेतृत्व वाले यूनाइटेड डेमोक्रेटिक फ्रंट (यूडीएफ) की जीत ने न सिर्फ राज्य इकाई में नया आत्मविश्वास भरा है बल्कि 2026 विधानसभा की रणनीति को भी मजबूती दी है। राष्ट्रीय स्तर पर लगातार चुनौतियों से जूझ रही कांग्रेस के लिए केरल से आए सकारात्मक संकेत सियासी राहत देने वाले हैं।

स्थानीय निकाय चुनावों में बेहतर प्रदर्शन का सीधा असर पार्टी कैडर पर पड़ता है। पंचायतों, नगरपालिकाओं और निगमों में बढ़त से संगठनात्मक ऊर्जा बढ़ती है और पारंपरिक वोट बैंक खासतौर पर ईसाई और मुस्लिम समुदाय के साथ रिश्ते मजबूत होने की संभावना बनती है। यही कारण है कि इन नतीजों को कांग्रेस नेतृत्व 2026 की नींव के तौर पर देख रहा है।

कांग्रेस में गुटबाजी अब भी एक बड़ी चुनौती: हालांकि, पार्टी के सामने गुटबाजी की पुरानी समस्या अब भी एक बड़ी चुनौती बनी हुई है। राज्य की राजनीति में लंबे समय से संभावनाओं के केंद्र में रहे शशि थरूर जैसे नेताओं की भूमिका और आगे का रुख भी चर्चा में है। थरूर ने यूडीएफ को जीत पर बधाई दी, लेकिन साथ ही तिरुवनंतपुरम कॉरपोरेशन में बीजेपी की ऐतिहासिक जीत को भी स्वीकार करते हुए एनडीए को शुभकामनाएं दीं। यह उनके क्षेत्र में एनडीए की जीत थी।

निकाय चुनावों का होता रहा है विधानसभा पर असर: इन नतीजों ने सत्तारूढ़ वाम मोर्चा (एलडीएफ) की लगातार तीसरी बार सत्ता में वापसी की उम्मीदों को झटका दिया है। केरल की राजनीति में बीते तीन दशकों का चुनावी पैटर्न बताता है कि स्थानीय निकाय चुनाव ही अक्सर विधानसभा चुनाव की दिशा तय कर देते हैं। जिस गठबंधन को पंचायतों, नगरपालिकाओं और निगमों में बढ़त मिलती है, वही अगले विधानसभा चुनाव में भी आगे निकलता रहा है।

PTI

45 साल बाद तिरुवनंतपुरम में जीत के बाद बीजेपी के कार्यकर्ताओं ने जश्न मनाया

अब शहरी इलाकों से BJP को उम्मीदें

इस बार समीकरण उलटते दिख रहे हैं। यूडीएफ ने 157 जिला पंचायत पर जीत हासिल की है वही लेफ्ट फ्रंट 95 जिला पंचायत में आगे रहा। यूडीएफ की बढ़त जहां कांग्रेस के लिए संजीवनी साबित हो सकती है, वही एलडीएफ के लिए यह चेतावनी है। तिरुवनंतपुरम कॉरपोरेशन में बीजेपी के नेतृत्व वाले एनडीए की जीत भी उसके लिए मनोबल बढ़ाने वाली है और यह संकेत देती है कि कई शहरी इलाकों में पार्टी अपनी जमीन मजबूत करने की कोशिश में है।

2026 की तस्वीर अब ज़्यादा साफ

कुल मिलाकर, केरल के लोकल बॉडी चुनावों ने 2026 की तस्वीर को धुंधली नहीं, बल्कि काफी हद तक साफ कर दिया है। यूडीएफ के लिए यह मौका है कि वह संगठनात्मक एकजुटता और गुटबाजी पर काबू पाकर इस बढ़त को विधानसभा चुनाव तक बनाए रखे। वही, एलडीएफ के लिए यह समय आत्ममंथन और रणनीति में बदलाव का संकेत देता है।

ये लोकतंत्र की खूबसूरती: थरूर

शनिवार को कांग्रेस नेता शशि थरूर ने यूडीएफ की जीत की सराहना करते हुए, अपने तिरुवनंतपुरम निर्वाचन क्षेत्र में बीजेपी के ऐतिहासिक प्रदर्शन पर बधाई दी। उन्होंने इसे लोकतंत्र की खूबसूरती बताया। उन्होंने X पर एक पोस्ट में कहा कि जनता के फैसले का सम्मान किया जाना चाहिए।

नतीजे सांप्रदायिकता की भेंट चढ़े: विजयन

केरल के मुख्यमंत्री पिनारयी विजयन ने कहा कि विस्तारपूर्वक जांच की जाएगी और जरूरी सुधार करने के बाद हम आगे बढ़ेंगे। चुनाव परिणाम एक चेतावनी के रूप में सामने आया है कि लोगों को सांप्रदायिक ताकतों द्वारा फैलाई जा रही गलत सूचनाओं से बचाने के लिए अधिक सतर्कता बरतने की आवश्यकता है।

IMA से पासआउट हुई पहली महिला अफसर, सेना में शामिल

सेरेमनी के दौरान सई जाधव के परिजनों ने उनके कंधों पर सितारे लगाए।

■ **NBT रिपोर्ट, देहरादून**

देश की प्रतिष्ठित सैन्य प्रशिक्षण संस्था भारतीय सैन्य अकादमी (आईएमए) देहरादून से पहली बार किसी महिला अधिकारी ने प्रशिक्षण पूरा कर सेना में कमीशन पाया है। महाराष्ट्र के कोल्हापुर की रहने वाली सई जाधव ने भारतीय सैन्य अकादमी से पास आउट होकर आईएमए देहरादून के 93 वर्षों के गौरवशाली इतिहास में एक नया कीर्तिमान बनाया है।

वे आईएमए से पास आउट होने वाली पहली महिला सैन्य अधिकारी बन गई हैं। साल 1932 में स्थापित भारतीय सैन्य अकादमी अब तक करीब 67 हजार ऑफिसर्स कैडेट्स को प्रशिक्षण दे चुकी है। लेकिन इतने लंबे इतिहास में यह पहला अवसर है जब अकादमी से कोई महिला अधिकारी सैन्य प्रशिक्षण पूरा कर सेना का हिस्सा बनी है। अब से हालांकि आगामी जून में होने वाली पासिंग आउट परेड में पहली बार महिला ऑफिसर्स कैडेट्स परेड करते हुए नजर आएंगी और यह अकादमी का पहला महिला अधिकारियों का बैच होगा। लेकिन उससे पहले ही सई जाधव ने अकेले पास आउट होकर यह ऐतिहासिक उपलब्धि अपने नाम कर ली है। अकेली महिला ऑफिसर कैडेट के रूप में पास आउट हुईं सई जाधव औपचारिक पासिंग आउट परेड का हिस्सा नहीं बनीं।

पीपिंग सेरेमनी के दौरान उनके परिजनों ने उनके कंधों पर सितारे लगाए। सई जाधव का सेना से जुड़ाव सिर्फ व्यक्तिगत उपलब्धि नहीं है, बल्कि यह पारिवारिक परंपरा का भी हिस्सा है। अपने परिवार में भारतीय सेना में सेवा देने वाली वे चौथी पीढ़ी की सदस्य हैं।

तिरुवनंतपुरम की जीत पर BJP बोली- ये ऐतिहासिक

■ **NBT रिपोर्ट, नई दिल्ली**

तिरुवनंतपुरम के स्थानीय निकाय चुनाव के नतीजों को लेकर बीजेपी में खुशी की लहर है। बीजेपी के राष्ट्रीय प्रवक्ता सुधांशु त्रिवेदी ने कहा कि शनिवार का दिन बीजेपी और एनडीए के लिए ऐतिहासिक दिन है क्योंकि तिरुवनंतपुरम में पार्टी ने बहुमत हासिल कर लिया है। उन्होंने कहा कि ये परिणाम न केवल केरल की राजनीति के लिए ऐतिहासिक है बल्कि राष्ट्रीय राजनीति के लिए भी महत्वपूर्ण संकेत पेश करते हैं। यह केरल और देश का राजनीति में युगांतकारी बदलाव का संकेत है। कहा कि केरल के उन क्षेत्रों में जहां एलडीएफ व यूडीएफ के बीच लड़ाई हुई, वहां कांग्रेस व कम्यूनिस्ट जवाब दें कि उनका वोट किसने चोरी किया? उन्होंने कहा कि केरल की जनता ने बीजेपी व एनडीए में भरोसा जताया है।

सुधांशु त्रिवेदी

मोदी ने कहा- धन्यवाद तिरुवनंतपुरम

बोले- ये नतीजे केरल की राजनीति में एक अहम मोड़ हैं

■ **NBT रिपोर्ट, नई दिल्ली**

केरल की राजधानी तिरुवनंतपुरम के नगर निकाय चुनाव में NDA ने शानदार जीत हासिल की। CPI (M) नीत लेफ्ट डेमोक्रेटिक फ्रंट (LDF) को शिकस्त देकर निगम पर लगातार 45 वर्षों के वाम शासन का अंत कर दिया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने तिरुवनंतपुरम की जनता का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि नगर निगम चुनाव में बीजेपी-एनडीए को मिला जनादेश केरल की राजनीति में एक ऐतिहासिक क्षण है। एक्स पर लिखा, यह जनादेश दर्शाता है कि राज्य की जनता को विश्वास है कि केरल की विकास संबंधी आकांक्षाएं केवल बीजेपी के नेतृत्व में ही पूरी की जा सकती हैं, उन्होंने इस समर्थन को विकास, सुशासन और प्रगति के प्रति लोगों की मजबूत प्रतिबद्धता का प्रतीक बताया। पीएम ने इन शानदार नतीजों के लिए बीजेपी कार्यकर्ताओं के प्रति आभार व्यक्त किया।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने एक्स पर लिखा, धन्यवाद, तिरुवनंतपुरम! तिरुवनंतपुरम कॉर्पोरेशन में बीजेपी-NDA को मिला मैंडेट केरल की राजनीति में एक अहम मोड़ है। लोगों को यकीन है कि राज्य के विकास की उम्मीदों को सिर्फ़ हमारी पार्टी ही पूरा कर सकती है।

FILE

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी

31 मार्च तक नक्सली खत्म होंगे: शाह

केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह ने शनिवार को छत्तीसगढ़ के जगदलपुर में बस्तर ओलिंपिक के समापन समारोह को संबोधित किया। छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय भी मौजूद थे। शाह ने कहा, हमने तय किया था कि 31 मार्च, 2026 से पहले पूरे देश से लाल आतंक खत्म कर देंगे। बस्तर ओलंपिक-2025 में हम इस कगार पर हैं। ओलंपिक-2026 के वक्त तक पूरे देश से लाल आतंक खत्म हो चुका होगा।

पाक के लिए जासूसी के आरोप में युवक गिरफ्तार

AI Image

■ **आईएएनएस, डिब्रूगढ़**

अरुणाचल प्रदेश के पश्चिमी सियांग जिले के आलो से जासूसी के एक मामले में बड़ा खुलासा हुआ है। खुफिया एजेंसियों से मिली अहम जानकारी के आधार पर जम्मू-कश्मीर के एक युवक को पाकिस्तान के लिए जासूसी करने के आरोप में गिरफ्तार किया गया है। यह गिरफ्तारी पिछले एक सप्ताह में जासूसी के आरोप में हुई तीसरी गिरफ्तारी है।

गिरफ्तार युवक की पहचान जम्मू-कश्मीर के हिलाल अहमद (26) के रूप में हुई है। अधिकारियों के मुताबिक, हिलाल को 11 दिसंबर की रात करीब 11 बजे हिरासत में लिया गया। आरोप है कि वह संवेदनशील और गोपनीय जानकारियां साझा कर रहा था। इससे राष्ट्रीय सुरक्षा को खतरा पहुंच सकता था। पकड़े जाने के बाद 12 दिसंबर की सुबह उसे ईटानगर पुलिस थाने को सौंप दिया गया। अब मामले की जांच ईटानगर पुलिस कर रही है।

खुफिया एजेंसियों के इनपुट पर की गई कार्रवाई

असम में जासूसी के आरोप में वायु सेना का रिटायर्ड जवान गिरफ्तार: **भाषा, तेजपुर:** असम के सोनितपुर जिले में पाकिस्तानी जासूसों से कथित संपर्क के आरोप में भारतीय वायु सेना के एक रिटायर्ड जवान को गिरफ्तार किया गया है। पुलिस ने शनिवार को इसकी पुष्टि की। अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक हरिचरण भूमिज ने बताया कि शुरुआती जांच में पता चला है कि आरोपी ने सोशल मीडिया के जरिए पाकिस्तानी जासूस को संवेदनशील दस्तावेज और अहम जानकारी भेजी थी।

संसद हमले की 24वीं बरसी, शहीदों को दी गई श्रद्धांजलि

PTI

■ **भाषा, नई दिल्ली:** उपराष्ट्रपति सी पी राधाकृष्णन के नेतृत्व में सांसदों ने शनिवार को 2001 में संसद भवन पर आतंकवादियों के हमले के दौरान मारे गए लोगों को पुष्पांजलि अर्पित की। इस दौरान प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, गृह मंत्री अमित शाह, विपक्ष के नेता राहुल गांधी समेत अन्य सांसदों ने शहीदों को याद किया। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने संसद की रक्षा करते हुए अपने प्राणों का बलिदान देने वाले साहसी नायकों को श्रद्धांजलि दी और कहा कि देश उनके और उनके परिवारों का ऋणी रहेगा।

पंकज चौधरी होंगे UP में BJP के नए अध्यक्ष

■ **NBT रिपोर्ट, लखनऊ**

भारतीय जनता पार्टी को जल्द ही नया प्रदेश अध्यक्ष मिल जाएगा। महाराजगंज से सात बार सांसद और केंद्रीय वित्त राज्य मंत्री पंकज चौधरी का प्रदेश अध्यक्ष बनना तय हो गया है। शनिवार को उन्होंने पार्टी के राष्ट्रीय महामंत्री विनोद तांवड़े और प्रदेश के वरिष्ठ नेताओं की मौजूदगी में नामांकन दाखिल किया।

उनके मुकाबले किसी अन्य नेता ने पर्चा नहीं भरा, जिससे उनका निर्विरोध चुना जाना लगभग तय हो गया है। औपचारिक घोषणा रविवार को की जाएगी। नामांकन के समय मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, दोनों उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य और ब्रजेश पाठक सहित पार्टी के तमाम बड़े नेता बीजेपी कार्यालय पहुंचे।

मुख्यमंत्री योगी समेत 10 प्रस्तावकों ने पंकज चौधरी के नाम का प्रस्ताव रखा। तय समय तक कोई दूसरा नाम सामने नहीं आया, जिससे तस्वीर साफ हो गई।

FILE

एक साल से था इंतजार : करीब एक साल से बीजेपी प्रदेश अध्यक्ष के नाम को लेकर इंतजार चल रहा था। संगठनात्मक चुनाव की प्रक्रिया अक्टूबर से शुरू हुई थी। मार्च तक 70 जिलाध्यक्ष चुने गए, जबकि पिछले महीने 14 और जिलाध्यक्षों का चुनाव पूरा हुआ। अब नए प्रदेश अध्यक्ष के चयन के साथ यह प्रक्रिया अंतिम चरण में पहुंच गई है।

रविवार को डॉ. राम मनोहर लोहिया विधि विश्वविद्यालय में आयोजित कार्यक्रम में केंद्रीय चुनाव अधिकारी पीयूष गोयल पंकज चौधरी के नाम की आधिकारिक घोषणा करेंगे।

शिवराज चौहान के आवास पर अचानक सुरक्षा बढ़ाई गई

■ **भाषा, भोपाल :** केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान के भोपाल आवास के आसपास शनिवार को सुरक्षा बढ़ा दी गई। (बीजेपी) के सूत्रों का कहना है कि यह समय-समय पर होने वाली सुरक्षा की समीक्षा के बाद एक 'नियमित' प्रक्रिया है। आवास के मुख्य गेट के बाहर एक अस्थायी टेंट लगाया गया है और व्यस्त लिंक रोड पर कई अवरोधक लगाए गए हैं जबकि इलाके में अतिरिक्त पुलिसकर्मी भी देखे गए। घर के बाहर तैनात एक पुलिस निरीक्षक ने 'पीटीआई-भाषा' को बताया कि चौहान शुक्रवार देर रात आवास पर पहुंचे और शनिवार अपराह्न दिल्ली के लिए रवाना हो गए। मध्यप्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री की सुरक्षा में अचानक बढ़ोतरी से स्थानीय राजनीतिक जगत में अटकलें लगाई जा रही हैं कि चौहान को जल्द ही बीजेपी का राष्ट्रीय अध्यक्ष बनाया जा सकता है।

शिवराज चौहान

कांग्रेस ने कसा तंज़- BJP नाम बदलने में है मास्टर

■ **NBT रिपोर्ट, नई दिल्ली:** कांग्रेस ने मनरेगा कानून का नाम बदलने संबंधी विधेयक को मंत्रिमंडल से मंजूरी दिये जाने पर केंद्र सरकार पर शनिवार को निशाना साधा। कहा कि मोदी सरकार योजनाओं का नाम बदलने में 'मास्टर' है। मुख्य विपक्षी पार्टी ने सवाल किया, महात्मा गांधी नाम में क्या गलत है कि सरकार को यह कदम उठाना पड़ा। कांग्रेस के संचार प्रभारी महासचिव जयराम रमेश ने घटनाक्रम पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि मोदी सरकार योजनाओं और कानूनों का नाम बदलने में 'मास्टर' है। वे 'री-पैकेजिंग' और 'ब्रांडिंग' में माहिर हैं। उन्होंने कहा, वे पंडित नेहरू से नफरत करते हैं, लेकिन लगता है कि वे महात्मा गांधी से भी नफरत करते हैं।

ये समझ से परे: प्रियंका

इस प्रकरण पर कांग्रेस सांसद प्रियंका गांधी वाड्रा ने कहा कि मनरेगा का नाम बदलना समझ से परे है। शनिवार को संसद परिसर में प्रियंका गांधी वाड्रा ने कहा, मुझे समझ नही आ रहा कि मनरेगा का नाम बदलने के पीछे मोदी सरकार की मानसिकता क्या है?

पेंडिंग UAPA केसों की जांच का SC से आदेश

Rajesh.Choudhary
@timesofindia.com

■ **नई दिल्ली:** सुप्रीम कोर्ट ने गुरुवार को सभी हाई कोर्ट्स को निर्देश दिया है कि वे अनलॉफुल एक्टिविटी (प्रिवेंशन) एक्ट यानी UAPA जैसे कानूनों के तहत लंबित मामलों की विस्तृत हालात की जांच करें। अदालत ने कहा कि ऐसे मामलों में, जहां खुद को निर्दोष साबित करने का भार आरोपी पर होता है, हाई कोर्ट्स को पेंडिंग ट्रायल्स का आकलन करना होगा।

सुप्रीम कोर्ट ने हाई कोर्ट के मुख्य न्यायाधीशों से यह भी कहा कि वे यह सुनिश्चित करें कि इन मामलों की सुनवाई के लिए कितनी विशेष अदालतें बनी हैं और सरकारी वकीलों की नियुक्ति की स्थिति क्या है। अदालत ने स्पष्ट निर्देश दिया कि पांच साल से अधिक समय से लंबित मामलों की प्राथमिकता के आधार पर हर दिन सुनवाई कराई जाए। ये निर्देश उस समय दिए गए जब सुप्रीम कोर्ट 2010 के ज्ञानेश्वरी एक्सप्रेस ट्रेन हादसे में कोलकाता हाई कोर्ट द्वारा आरोपियों को दी गई जमानत के खिलाफ सीबीआई की याचिकाओं पर फैसला सुना रहा था। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि हाई कोर्ट ने जमानत देने में गलती की थी लेकिन घटना को लंबा समय बीत जाने और आरोपियों द्वारा जमानत शर्तों का दुरुपयोग न करने को देखते हुए इस चरण पर उनकी जमानत रद्द नहीं की जा सकती। जस्टिस संजय करोल और जस्टिस एन. कोटिश्वर सिंह की पीठ ने कहा कि जब किसी कानून में उल्टा भार आरोपी पर होता है, तो राज्य का दायित्व और बढ़ जाता है कि वह ट्रायल तेजी से पूरा कराए।

5 साल से अधिक पुराने मामलों में रोजाना सुनवाई का निर्देश

स्कूल में बच्चों का बोझ कम करने के लिए संसद में हुई चर्चा

Bhupender.Sharma
@timesofindia.com

■ **नई दिल्ली :** राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में साफ कहा गया है कि स्कूल बैग के वजन को कम करने के लिए ठोस प्रयास करने होंगे। इसके बाद सीबीएसई, एनसीईआरटी, केंद्रीय विद्यालय संगठन, नवोदय विद्यालय संगठन की विशेषज्ञ कमिटी ने स्कूल बैग नीति भी बनाई और हर क्लास के स्कूल बैग के वजन की अधिकतम सीमा भी तय की गई। संसद में इस बारे में एक सवाल भी पूछा गया था, जिसके लिखित जवाब में स्कूल बैग के वजन को कम करने और देश के सभी स्कूलों के वार्षिक कैलेंडर में 10 बैगलेस (Bagless Days) के नियम को अनिवार्य रूप से शामिल करने की बात कही गई है।

शिक्षा मंत्रालय ने सांसद रामवीर सिंह बिधूड़ी के एक सवाल के जवाब में लोकसभा में बताया है कि NEP 2020 के अनुसार प्री-प्राइमरी स्टूडेंट्स को स्कूल बैग नहीं ले जाना चाहिए।

AI Image

- एक सवाल के जवाब में शिक्षा मंत्रालय ने नई शिक्षा नीति में स्कूल बैग से जुड़े नियम बताए
- 10% हो बैग का वजह शरीर के वजन का... नियम का नहीं हो रहा पालन

अधिकतम कितना होना चाहिए बैग का वजन

- प्री प्राइमरी-बैग की जरूरत नहीं
- 1.6- 2.2 Kg पहली और दूसरी क्लास
- 1.7- 2.5 Kg तीसरी से पांचवी क्लास
- 2-3 2-3 छठी- सातवी क्लास
- 2.5- 4 आठवी क्लास
- 2.5- 4.5 9वी- 10वी क्लास
- 3.5- 5 11वी-12वी क्लास किग्रा

'प्राइवेट स्कूलों पर रखनी होगी नज़र'

सांसद ने कहा, स्कूलों में बैगलेस डेज भी शुरू हुए हैं। यह एक अच्छी शुरुआत है और उम्मीद की जानी चाहिए कि इससे स्कूल बैग का वजन कम होगा। सरकार को स्कूल बैग के वजन पर नजर भी रखनी होगी क्योंकि चंद प्राइवेट स्कूल पैसे कमाने के चक्कर में जिस प्रकार प्रकाशकों के साथ हाथ मिला लेते हैं, उसका दंड बच्चों को भारी बैग उठाकर भोगना पड़ता है। दिल्ली पैरेंट्स असोसिएशन के अध्यक्ष वीरेंद्र सिंह का कहना है कि स्कूल बैग का बढ़ता वजन एक गंभीर समस्या बन रहा है।

BMW केस में SC बोला- ऐसे लड़कों को सबक ज़रूरी

FILE

■ **NBT रिपोर्ट, नई दिल्ली**

2024 में BMW से मारी थी टक्कर

सुप्रीम कोर्ट ने 2024 के चर्चित मुंबई BMW हिट-एंड-रन मामले में आरोपी मिहिर शाह की जमानत याचिका पर सुनवाई से इनकार कर दिया। अदालत ने सख्त टिप्पणी करते हुए कहा कि इनको कुछ समय तक अंदर रहना चाहिए, ऐसे लड़कों को सबक सिखाने की जरूरत है। जस्टिस दीपांकर दत्ता की अगुवाई वाली बेंच ने कहा कि आरोपी एक संपन्न परिवार से है और उसके पिता उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे के नेतृत्व वाले शिवसेना धड़े से जुड़े रहे हैं। अदालत ने कहा कि यह अपनी मर्सिडीज शेड में खड़ा करता है, BMW निकालता है, टक्कर मारता है और फरार हो जाता है। अब कुछ समय अंदर ही रहने दें। आरोपी के सीनियर वकील रेबेका जॉन ने बताया कि हाईकोर्ट ने प्रमुख गवाहों के बयान दर्ज होने के बाद जमानत के लिए आवेदन करने की इजाजत दी थी।

कोर्ट का जमानत याचिका पर सुनवाई इनकार

क्या है मामला?

24 साल के मिहिर शाह को 9 जुलाई 2024 को गिरफ्तार किया गया था। उस पर आरोप है कि उसने मुंबई के वर्ली इलाके में अपनी BMW से एक दोपहिया को टक्कर मार दी। इसमें 45 साल के कावेरी नाखवा की मौत हो गई और उनके पति प्रदीप नाखवा घायल हो गए। आरोप के अनुसार दुर्घटना के बाद मिहिर शाह बांद्रा-वर्ली सी लिंक की ओर तेज रफ्तार से भागा, जबकि महिला कार के बोनट पर फंसी हुई थी।